श्रीपरमात्मने नमः ।

जैनपदसागर प्रथमभाग

प्रथम पदनद ।

जिसको

पन्नालाल बाकलीवालने संपादन किया

और

भारतीय जैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्था कलकत्ताने

अपने

जैनसिद्धांतप्रकाशक (पवित्र) प्रेसमें छपाकर

प्रकाशित किया ।

प्रथमवार] वीरसंवत् २४५६ [न्यो० एक रुपया

विज्ञापना ।

विदित हो कि—जैन साहित्यके संगीत विभागमें एक भाग जैन पदोंका (भजनों) का बडा भारी है, जिसमें सैकड़ों प्राचीन अर्वाचीन कवियोंके हजारों पद भजन होंगे उनमें से एक बुकसे- लरोंने कविवर बनारसी, द्यानतराय भूधरदास, भागचंद, दौलत- राम बुधजनके पदोंका संग्रह भिन्न २ छपाया है परंतु उनमें प्रभाती हजूरी, (हजूरी पदोंमें भी जिनवाणीस्तुति, गुरुस्तुति, बधाई) होरी आदि उपदेशी अध्यात्मोपदेशी अध्यात्मीक विषयके सैकड़ों पद भजन हैं, परंतु भिन्न भिन्न विषयोंके भजन एकही जगह अनेक क- वियोंके पदोंका संग्रह किसीने भी नहिं छपाये । गायक अनेक जैनी भाई भिन्न २ रुचिवाले होते हैं कोई भाई हजूरी पदोंका गाना पसंद करते हैं कोई भाई उपदेशी, वा वैराग्यमय अध्यात्मीक पदोंका गाना पसंद करते हैं, इस कारण हमने बडे परिश्रमसे समस्त कवियोंके पदोंको गायकर अर्थको समझ कर भिन्न २ विषयोंके छांटकर भिन्न २ संग्रह तैयार करकें लिखने और छपाने का प्रबंध किया है । दो वर्ष पहिले हमने उक्त ६ कवियोंके उपर्युक्त नौ विषयोंके पदोंका संग्रह किया था परंतु उनके छपानेका बहु द्रव्य साध्य कार्य नहिं कर पाये । अब इन समस्त पदोंके छपानेका भार कलकत्तेकी भारतीय जैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्थाने स्वीकार कर लिया है इसकारण अब इन सब पदोंको बहुत शुद्ध कठिन शब्दों पर टिप्पणी सहित कपड़ेके बेलनसे पवित्रताके साथ छापना प्रारंभ किया है उनमेंसे जैनपदसागरके प्रथमभागका प्रथम

भाग प्रभाती हजूरीपदोंका संग्रह छापकर आप लोगोंके सामने उपस्थित किया है। इसके बाद दूसरा भाग सर्वप्रकारके उपदेशों और अध्यात्मोपदेशी पदोंका संग्रह और तीसरा भाग आध्यात्मिक पदोंका संग्रह छप रहे हैं शीघ्र ही छपकर तैयार होनेपर आपके दृष्टिगोचर होंगे। परंतु यह अत्यधिक परिश्रम तब ही सफल समझा जायगा कि-जब आप लोग इसको अपनाकर गाय बजाय-कर अपना परम कल्याण (इन तीनों बडे संग्रहोंसे अर्थात् नव प्रकारके संग्रहोंसे) साधन करेंगे।

वीरनिर्वाणसंवत २४५६ ।
माघशुक्ला दशमी

जैनसमाजका हितैषी दास—
पन्नालाल बाकलीवाल
सुजानगढ निवासी

मुद्रक और प्रकाशक—श्रीलाल जैन काव्यतीर्थ
जैनसिद्धान्तप्रकाशक (पवित्र) प्रेस
नं० ६ विश्वकोष लेन, बाघबाजार—कलकत्ता

पदोंका अकारादिक्रमसे सूचीपत्र।

अ—आ

त

थ

भ

म

स

ह—ज्ञ

श्रीवीतरागाय नमः ।

जैन-पद-सागर प्रथमभाग ।

(१)

(हजूरी प्रभाती पद-संग्रह)

देखोजी आदीश्वर स्वामी, कैसा ध्यान लगाया है । कर ऊपर कर सुभग विराजे, आसन थिर ठहराया है । देखोजी० ॥ टेक ॥ जगतविभूति भूति[1]सम तजकर, निजानंद-पद ध्याया है । सुरभित श्वासा आशा[2]वासा, नासादृष्टि सुहाया है । देखोजी० ॥ १ ॥ कंचन वरन चलै मन रंच न, सुर[3]गिरि ज्यों थिर थाया है । जासपास अहि मोर मृगी हरि[4], जातिविरोध नशाया है । देखोजी० ॥ २ ॥ सुध उपयोग हुतासनमें जिन,

१ । भस्मकी समान । २ दिशारूपी वस्त्र—दिगंबरपणा । ३ सुमेरु पर्वत । ४ सिंह ।

वसुविधि समिध¹ जलाया है। श्यामलि अलि-कावलि सिर सोहै, मानों धूआं उडाया है। देखोजी० ॥ ३ ॥ जीवन मरन अलाभ लाभ जिन, तृणमनिको समभाया है। सुरनरनाग नमहिं पद जाके, 'दौल' तास जस गाया है। देखोजी० ॥ ४ ॥

(२)

देखोजी इक परम गुरूने कैसा ध्यान लगाया है। देखोजी० ॥ टेक ॥ घरके भोग रोग सम लागे, बनका बास सुहाया है। काम क्रोध माया मद त्यागी, नगन जु भेष बनाया है। देखोजी० ॥ १ ॥ बरसाकाल बसत हैं तरुतर, समताभाव दिखाया है। लिपटें डांस जहर विषयाले, खेद न मनमें ल्याया है। देखोजी० ॥ २ ॥ शीतकाल तटनीतट ऊपर, परत तुषार न छाया है। कंपै देह चलै चौबारी, जैनजती कहलाया है। देखोजी० ॥ ३ ॥ ग्रीषमकाल बसैं परबतपर, सूरज

१। होम करनेकी लकड़ियां।

ऊपर आया है। चलत पसेव जरत अति काया, कर्मकलंक बहाया है। देखोजी० ॥ ४ ॥ ऐसे गुरुके चरन पूजकर, मनवांछित फल पाया है। 'दौलत' ऐसे जैनजतीको, बारबार सिर नाया है। देखोजी० ॥ ५ ॥

(३)

जिनवर-आनन-भान-निहारत, भ्रमतम-घान नशाया है। जिनवर० ॥ टेक ॥ वचन-किरन प्रसरनतैं भविजन, मन-सरोज सरसाया है। भवदुखकारन सुखविस्तारन, कुपथ सुपथ दरशाया है। जिनवर० ॥ १ ॥ विनशायी कंज[1] जल सरसाई, निशिचर समर[2] दुराया है। तस्कर[3] प्रबल कषाय पलाये, जिन धन-बोध चुराया है। जिनवर० ॥ २ ॥ लखियत उडु[4] न कुभाव कहूं अब, मोह उलूक लजाया है। हंसकोकको[5] शोक नस्यो निज,-परनति चकवी पाया है। जिनवर०

१। काई दूसरे पक्षमें अज्ञानरूपी काई। २ कामदेव। ३ चोर। ४ तारे। ५ आत्मारूपी चकवेका।

॥ ३ ॥ कर्मबंधकज-कोश बंधे चिर, भवि अलि मुंचन[2] पाया है। 'दौल' उजास निजातम-अनुभव, उर-जग-अंतर छाया है। जिनवर० ॥ ४ ॥

(४)

पारस जिन-चरन निरख, हरख यों लहायो, चितवत चंदा चकोर ज्यों प्रमोद पायो। पारस० ॥ टेक। ज्यों सुन घनघोर शोर, मोर हर्षको न ओर, रंकनिधि समाजराज पाय मुदित थायो। पारस० ॥ १ ॥ ज्यों जन चिरछुदित[3] होय, भोजन लखि मुदित होय, भेषज[4] गंद-हरन[5] पाय, सरुज[6] सुहरषायो। पारस० ॥ २ ॥ वासर भयो धन्य आज, दुरित दूर परे भाज, शांतदशा देख महा, मोहतम पलायो। पारस० ॥ ३ ॥ जाके गुन जानन जिम, भानन भवकानन इम, जान दौल सरन आय शिवसुख ललचायो। पारस० ॥ ४ ॥

---

१ कर्मबंधन रूपी कमलोंके कोषमें बँधे हुए थे उनसे। २ छुटकारा। ३ बहुतकालका भूखा। ४ दवाई। ५ रोगहरनेवाली। ६ रोगी।

(५)

वंदौं अद्भुत चंद्र वीर[1]जिन, भावचकोर चित-हारी। वंदौं० ॥ टेक ॥ सिद्धारथ नृपकुल नभ-मंडन, खंडन भ्रमतम भारी। परमानंद-जलधि-विस्तारन, पापताप छयकारी। वंदौं० ॥ १ ॥ उदित निरंतर त्रिभुवन-अंतर, कीरति किरन पसारी। दोष[2]-मलंक कलंक[3] अटंकित, मोहराहु निरवारी। वंदौं० ॥ २ ॥ कर्मावर्न[4]पयोद-अरोधित, बोधित शिवमगचारी। गनधरादिमुनि उडुगन[5] सेवत, नितपूनमतिथि धारी। वंदौं० ॥ ३ ॥ अखिल-अलोकाकाश उलंघन, जासज्ञान उजियारी। दौलत मन[6]सा कुमुदिनिमोदन, जयो चरम[7] जगतारी। वंदौं० ॥ ४ ॥

(६)

निरखत जिनचंद्रवदन, स्वपरसुरुचि आई।

---

१ महावीर भगवान। २ दोषाराशि। ३ पापरूपी कलंक। ४ कर्मरूपी बादलोंसे नहिं ढकनेवाला। ५ तारागण। ६ मनरूपी कमोदिनीको हर्षित करनेवाला। ७ अंतिम तीर्थंकर।

निरखत० ॥ टेक ॥ प्रकटी निजआनकी[1], पिछान ज्ञान-भानकी, कला उदोत होत काम-जामिनी[2] पलाई। निरखत० ॥ १ ॥ सास्वत आनंद-स्वाद, पायो विनश्यो विषाद, आनमें अनिष्ट इष्ट, कल्पना नसाई। निरखत० ॥ २ ॥ साधी निजसाधकी[3], समाधि मोहव्याधिकी, उपाधि को विराधिकै, अराधना सुहाई। निरखत० ॥ ३ ॥ धन दिन छिन आज सुगुनि, चिन्ते जिनराज अब, सुधरे सब काज दौल अचल ऋद्धि पाई। निरखत० ॥ ४ ॥

(७)

जगदानंदन जिन अभिनंदन, पद-अरविंद नमूं मैं तेरे, जगदा० ॥ टेक ॥ अरुन वरन अघ-ताप हरनवर, वितरन कुशल सुसरन बडेरे। पद्मासदन[4] मदनमदभंजन, रंजन मुनि-जन-मन-अलिकेरे[5]। जगदा० ॥ १ ॥ ये गुन सुन मैं सरनै

१ निजपरकी। २ कामरूपी रात्रि। ३ अपने मनकी इच्छानुसार। ४ लक्ष्मी—शोभाके घर। ५ भ्रमरके।

आयो, मोहि मोह दुख देत घनेरे। तौं मद-भानन स्वपर-पिछानन, तुम विन आन न कारन हेरे॥ जगदा० ॥ २॥ तुमपदसरन गही जिनने ते, जामनजरामरन निरवेरे। तुमतैं विमुख भये शठ तिनको, चहुंगति विपति महाविधि पेरे। जगदा० ॥ ३॥ तुमरे अमित सुगुन ज्ञानादिक, सतत मुदित गनराज उगेरे। लहत न मित मैं पतित कहों किम, किन शशकन गिरिराज उखेरे। जगदा० ॥४॥ तुम विन राग दोष दर्पन ज्यों, निज निज भाव फलैं तिनकेरे। तुम हो सहज जगत उपकारी, शिवपथसारथवाह भलेरे। जगदा० ॥ ५॥ तुम दयाल वेहाल बहुत हम, कालकराल व्यालचिर घेरे। भाल नाय गुण माल जपों तुम, हो दयाल दुखटाल सँवेरे। जगदा० ॥ ६ ॥ तुम बहुपतित सुपावन कीने, क्यों न हरो भवसंकट मेरे। भ्रम-उपाधिहर

१ उस मोहकर्मका मद नाश करनेवाले। २ गाये हैं। ३ खरगोसोंने। ४ शीघ्र ही।

सम समाधिकर, दौल भये तुमरे अब चेरे। ज़वदा० ॥ ७ ॥

(८)

पद्मासद्म[1] पद्मपद[2] पद्मा-मुक्तिसद्म[3]-दरसावन है। कलिमलगंजन मनअलिरंजन, मुनिजनसरन सुपावन है। पद्मासद्म० ॥ टेक ॥ जाकी जन्मपुरी कुशंबिका सुरनरनागरमावन है। जास जन्मदिन पूरब षट-नवमास रतन बरसावन है। पद्मासद्म० ॥ १ ॥ जा तप-थान पपोसा[4] गिरि सो आतम-ध्यान-थिर-थावन हैं। केवल जोत उदोत भई सो, मिथ्या-तिमिर-नसावन है। पद्मासद्म० ॥ २ ॥ जाको शासन[5]पंचानन सो कुमति-मतंग[6]नशावन है। रागविना सेवकजनतारक, पै तसु तुष[7]रुष भाव न है। पद्मासद्म० ॥ ३ ॥ जाकी महिमाके वरननसों, सुरगुरु[8]बुद्धिथकावन है। दौल

१ लक्ष्मीके घर । २ पद्मप्रभके चरनकमल। ३ मुक्तिरूपी लक्ष्मीका स्थान। ४ पपोसा नामका पर्वत। ५ उपदेश रूपी सिंह। ६ कुमतिरूपी हस्तीको नाश करनेवाला है। ७ रागद्वेष। ८ वृहस्पतिकी बुद्धि भी थक जाती है।

अल्पमतिको कहबो जिम, शिशु[1]गिरिंद-धकावन है। पद्मासद्म० ॥ ४ ॥

(९)

श्रीजिनवर दरश आज, करत सौख्य पाया अष्टप्रातहार्यसहित, पाय शांति काया। श्रीजिन० ॥ टेक ॥ वृक्ष है अशोक जहाँ, भ्रमरगान गाया। सुंदर मंदारपहुप-वृष्टि होत आया। श्रीजिन० ॥ १ ॥ ज्ञानामृत भरी बानि, खिरै भ्रम नशाया। विमल चमर ढोरत हरि, हृदय भक्ति लाया। श्रीजिन० ॥ २ ॥ सिंहासन प्रभाचक्र बालजग सुहाया ॥ देवदुंदुभी विशाल, जहां सुर बजाया। श्रीजिन० ॥ ३ ॥ मुक्ताफल माल सहित, छत्र तीन छाया। भागचंद अदभुत छबि कही नहीं जाया ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥

(१०)

प्रभु तुम मूरत दृगसों निरखे हरखै मोरो जीयरा प्रभुतुम० ॥ टेक ॥ बुझत कषायानल पुनि उपजै

---

१ बालकद्वारा पर्वतको ढकेलना।

ज्ञानसुधारस सीयरा ॥ प्रभुतुम० ॥ १ ॥ वीत-रागता प्रगट होत है, शिवथल दीसत नीयरा[1] ॥ प्रभुतुम० ॥ २ ॥ भागचंद तुम चरनकमलमें, बसत संतजनहीयरा ॥ प्रभुतुम० ॥ ३ ॥

(११)

अजित जिन विनती हमारी मानजी, तुम लागे मेरे प्रानजी ॥ टेक ॥ तुम त्रिभुवनमें कलपतरो-वर, आश भरो भगवानजी ॥ अजित० ॥ १ ॥ बादि अनादि गयो भव भ्रमतैं, भयो वहुत हयरान जी । भागसँजोग मिले अव दीजे, मनबांछित वरदान जी । अजित० ॥ २ ॥ ना हम मांगैं हाथी घोड़ा, ना कछु संपति आनजी । भूधरके उर बसो जगत गुरु, जबलों पद निर-बानजी । अजित० ॥ ३ ॥

(१२)

पारस-पद-नख प्रकाश, अरुन[2] वरन ऐसो । पारस० ॥ टेक ॥ मानो तप, कुंजरके[3], सीसको

१ नेड़ा—निकट । २ लाल । ३ हाथीके ।

सिंदूर पूर, रागरोषकाननकों-दावानल जैसो[1]। पारस०। बोधमई प्रातकाल, ताको रवि उदय लाल, मोक्षवधू-कुच-प्रलेप, कुंकुमाभ तैसो। पारस०। कुशल-वृक्ष-दल-उलास, इहविधि बहु गुण-निवास, भूधरकी भरहु आस, दीनदासके सो०। पारस०॥ ३॥

(१३) रामकली।

ऋषभदेव ऋषिदेव सहाई अजित अजित रिपु संभव संभव, अभिनंदन नंदन लवलाई। रिषभ०॥ सुमति सुमति भवि पदम-पदम-अलि, देत सुपास सुपास भलाई। चितचकोरचंदा चंदप्रभ, पुहपदंत पुहपनि भजि भाई। ऋषभ० ॥२॥ शीतल शीतल जड़ता नासै, श्रेयान् श्रेयान् जोति जगाई। वासुपूज्य वासव पद पूजे, विमल विमल कीरति जग छाई। ऋषभ० ॥३॥ गुन अनंत अघ अंत अनँत है, धरम धरम बरसा बरसाई। शांति शांत कुंथ्वादि जंतुपर, कुंथुनाथ

१ रागद्वेषरूपी बनकेलिये।

करुणाकरवाई । ऋषभ० ॥४॥ अरह अरहविधि मल्लि मल्लिवर, मुनिसुव्रत मुनिसुव्रतदाई । नमि नमि सुरनरनेमि धरमरथ, नेमिप्रभू काटैं भवकाई ॥ ऋषभ० ॥ ५ ॥ पास पास छेदी चउं गतिकी, महावीर महावीरवडाई । द्यानत परमानँद-पद कारन, चौवीसी नामारथ गाई । ऋषभ० ॥ ६ ॥

(१४)

देखे जिनराज आज, राजरिद्धि पाई । देखे० ॥ टेक ॥ पहुपवृष्टि महाइष्ट देव दुंदुभी सुमिष्ट, शोक करै भ्रष्ट सो अशोकतरु बडाई ॥ देखे० ॥ १ ॥ सिंहासन झलमलात, तीन छत्र चितसुहात, चमर फरहरात मनों, भगति अति बढाई ॥ देखे० ॥ २ ॥ द्यानत भामंडलमें, दीसै पर जाय सात, बानी तिहुंकाल झरै, सुरशिवसुखदाई ॥ देखे० ॥ ३ ॥

(१५) राग बसंत ।

भोर भयो भज श्रीजिनराज । सफल होंहिं

तेरे सब काज ॥ भोर० ॥ टेक ॥ धनसंपति मन बांछित भोग, सब विध जान बने संयोग ॥ भोर० ॥ १ ॥ कल्पवृक्ष ताके घर रहै, कामधेनु नित सेवा बहै। पारस चिंतामनि समुदाय, हितसों आय मिलैं सुखदाय ॥ भोर० ॥ २ ॥ दुर्लभतैं सुलभ्य ह्वैजाय, रोगसोग दुखदूरपलाय सेवा देव करैं मनलाय, विघन उलटि मंगल ठहराय ॥ भोर० ॥ ३ ॥ डायनि भूत पिशाच न छलै, राज चोरको जोर न चलै। जस आदर सौभाग्य प्रकाश, द्यानत सुरग सुकतिपदबास ॥ भोर० ॥ ४ ॥

(१६) राग भैरों।

भोर भयो सब भविजन मिलिकर, जिनवर पूजन आवो (जावो)। अशुभ मिटावो पुण्य बढावो, नैननि नींद गमावो। भोर० ॥ टेक ॥ तनको धोय धारि उजरे पट, शुद्ध जलादिक लावो। बीतराग छबि हरखि-निरखिकर, आगमोक्त गुनगावो। भोर० ॥१॥ शास्तर सुनों भनो

जिनवानी, तप संजम उपजावो। धरि सरधान देवगुरु आगम, सप्ततत्त्व रुचि लावो ॥ भोर० ॥ ॥ २ ॥ दुःखित जनकी दया ल्याय उर, दान चारविध द्यावो। रागरोष तजि भजि जिनपदको, बुधजन शिवपद पावो ॥ भोर०॥ ३ ॥

(१७) भैरों।

किंकर अरज करत जिनसाहिब, मेरी ओर निहारो ॥ किंकर० ॥टेक॥ पतित उधारक दीन दयानिधि, सुन्यो तोहि उपगारो। मेरे औगुन पैं मति जावो, अपनो सुजस विचारो ॥ किंकर० ॥ १ ॥ अब ज्ञानी दीसत हैं तिनमें, पक्षपात उरझारो। नाहीं मिलत महाव्रतधारी, कैसैं ह्वै निस्तारो ॥ किंकर० ॥२॥ छबी रावरी नैनन निरखी, आगम सुन्यो तिहारो। जात नहीं भ्रम क्यों अब मेरो, या दूषनको टारो किंकर० ॥ ३ ॥ कोटि बातकी बात कहत हों, योही, मतलब म्हारो। जोलों भव तोलों बुधजनको, दीजे सरनसहारो। किंकर० ॥ ४ ॥

[१८]

राग—पट्ताल तिताला।

पतित उधारक पतित रटत है, सुनिए अरज हमारी हो। पतित० ॥ टेक ॥ तुमसो देव न आन जगतमें जासों करिय पुकारी हो। पतित० ॥ १ ॥ साथ अविद्या लगि अनादिकी, रागरोष बिस्तारी हो। याहीतैं संतति करमनकी, जनम मरन दुखकारी हो ॥ पतित० ॥ २ ॥ मिलै जगत जन जो भरमावै, कहै हेत संसारी हो। तुम विनकारन शिवमगदायक, निजसुभावदातारी हो ॥ पतित० ॥ ३ ॥ तुम जाने विन काल अनंता, गति गतिके भव धारी हो। अब सनमुख बुधजन जांचत है, भवदधिपार उतारी हो ॥ पतित० ॥ ४ ॥

(१९) राग भैरों।

उठोरे सुग्यानी जीव, जिनगुन गावोरे। उठोरे ॥ टेक ॥ निसि तो नसाय गई, भानुको उद्योत भयो, ध्यानको लगावो प्यारे, नींदको भगाओरे

॥ उठोरे० ॥ १ ॥ भववन चौरासी वीच, भ्रमतो फिरत नीच, मोह-जाल-फंद-फस्यो, जन्म मृत्यु पावोरे ॥ उठोरे० ॥ २ ॥ आरज पृथ्वीमें आय, उत्तम नरजन्म पाय, श्रावककुलको लहाय, मुक्ति क्यों न जावोरे ॥ उठोरे० ॥ ३ ॥ विषय-निमैं राचिराचि, बहुविधके पाप सांचि, नरकनिमैं जाय क्यों अनेक दुःख पावोरे ॥ उठोरे० ॥४॥ परको मिलाप त्यागि, आतमके जाप लागि, सुबुधि बतावै गुरु ज्ञान क्यों न लावोरे ॥ उठोरे० ॥ ५ ॥

(२०) राग भैरों ।

चरननचिन्ह चितारि चित्तमें, बंदन जिन चौवीस करूं ॥ चरनन० ॥ टेक ॥ रिषभ बृषभ गज, अजितनाथकै । संभबके पद बाज[1], सरूं । अभिनंदन कपि, कोक[2] सुमतिकै, पद्म[3] पद-मप्रभ पायधरूं ॥ चरनन० ॥ १ ॥ स्वस्ति[4] सुपा-रस, चंद चंदकै, पुष्पदंतपद मत्स्य[5] वरूं । सुरतरु[6]

१ घोड़ा । २ चकवा । ३ कमल । ४ सांथिया । ५ मगर मच्छ । ६ कल्पवृक्ष ।

शीतल चरनकमलमें, श्रेयांसके गैंडा वनचरू ॥ चरनन० ॥ २ ॥ भैंसा वासु, वराह विमलपद, अनँतनाथके सेहि परूं । धर्मनाथ कुंस, शांति हिरन जुत, कुंथुनाथ अज, मीन अरू[2] ॥ चरन० ॥ ३ ॥ कलस मल्लि, कूर्म[3] मुनिसुव्रत नमि कमल स्तपत्र तरूं । नेमि संख, फँनि पास वीर हँरि, लखि बुधजन आनंद भरूं ॥ चरनन० ॥४॥

(२१)

जिनमुख अनुपम सूर्य निहारत, भ्रमतम दूर भगाया है । जिनमुख० ॥ हितकर वचन-किरन श्रवननिधसि, भवि-मन कमल खिलाया है चक्रवाक आतमको चकवी, सुमतिसँयोग मिलाया है । जिनमुख० ॥ १ ॥ विनसी मोहनिशा दुखकारी, आतमज्ञान जगाया है । मिथ्यानींद मिटी प्रगटी अब, सम्यकरुचिसुख पाया है । जिनमुख० ॥ २ ॥ कुमति कमोदनि सकुचन लागी उडुगन कुनय छिपाया है । सहज सर्वहित

१ वज्र । २ अरनाथके । ३ कछुवा । ४ सर्प । ५ सिंह ।

कर शिवमारग, भवि जीवन लखि पाया है॥ जिनमुख० ॥ ३॥ भ्रष्ट कुजीव उलूक पशू सम, तिनने नाहिं लखाया है। धन्य दिनेश 'जिनेश्वर' आनन, जिहप्रकाश वृप पाया है। जिनमुख० ॥ ४॥

(२२)

श्रीअरहत छवि लखि हिरदै आनंद अनूपम छाया है श्रीअरहत० ॥ टेक ॥ वीतराग मुद्रा हितकारी, आसन पद्म लगाया है। दृष्टि नासिका अग्रधार मनु, ध्यान महान बढाया है। श्रीअरहत० ॥ १ ॥ रूप सुधाधर अंजुलि भरभर, पीवत अति सुख पाया है। तारन तरन जगत-हितकारी, विरद शचीपति गाया है। श्रीअरहत० ॥ २ ॥ तुम मुखचंद्रनयनके मारग, हिरदैमांहि समाया है। भ्रमतम दुख आताप नस्यो सब, सुखसागर बढि आया है। श्रीअरहत० ॥ ३ ॥ प्रगटी उर संतोष चंद्रिका, निजस्वरूप दरशाया है। धन्य धन्य तुम छबी 'जिनेश्वर'

देखत ही सुखपाया है। श्रीअरहत० ॥ ४ ॥

(२३)

जयवंतो जिनबिंब जगतमें, जिन देखत निज पाया है। जयवंतो ॥ टेक ॥ वीतरागता लखि प्रभुजीकी, विषयदाह विनशाया है। प्रगट भयो संतोष महागुण, मनथिरतामें आया है ॥ जयवंतो० ॥ १ ॥ अतिशय ज्ञान शरासनपै धरि, शुक्लध्यान शर वाया[1] है। हानि मोह-अरि चंड चौकडी, ज्ञानादिक उपजाया है। जयवंतो० ॥ २ ॥ वसुविधि अरि हरिकर शिवथानक, थिर-स्वरूप ठहराया है। सो स्वरूप शुचि स्वयंसिद्ध प्रभु, ज्ञानरूप मनभाया है ॥ जयवंतो० ॥ ३ ॥ यदपि अचेत तदपि चेतनको, चितस्वरूप दिखलाया है। कृत्याकृत्य 'जिनेश्वर' प्रतिमा पूजनीय गुरुगाया है ॥ जयवंतो० ॥ ४ ॥

(२४)

वंदों जिनदेव सदा चरन कमल तेरे, जा

---

१ फेंका है।

प्रसाद सकल कर्म छूटत हैं मेरे ॥ टेक ॥ ऋषभ अजितसंभव अभिनंदन केरे । सुमतिपद्म सुपार्श्व, चंदा प्रभुमेरे । बंदों ॥ १ ॥ पुष्पदंत शीतल श्रेयांस गुण घनेरे । वासुपूज्य विमल अनंतधर्म जग उजेरे । वंदों० ॥ २ ॥ शांति कुंथु अरहमल्लि मुनिसुव्रतकेरे । नमि नेमीश्वर पार्श्वनाथ महावीर मेरे । वंदों ॥ ३ ॥ लेत नाम अष्टयाम छूटत भवफेरे । जन्म पाय जादोंराय चरननके चेरे । बंदों० ॥ ४ ॥

(२५)

जय श्रीवीर जिनेंद्र चंद्र शत, इंद्र वंद्य जगतारं ॥ टेक ॥ सिद्धारथकुल कमल अमल रवि भव[1]भूधरपविभारं । गुनमनि-कोष अदोष मोखपति, विपिन[2]-कषाय तुषारं ॥ जयश्री० ॥ १ ॥ मदनकदन शिवसदन पद-नमित, नित अनमित यतिसारं । रमा[3] अनंत कंत अंतककृत, अंत[4]-

1 संसाररूपी पहाड़को बड़े भारी वज्रसमान । २ कषायरूपी वनको तुषारकी समान । ३ अनंत मोक्ष लक्ष्मीके पति । ४ यमराजका अन्त

जंतु-हितकारं ॥ जयश्री० ॥ २ ॥ फंद[5]चंदनाकंदन दादुर[6], दुरित तुरित निर्वारं। रुद्र[7]रचित अतिरुद्र उपद्रव, पवन-अद्रि-पतिसारं ॥ जयश्री० ॥ ३ ॥ अंतातीत[8] अचिंत्य सुगुन तुम, कहत लहत को पारं। हे जगमौल[9] दौल तेरे क्रम[10], नमैं शीश कर धारं ॥ जयश्री० ॥ ४ ॥

(२६)

श्रीजिन पूजनको हम आये, पूजत ही दुख-द्वंद मिटाये ॥ श्रीजिन ॥ टेक ॥ विकलप गयो प्रगट भयो धीरज, अद्भुत सुख समता बर-पाये। आधिव्याधि अब दीखत नाहीं, धरम क-लपतरु आंगन थाये ॥ श्रीजिन ॥ १ ॥ इतमें इंद्र चक्रधर इतमें, इतमें फनिंद खड़े सिरनाये। मुनिजन वृंद करैं थुति हरषत, धन हम जनमें पद परसाये ॥ श्रीजिन ॥ २ ॥ परमौदारिक मैं

करनेवाले। ५ चंदना सतीका फंद काटनेवाले। ६ समवशरनमें पुष्प लेकर जानेवाले मेंडकके पाप। ७ रुद्र द्वारा किए हुये उपद्रव। ८ अनंत। ९ जगतके मुकुट। १० चरण।

परमातम, ज्ञानमयी हमको दरसाये। ऐसे ही हममैं हम जानैं, बुधजन गुन मुख जात न गाये ॥ मुनिजन ॥ ३ ॥

(२७)

राग—अलहिया।

चंदजिनेश्वर नाम हमारा, महासेन सुत जगत पियारा ॥ चंद० ॥ टेक ॥ सुरपति नरपति फनि-पति सेवत, मानि महा उत्तम उपगारा। मुनि-जन ध्यान धरत उरमाही, चिदानंद पदवीका धारा ॥ चंदजिनेश्वर० ॥१॥ चरन सरन बुधजन जे आये, तिनपाया अपना पद सारा ॥ मंगल-कारी भवदुख हारी, स्वामी अद्‌भुत उपमावा-रा ॥ चंदजिनेश्वर० ॥ २

(२८)

राग—भैरों

पूजत जिनराज आज आपदा हरी। दरस्यो तत्त्वार्थ मोहि धन्य या घरी ॥ पूजत० ॥ टेक ॥ छलबल मद क्रोध मेरी उच्चता करी। अबलोंया जानत सो वात निरखरी० ॥ पूजन० ॥ १ ॥ राज

पदवी छोरिकैं विरागता धरी। तामें जिनराज भये, दृष्टि या परी ॥ पूजन० ॥ २ ॥ आन भाव-जन्म जन्म, कीन बहु बरी। यातैं गति चार बीच विपति अति भरी ॥ पूजत० ॥ ३ ॥ बुध-जन जिन सरन गह्यो, मिटगई मरी। आप-माहिं आप लख्यो, शुद्धि आपरीं० ॥ ४ ॥

---

(२)

हजूरी पद संग्रह प्रथम भाग।

१। कविवर बनारसीदास कृत।

१ राग काफी।

चिंतामन स्वामी सांचा साहिब मेरा, शोक हरैं तिहुंलोकको उठि लीजतु नाम सवेरा, चिंतामन० ॥ टेक ॥ १ ॥ सूर समान उदोत है, जग तेज प्रताप घनेरा। देखत मूरत भावसौं, मिट जात मिथ्यात अंधेरा, चिंतामन० ॥ २ ॥ दीनदयाल निवारिये, दुख संकट जोनि वसेरा। मोहि अभयपद दीजिये फिर होय नहीं भवफेरा, चिंतामन० ॥ ३ ॥ बिंब विराजत आगरे, थिर

थानथयो शुभ वेरा। ध्यान धरै विनती करै, बानारसि वंदा तेरा, चिंतामन स्वामी० ॥ ४ ॥

कविवर दौलतरामजी कृत

(२)

भज ऋषिपति[1] ऋषभेश[2] ताहि नित, नमत अमर असुरा। मनमथ[3]-मथ दरसावतशिवपथ[4], वृष-रथ-चक्रधुरा। भज० ॥ टेक ॥ जा प्रभुगर्भ छ मासपूर्व सुर करी सुवर्ण धरा। जन्मत सुरगिर-धर सुरगनयुत हरि[5] पयन्हवन करा॥ भज० ॥ १ ॥ नटत नर्तकी[6] विलय देख प्रभु, लहि वि-राग सुथिरा। तबहिं देवऋषि[7] आय नाय शिर जिनपदपुष्प धरा॥ भज० ॥ २ ॥ केवलसमय जास वचरविने[8], जगभ्रमतिमिर हरा। सुदृ-ग-बोध चारित्र-पोत[9] लहि, भवि भवसिंधु-तरा। भज० ॥ ३ ॥ योग सँघार निवार शेष[10] विधि,

१। मुनिनाथ। २ धर्मके ईस आदिनाथ भगवानको ३। काम-देवको मथनेवाले। ४ मोक्षमार्ग। ५ इंद्र। ६ नीलांजना अप-सरा। ७ लौकांतिक देव। ८ वचनरूपी सूरजने। ९ रत्नत्रयरूपी जहाज। १० शेषके चार अघाति कर्म।

निवसे वसुम धरा। दौलत जे याको जस गावैं, ते हैं अज अमरा ॥ भज० ॥ ४ ॥

(३)

(यह पद प्रभातीमें भी चलता है)

चंद्रानन जिन चंद्रनाथके, चरन चतुर चित ध्यावतु है। कर्मचक्र चकचूर चिदातम, चिनमूरतपद पावतु है। चंद्रा० ॥ टेक ॥ हाहा[1] हूहू नारद तुंवर, जासु अमल जस गावतु हैं। पद्मा शची शिवा श्यामादिक, करधर बीन वजावतु है। चंद्रानन० ॥ १ ॥ विन इच्छा उपदेशमाहि हित, अहित जगत-दरसावतु है। जा-पद-तट सुरनरमुनि-घट-चिर, विकट विमोह नशावतु है॥ चंद्रानन० ॥ २ ॥ जाकी चंद्रवरन तन दुतिसों कोटिक सूर[2] छिपावतु हैं। आतमज्योत-उद्योत मांहि सब, ज्ञेय[3] अनंत दिपावतु है॥ चंद्रानन० ॥ ३ ॥ नित्य उदय अकलंक अछीनसु मु-

---

१ हाहा हूहू नारद और तुंवर ये चार जातिके गन्धर्व देव हैं।
२ सूरज। ३ पदार्थ।

नि[1]उडुचित्त रमावतु है। जाकी ज्ञानचंद्रिका लोकालोक, माहिं न समावतु है। चंद्रानन०॥ ४॥ साम्य[2]सिंधुवर्द्धन जग[3]नंदन, को शिर हरिगन नावतु हैं। संशय विभ्रम मोह दौलके, हर जो जग भरमावतु हैं। चंद्रानन० ॥ ५ ॥

(४)

जय जिन वासुपूज्य शिव-रमनी-रमन मद[4]न-दनुदारन हैं। बालकाल संजम संभाल रिपु मोह[5]व्याल-बलमारन हैं॥ जय जिन० ॥ टेक ॥ जाके पंचकल्यान भये चंपापुरमें सुखकारन हैं। वासव[6]वृंद अमंद मोदधर, किये भवोदधि-तारन हैं॥ जयजिन० ॥ १ ॥ जाके वैनसुधा त्रिभुवन जन, को भ्रमरोग विदारन है। जा गुन चिंतन अमल अनल मृतु, जनम-जराबन-जारन हैं॥ जयजिन०॥२॥जाकी अरुन शांत छवि रवि-भा-

१ मुनिरूपी तारोंका चित २ समतारूपी समुद्रकोव ढानेवाला। ३ जगतको आनंद करनेवाला चंद्रमा। ४ कामदेवरूपी राक्षसको मारनेवाले। ५ मोहरूपी सांपका। ६ इन्द्रोंके समूह।

दिवसप्रबोधप्रसारन हैं । जाके चरन शरन सुरतरु, वांछित शिवफल विस्तारन हैं ॥ जयजिन० ॥ ३ ॥ जाको शासन सेवत मुनि जे, चार ज्ञानके धारन हैं । इंद्र फणींद्र मुकुटमणि दुति जल, जापद कलिल[1] पखारन हैं ॥ जय जिन० ॥ ४ ॥ जाकी सेव अछेवै[2] रमाकर, चहुं-गति-विपति-उधारन हैं । जा अनुभवै[3] घनसार सु आकुल, तापकलाप-निवारन हैं ॥ जय० ॥ ५ ॥ द्वादश मो जिन चंद्र जासवर, जस उजासको पार न है । भक्तिभारतैं नमैं दौलके चिर-विभाव-दुख टारन हैं । जयजिन० ॥ ६ ॥

[५]

कुंथुनके[4] प्रतिपाल कुंथु जग, तार सार गुन धारक हैं । वर्जित[5]ग्रंथ कुपंथवितर्जित, अर्जित[6]-पंथ अमारक हैं ॥ कुंथुनके० ॥ टेक ॥ जाकी

१ पाप २ अक्षय (मोक्ष) लक्ष्मीकी करनेवाली ३ जिनका अनुभवरूपी मलयागिरि चंदन । ४ छोटे ५ जीवोंके भी ५ परिग्रह रहित । ६ अहिंसामार्गके अर्जन करनेवाले ।

समवसरन बहिरंग,-रमा गनधार[1] अपार कहैं। सम्यग्दर्शन-बोध-चरन अध्यात्म-रमा-भर-भारक हैं॥ कुंथुनके०॥ १॥ दशधाधर्मपोतकर[2] भव्यन, को भवसागर-तारक हैं। वर समाधि-वन-घन-विभाव-रज, पुंजनिकुंजनिवारक हैं॥ कुंथुनके० ॥ २॥ जासु ज्ञाननभमें अलोकजुत, लोक यथा इक तारक[3] है। जासु ध्यान हस्तावलम्ब दुख, कूप-विरूप-उधारक हैं। कुंथुनके० ॥ ३॥ तज छखंडकमला प्रभु अमला, तप-कमला-आगारक हैं। द्वादश सभासरोजसूर भ्रम, तरु-अंकूर उपारक हैं॥ कुंथुनके० ॥४॥ गुण अनंत कहि लहत अंत को? सुरगुरुसे बुध-हारक हैं। नमैं दौल हे कृपाकंद भव,-द्वंद्व टार बहुबार कहैं॥ कुंथुनके॥५॥

[६]

पाँस[4] अनादि अविद्या मेरी हरनपास[5]-पर-

1 गणधर। 2 दशलक्षणधर्मरूपी जहाज द्वारा छहखंडकी राज्य लक्ष्मी। 3 तारा। 4 फांसी। 5 पार्श्वनाथ भगवान।

मेशा हैं । चिद्विलाससुखरास[1] प्रकाश-शवितरन त्रिभोनदिनेशा हैं ॥ टेक ॥ दुर्निवार[2] कन्दर्पसर्प-को, दर्पविदरनखगेशा हैं । दुठ[3] शठ कमठ-उपद्रव-प्रलय-समीर-सुवर्ण-नगेशा हैं ॥ पास० ॥ १ ॥ ज्ञान अनंत अनंत दर्शवल[4], सुख अनंत परमेशा हैं । स्वानुभूति रमनीवर[5] भविभव[6], गिर-पवि शिवसदमेशा हैं ॥ पास० ॥ २ ॥ ऋषि मुनि यति अनगार[7] सदा तस, सेवत पादकुशेसा[8] हैं । वदनचंद्रतैं[9] झरै गिरामृत[10], नाशन जनम-कलेशा हैं ॥ पास० ॥ ३ ॥ नाममंत्र जे जपैं भव्य तिन, अघ-अहि[11] नशत अशेषा हैं । सुर

१ चेतन (जीव) के विलासरूपी सुखकी राशिके प्रकाशको प्रकाश दान करनेवाले तीन लोकके सूर्य । २ दुखसे निवारा जाय ऐसे कामरूपी सर्पका गर्व दूर करनेके लिये खगेश कहिं गरुड़ हो । ३ दुष्टमूर्ख कमठकृत उपसर्ग रूपी प्रलयकालकी आंधीको रोकनेकेलिये सुमेरु पर्वत हैं । ४ अनन्त दर्शन ज्ञान सुख वलरूपी लक्ष्मीके ईश । ५ आत्माकी अनुभूतिरूपी रमनीके पति । ६ भव्य-जनोंके संसाररूपी पर्वतको तोड़नेके लिये वज्र । ७ एक प्रकारके संयमी । ८ चरण कमल । ९ मुखरूपी चन्द्रमासे । १० वाणी-रूपी अमृत ११ पापरूपी सर्प नाश हो जाते हैं सबके सब ।

अहमिंद्र खगेंद्र चंद्र है, अनुक्रम होहिं जिनेशा हैं ॥ पास० ॥ ४ ॥ लोक-अलोक ज्ञेय-ज्ञायकपै[1] रतै[2] निजभाव चिदेशा हैं। राग विना सेवक जन तारक, मारैक[3] मोह न द्वेषा हैं ॥ पास० ॥ ५ ॥ भद्र[4]-समुद्र-विवर्द्धन, अदभुत पूरन-चंद्र सुवेशा हैं। दौल नमैं पद तासु जासु शिवथल समेद-अचलेशा[5] हैं ॥ पास० ॥ ६ ॥

(७)

जय शिवकामिनिकंत वीर[1] भगवंत अनंत सुखाकर हैं। विधि[2]गिरिगंजन बुध मनरंजन-भ्रमतम-भंजन भाकर[3] हैं ॥ जय शिव० ॥ टेक ॥ जिन उपदेश्यो दुविधधर्म[4] जो, सो सुरसिद्धरमाकर[5] हैं। भवि[6]उर-कुमुदनिमोदन भवतप-हरन

---

१ लोक अलोक संबंधी समस्त पदार्थोंके जानते हुए भी। २ चैतन्यरूपी निज भावोंमें ही मगन हैं। ३ कामदेव। ४ कल्याणरूपी समुद्रको बढाने वाले अद्भुत मनोहर चन्द्रमा हैं। ५ मोक्ष स्थान जिनका सम्मेद शिखर पर्वतराज है।

१ महावीर भगवान। २ कर्मरूपी पर्वतके नष्ट करनेवाले। ३ सूर्य। ४। दो प्रकारका धर्म गृहस्थ और मुनिका। ५ स्वर्ग मोक्ष लक्ष्मीका करनेवाला। ६ भव्यपुरुषोंकी हृदयरूपी कुमुदिनीको प्रफुल्लित कर-

अनूप निशाकर हैं ॥ जय शिव० ॥ १ ॥ परम विरागि रहैं जगतैं पै, जगत-जंतु रक्षाकर हैं। इंद्र फनींद्र खगेंद्र चंद्र जगठाकर ताके चाकर हैं ॥ जय शिव० ॥ २ ॥ जासु अनंत सुगुन मणि-गननित, गनत गनीगन थाक रहैं। जा प्रभुपद-नवकेवललब्धि सु,-कमलाको कमलाकर हैं ॥ जय शिव० ॥ ३ ॥ जाके ध्याँनकृपान रागरुष, पासहरन समताकर हैं। दौल नैम कर जोर हरन भव,-बाधा, शिवराधाकर हैं ॥ जय शिव० ॥ ४ ॥

(८)

उरग-सुरग-नरईश शीस जिस, आतपत्र त्रिधरे। कुंदकुसुमसम चमर अमरगन, ढारत मोद भरे ॥ उरग० ॥ टेक ॥ तरु अशोक जाको अवलोकत, शोक थोक उजरे। पारजात संतानकादिके, बरसत सुमन वरे ॥ उरग० ॥ १ ॥

नेकेलिये संसाररूपी तापको हरनेकेलिये अनुपम चंद्रमा है। ७ ध्यानरूपी तरवारसे राग रोषकी फांसी काटनेवाले। ८ समताकी खानि। १ छत्र। २ तीन धरे। ३ कुंदके फूल समान।

सुमणि विचित्र पीठ अंबुजपर राजत जिन सुथिरे
वर्ण-विगति जाकी धुनिको सुनि, भवि भवसिंधु
तरे ॥ उरग० ॥ २ ॥ साढेबारहकोडिजातिके,
बाजत तूर्य खरे । भामंडलकी दुति अखंडने, रवि
शशि मंद करे ॥ उरग० ॥ ३ ॥ ज्ञान अनंत
अनंत दर्शबल, शर्म अनंत भरे । करुणामृत
पूरित पदजाके, दौलत हृदय धरे । उरग०॥४॥

[६]

भविनसरोरुहसूर भूरिगुनपूरित अरहंता।
दुरितदोष मोखपद घोषत, करत कर्मअंता
॥ भविन० ॥ टेक ॥ दर्शबोधतें युगपतिलखि
जाने जु भावऽनंता। विगताकुल जुतसुखअनंत,
विन,—अंत शक्तिवंता । भविन० ॥ १ ॥ जा तन
जोत-उदोत-थकी रवि, शशि दुति लाजंता । तेज
थोक अवलोक लगत है, फोक सचीकंता ॥
भविन० ॥२॥ जास अनूपरूपको निरखत, हर-

- १ अक्षररहित । २ बाजे । ३ भव्यरूपी कमलोंको सूर्य । ४ दोष रहित । ५ सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञानसे । ६ आकुलतारहित । ७ फीका । ८ इंद्र ।

खत हैं संता। जाकी धुनि सुनि मुनि निजगुन-मुन, परगर[2] उगलंता ॥ भविन० ॥ ३ ॥ दौल तौल[3] विन जस तस बरनत, सुरगुरु[4] अकुलंता। नामाक्षर सुन कान स्वानसे राँक[5] नाकगंता[6] ॥ भविन० ॥ ४ ॥

(१०)

हमारी वीर हरो भव पीर। हमारी० ॥ टेक ॥
मैं दुख पतित दयामृतसर तुम, लखि आयो तुम तीर। तुम परमेश मोखमगदर्शक, मोहद-वानलनीर। हमारी० ॥ १ ॥ तुम विन हेत जगत उपकारी, शुद्ध चिदानँद धीर। गनपतिज्ञान-समुद्र न लंघै, तुमगुनसिंधु गँहीर ॥ हमारी० ॥ २ ॥ याद नहीं मैं विपत सही जो, धर धर अमित शरीर। तुम-गुन चिंतत नशत दुःख भय, ज्यों घन चलत समीर ॥ हमारी० ॥ ३ ॥ कोटिबारकी अरज यही है, मैं दुख सहूं अधीर।

---

१ अपने गुणोंका मनन करके। २ परागरूपी विष। ३ अपरिमित ४ बृहस्पति। ५ रंक—नाचीज। ६ स्वर्ग गया। ७ बहुत ऊंडा।

हरहु वेदनाफंद दौलको, कतर करम-जंजीर ॥ हमारी० ॥ ४ ॥

(११)

सब मिलि देखो हेली म्हारी हे, त्रिशलाबाल वदन रसाल ॥ सब० ॥ टेक ॥ आये जुत समवसरन कृपाल, विचरत अभय व्यालमराल। फलित भई सकल तरु माल। सब मिल० ॥ १ ॥ नैन न हालै भृकुटी न चालै, वैन विदारै विभ्रम जाल। छवि लख होत संत निहाल। सब मिल० ॥ २ ॥ वंदन काज साज समाज, संगलिये स्वजन पुरजन आज, श्रेणिक चलत है नरपाल ॥ सब मिल० ॥ ३ ॥ यों कहि मोद जुत पुरवाल लखन चाली चरम जिनपाल, दौलत नमत कर धर भाल ॥ सब मिल० ॥ ४ ॥

(१२)

अरि[1]-रज[2]-रहस[3]-हनन प्रभु अरहन, जैवंतो जगमें। देव अदेव सेवकर जाकी, धरहिं मौलि

---

१ मोह। २. ज्ञानावरण दर्शनावरणकर्म। ३ अंतरायकर्म।

पगमें ॥ अरिरज० ॥ टेक ॥ जा तन अष्टोत्तर सहस लक्खन लखि कलिल शमै । जा वच-दीप-शिखातैं मुनि विचरैं शिवमारगमैं ॥ अरिरज० ॥ १ ॥ जास पासतैं शोकहरनगुन, प्रगट भयो नगमें । व्यालमराल कुरंग सिंघको, जातिविरोध गमै ॥ अरिरज० ॥ २ ॥ जा-जस-गगन-उलं-घन कोऊ, क्षम[2] न मुनीगनमैं । दौल नाम तसु सुरतरु है या, भव[3]मरुथलमगमैं ॥ अरि० ॥३॥

(१२)

हे जिन तेरे मैं शरणै आया । तुम हो परम दयाल जगतगुरु, मैं अव भवदुखपाया ॥ हे जिन ॥टेक॥ मोह महादुठ घेरिरह्यो मोहि, भव कानन भटकाया । नित निजज्ञानचरननिधि विसरचो, तन धन करअपनाया ॥ हे जिन० ॥ १ ॥ निजानंद-अनुभव-पियूष तज, विषय हलाहल खाया । मेरी भूल मूल दुखदाई, निमितमोहविधि थाया ।

१ अशोक वृक्षमें । २ समर्थ । ३ संसाररूपी मारवाड़देशके विकट मार्गमें । ४ अमृत ।

हे जिन० ॥२॥ सो दुठ होत शिथिल तुमरे ढिग, और न हेतु लखाया। शिवस्वरूप शिवमगदर्शक तुम, सुजश मुनीगन गाया ॥ हे जिन० ॥ ३ ॥ तुम हो सहज निमित जगहितके, मो उर निश्चय भाया। भिन्न होहुं विधितैं सो कीजे, दौल तुम्हें सिर नाया ॥ हेजिन० ॥ ४ ॥

(१४)

हे जिन मेरी, ऐसी बुधि कीजै। हे जिन० ॥ ॥ टेक ॥ रागरोषदावानलतैं वचि, समतारसमें भीजै ॥ हे जिन० ॥ १ ॥ परमें त्याग अपनपो निजमें, लाग न कबहूं छीजै। हे जिन० ॥ २ ॥ कर्म कर्मफलमांहि न राचै, ज्ञानसुधारस पीजै ॥ ॥ हे जिन० ॥३॥ मुझ कारजके तुम कारन वर, अरज दौलकी लीजै ॥ हे जिन० ॥ ४ ॥

(१५)

शामरियाके नाम जपेतैं छूट जाय भवभामरिया शामरियाके। टेक। दुरित दुरित पुन पुरंत-फुरंत-

१ कर्मोंसे। २ पार्श्वनाथभगवानके। ३ संसारका भ्रमण। ४ पाप। ५ भगजाते हैं। ६ पूर्णतया स्फुरित होते हैं।

गुन, आतमकी निधि आगंरियां[1]। विघटत है पर दाहचाह झट, गटकत[2] समरसगागरियां। सामरियाके ॥ १ ॥ कटत कलंक करमकलसा[3]-यनि, प्रगटत शिवपुरडागरियां[4]। फटत घटाघन-मोहछोह[5] हट, प्रगटत भेदज्ञानघरियां[6] ॥ शाम० ॥ २ ॥ कृपाकटाक्ष तुमारीतैं ही, युगलनाग-विपदा टरियां। धार भए सो मुक्तिरमावर, दौल नमैं तुव पागरियां ॥ शामरियाके० ॥ ३ ॥

(१६)

शिवमग दरसावन रावरो[8] दरस[9] ॥ शिवमग० ॥ ॥ टेक ॥ परपदचाहदाहगदनाशन[10], तुमवच-भेष-जपान[11] सरस ॥ शिवमग० ॥ १ ॥ गुण चितवत निज अनुभव प्रगटै, विघटै विधिठग[12]-दुविध

---

१ आगं आजाती है। २ गटकते वा पीते हैं। ३ कर्मरूपी कालिख। ४ पगडंडी। ५ रागद्वेष। ६ निजपरज्ञानकी घड़ी। ७ तुमारा नाम धारण करके। ८ आपका। ९ दर्शन। १० परद्रव्यकीचाह रूपी दाहरोगको नाश करनेकेलिये। ११ तुमारे वचनरूपी दवाईका पीना। १२ भावकर्म द्रव्यकर्मरूपी ठग।

तरस ॥ शिवमग० ॥ २ ॥ दौल अवांची संपत्त सांची, पाय रहै थिर राचि स्वरस ॥शिव०॥ ३॥

(१७)

मेरी सुध लीजै रिषभ स्वाम। मोहि कीजे शिव पथगाम ॥ मेरी०॥ टेक ॥ मैं अनादि भव भ्रमत दुखी अब, तुम दुख मेटत कृपाधाम। मोहि मोह घेरा चेरा कर, पेरा चहुंगति विदित ठाम ॥ मेरी० ॥ १ ॥ विषयनि-मन ललचाय हरी मुझ, शुद्ध-ज्ञान-संपति-ललाम। अथवा यह जडको न दोष मम, दुख सुखता-परनति सुकाम ॥ मेरी० ॥ २ ॥ भाग जगे अब चरन जपे तुम, वच सुनके गहे सुगुनग्राम। परम विराग ज्ञानमय मुनिजन, जपत तुमारी सुगुनदाम ॥ मेरी० ॥ ३ ॥ निर्विकार-संपति-कृति तेरी, छविपर वारों कोटि काम। भव्यनिके भव-हारन कारन,

१ अवाच्य—कहनेमें न आवै ऐसी सम्पत्ति। २ आत्मीकरसमें। ३ मोक्षमार्गमें चलनेवाला। ४ चेला। ५ श्रेष्ठ। ६ गुणोंका समूह। ७ गुणोंकी माला। ८ कामदेव।

सहज यथा तमहरनधाम[1] ॥ मेरी०॥४॥ तुमगुन-महिमा कथनकरनको, गिनत गणी[2] निजबुद्धि खाम[3] । दौलतणी[4] अज्ञान परनती, हे जगत्राता-कर विराम[5] ॥ मेरी० ॥ ५ ॥

(१८)

मोहि तारोजी क्यों ना ? तुम तारक त्रिजग त्रिकालमैं ॥ मोहि०॥टेक॥ मैं भव उदधि पर्यो दुख भोग्यो, सो दुख जात कह्यो ना। जामन मरन अनंत तणो तुम, जाननमाहि छिप्यो ना ॥ मोहि० ॥ १ ॥ विषय-विरसरस बिषम भख्यो मैं, चख्यो न ज्ञान सलोना[6] । मेरी भूल मोहि दुख देवै, कर्म-निमित्त भलो ना ॥ मोहि० ॥ २ ॥ तुम पद-कंज धरे हिरदै जिन, सो भवताप तप्यो ना । सुरगुरुहूके वचनकरनकरि[7], तुम जँस-गगन[8] नप्यो ना ॥ मोहि० ॥ ३ ॥ कुगुरु कुदेव

१ अंधकार नाश करनेके लिये सूर्यका प्रकाश । २ गणधर । ३ निजबुद्धिकी कमी । ४ दौलतकी । ५ नाश । ६ स्वादिष्ट । ७ वचनरूपी हाथोंसे । ८ तुमारा यशरूपी आकाश ।

कुश्रुत सेये मैं, तुम मत हृदय धरयो ना। परम विराग ज्ञानमय तुम जाने विन काज सरयो ना ॥ मोहि० ॥ ४ ॥ मो सम पतित[1] न अवर दयानिधि, पतिततार[2] तुमसो ना। दौलतणी अरदास[3] यही है, फिर भववास वसो ना ॥ मोहि० ॥ ५ ॥

(१९)

मैं आयो जिन सरन तिहारी। मैं चिर दुखी विभाव भावतैं, स्वाभाविक निधि आप विसारी ॥ मैं० ॥ १ ॥ रूप निहार धार तुम गुन सुन, वैन सुनत भवि शिवमगचारी। यों मम कारजके कारन तुम, तुमरी सेव एव उर धारी ॥ मैं० ॥२॥ मिल्यो अनंत जन्मतैं अवसर, अब विनऊं हे भवसरतारी[4]। परमें इष्ट अनिष्ट कल्पना, दौल कहै झट मेट हमारी। मैं आयो० ॥ ३ ॥

(२०)

मैं हरख्यो निरख्यो मुख तेरो। नासान्यस्त[5]

१ पापी। २ पापियोंको तारनेवाला। ३ अर्जी। ४ संसार समुद्रसे तारनेवाले। ५ नासिकापर लगाई है दृष्टि जिसने।

नयन भ्रू-हलय न,[2]वयन निवारन मोह-अंधेरो। मैं हरख्यो०॥ १॥ परमें कर मैं निजबुधि अबलों, भवसरमैं दुख सह्यो घनेरो। सो दुख-भानन स्वपरपिछानन, तुम विन कारन आन न हेर्यो॥ मैं हरख्यो० ॥२॥ चाह भई शिवरा[3]हलाहकी गयो उछाह असंजमकेरो। दौलत हितविराग-चित आन्यो, जान्यो रूप ज्ञानदृग मेरो॥ मैं हरख्यो० ॥ ३ ॥

(२१)

प्यारी लागै म्हानै जिन छवि थारी॥ प्यारी० ॥ टेक॥ परमनिराकुल-पद-दरसावत, वर विरागता-कारी। पट-भूषन-विन पै सुंदरता, सुरनर-मुनिमनहारी॥ प्यारी०॥१॥ जाहि विलोकत भवि निजनिधि-लहि, चिरविभावता टारी। निरनि[4]मेषतैं देख सचीप[5]ति, सुरता[6] सफल विचारी॥ प्यारी०॥ २॥ महिमा अकथ होत लखि जाको,

१ भ्रू हिलते नहीं। २ वचन। ३ मोक्षमार्गके लाभकी। ४ टिमकाररहित। ५ इन्द्रने। ६ अपना देवपणां।

पशुसम समकितधारी। दौलत रहो ताहि निरखनकी, भवभव टेव हमारी ॥ प्यारी० ॥ ३ ॥

(२२)

निरखि सुख पायो, जिनमुखचंद ॥ नि० ॥ टेक ॥ मोह-महातम नाश भयो है, उर[1]-अंबुज प्रफुलायो। ताप नश्यो बढि उदधि-अनंद ॥ निरखि० ॥१॥ चकवी कुमति विछुरि अति विलखै, आतमसुधा[2]स्रवायो। शिथिल भए सब विधिगणफंद ॥ निरखि० ॥ २ ॥ विकट भवोदधिको तट निकट्यो, अघतरुमूल नशायो। दौल लह्यो अब स्वपद स्वछंद ॥ निरखि० ॥३॥

(२३)

निरखि सखि ऋषिनको ईश यह ऋषभ जिन, परखिके स्वपर परसौंज[3] छारी। नैन नाशाग्रधरि मैन[4] विनशायकर, मौनजुत स्वास दिशि-सुरभिकारी[5] ॥ निरखि० ॥ १ ॥ धरासम क्षांति-

---

१. हृदयरूपी कमल। २ आत्मारूपी अमृत झरने लगा। ३ पर परनति। ४ कामदेव। ५ दिशाओंको सुगंधित करने वाली।

जुत नरामरखचरनुत[1], वियुतरागादिमद[2] दुरित-हारी[3]। जासक्रमपास[4] भ्रमनाश पंचास्य[5] मृग, वत्सकरि प्रीतिकी रीति धारी॥ निरखि०॥२॥ ध्यानदवमाहि[6] विधिदारु[7] प्रजराहिं सिर,-केश शुभ जिमि धुआं दिशि विथारी[8]। फसे जगपंक जन-रंक तिन काढने, किधौं जगनाह यह बांह सारी[9]॥ निरखि०॥३॥ तप्तहाटकवरन[10] वसन विन आभरन, खरे थिर ज्यों शिखर, मेरुकारी[11]। दौलको दैन शिवधौल[12] जगमौल[13] जे, तिन्हें कर जोर वंदन हमारी। निरख०॥४॥

(२४)

ध्यानकृपानपानिगहि[14]नाशी त्रेसठ प्रकृति अरी[15]। शेष पचासी[16] लागरही है ज्यों जेवरी जरी

१ मनुष्य देव विद्याधरोंसे वंदनीय। २ रहित रागादि मदसे। ३ पापोंको हरनेवाले। ४ जिसके चरणोंके पास। ५ सिंह। ६ ध्यानरूपी अग्निमें। ७ कर्मरूपी ईंधन। ८ विस्तारा है। ९ पसारी। १० तपाये हुये सोनेकासा रंग। ११ सुमेरु पर्वतका शिखर। १२ मुक्तिरूपी महल। १३ जगतके शिरोमणि। १४ ध्यानरूपी तलवार हाथमें लेकरि। १५ घातिया। कर्मोंकी १६ अघातियाकर्मोंकी पचासी प्रकृतियां।

॥ ध्यान०॥ टेक ॥ दुठ अनंग-मातंग-भंगकर[1], है प्रबलंग-हरी[2]। जा-पद भक्ति भक्तजन दुख-दावा-नलमेघ झरी ॥ ध्यान० ॥ १ ॥ नवल धवल पलै[3] सोहै कॅलमैं[4], क्षुधतृषव्याधिटरी। हलत न पलक अलक[5] नख वढत न, गति नभमांहि करी। ध्यान० ॥ २ ॥ जा-विन-शरन मरन जर[6] धर धर, महा असात भरी। दौल तास पद दास होत है वास-मुक्ति-नगरी ॥ ध्या० ३ ॥

(२५)

दीठा भागनतैं जिन-पाला[7], मोहनाशनेवाला। दीठा०॥टेक॥ शुभग निसंक रागविन यातैं, वसन न आयुध बाला[8] ॥ दीठा० ॥ १ ॥ जास ज्ञानमें जुगपत भासत, सकल पदारथमाला ॥ दीठा० ॥ २ ॥ निजमें लीन हीन इच्छा पर,-हितमित

---

१ कामदेवरूपी हाथीको मारनेवाले। २ प्रावल सिंह। ३ मांस रुधिर। ४ शरीरमें। ५ केश नख। ६ जरा बुढापा। ७ सम्यग्दृष्टी-से लगाकर बारहवें गुणस्थान तकके जीव जिन कहलाते हैं उनका रक्षक। ८ स्त्री।

वचन रसाला ॥ दीठा०॥३॥ लखि जाकी छबि आतम-निधि-निज, पावत होत निहाला ॥दीठा० ॥४॥ दौल जासगुन चिंततरत है, निकट विकट भवनाला ॥ दीठा० ॥ ५ ॥

(२६)

थारै तो बैनामैं[1] सरधान घणो छै म्हारै, छवि निरखत हिय सरसावै। तुम धुनिघन[2] परचहन[3]-दहनहर, वरसमतारसझर बरसावै॥ थारैतो० ॥ ॥१॥ रूप निहारत ही बुध है सो निजपर चिह्न जुदे दरसावै। मैं चिदंक[4] अकलंक अमल थिर, इंद्रियं[5]-सुख-दुख-जड़ फरसावै॥ थारै तो० ॥२॥ ज्ञानविरागसुगुनतुम-तनकी, प्रापतिहित सुर[6]-पति तरसावै। मुनि बडभाग लीन तिनमैं नित, दौल धवल[7]-उपयोग-रमावै थारै तो० ॥ ३ ॥

१। वचनोंमें। २ आपका वचनरूपी मेघ। ३ परपदार्थोंकी चाहरूपी अग्निको बुझानेवाला है। ४ चैतन्यस्वरूप। ५ इंद्रियों के सुखदुख जड़का स्पर्श करते हैं, मेरा नहीं मुझे सुखदुख होते नहीं। ६ इंद्र। ७ विशुद्ध वा शुद्ध।

(२७)

त्रिभुवन आनँदकारी जिन छवि, थारी नैन निहारी ॥त्रिभुवन॥टेक॥ ज्ञान अपूरव उदय भयो अब, यादिनकी वलिहारी। मो उर मोद बढ्यो जु नाथ तस, कथा न जात उचारी ॥ त्रिभुवन ॥ १ ॥ सुन घनघोर मोर[1]-मुद-ओर न, ज्यों निधि पाय भिखारी । जाहि लखत झट झरत-मोह-रज, होय सो भवि अविकारी ॥ त्रिभुवन ॥२॥ जाकी सुंदरता सु पुरंदर[2],-शोभ-लजावन-हारी। निज अनुभूति-सुधा छवि पुलकित, वदन मदन-अरि-हारी ॥ त्रिभुवन० ॥३॥ शूल[3] दुकूल[4] न बाला माला, मुनि-मन-मोद-प्रसारी । अरुन न नैनन सैन भ्रमै न न, बंक न लंक[5] सम्हारी ॥ त्रिभुवन ॥४॥ तातैं विधि-विभाव-क्रोधादि, न लखियत हे जगतारी। पूजत पातकपुंज पलावत, ध्यावत शिव-विस्तारी ॥ त्रिभुवन ॥ ५ ॥ कामधेनु सुरतरु चिंतामणि, इकभव सुख-करतारी। तुमछवि लखत मोदतैं जो सुर, सो तुम

१ । मयूरका हर्ष । २ इंद्रकी शोभा । ३ त्रिशूल । ४ वस्त्र । ५ कमर।

पद-दातारी ॥ त्रिभुवन० ॥ ६ ॥ महिमा कहत न लहत पार सुर,—गुरुहूकी वुधिहारी । और कहै किम ? दौल चहै इम, देहु दशा तुम धारी ॥ त्रिभुवन० ॥ ७ ॥

(२८)

जिन छवि तेरी यह, धन जगतारन, जिन० ॥ टेक ॥ मूल[1] न फूल[2] दुकूल[3] त्रिशूल न, शमदम कारन भ्रमतमवारन ॥ जिनछवि० ॥१॥ जाकी प्रभुताकी महिमातैं, सुर[4]-अधीशता लागत सार न ॥ अवलोकत भवि-थोक मोख-मग,—चरत वरत निज-निधि उरधारन ॥ जिनछवि० ॥२॥ ज[5]जंत भजत अघ तो को अचरज,समकित पावन भावन-कारन । तासु सेवफल एव चहत नित, दौलत जाके सुगुनउचारन ॥ जिनछवि० ॥३॥

(२९)

आज मैं परम पदारथ पायो, प्रभुचरनन

१ जटा या वल्कल। २ फूलोंकी माला। ३ वस्त्र। ४ इन्द्रपणा। ५ आपके पूजनेसे यदि पाप भाग जाते हैं तो इसमें कौनसा आश्चर्य है ?।

चितलायो ॥ आज मैं० ॥ टेक ॥ अशुभ गये शुभ प्रगट भए हैं, सहज कल्पतरु छायो । आज० ॥ ॥ १ ॥ ज्ञान शक्ति तप ऐसी जाकी, चेतन-पद दरसायो । आज मैं० ॥ २ ॥ अष्ट कर्मरिपु जोधा जीते, शिवअंकूर जमायो ॥ आज० ॥ ३ ॥

(३०)

नेमिप्रभूकी श्यामवरन छवि, नैनन छाय रही ॥ नेमि० ॥ टेक ॥ मणिमय तीन पीठपर अंबुज, तापर अधर ठही ॥ नेमि० ॥ १ ॥ मार[1] मार तप धार जार विधि, केवलरिद्धि लही । चार तीस अतिशय दुति-मंडित, नवदुग[2]दोष नहीं ॥ नेमि० ॥ २ ॥ जाहि सुरासुर नमत सतत[3], मस्तकतैं परस मैंही । सुरगुरु-वर-अंबुज-प्रफुलावन, अद्भुतभान सही ॥ नेमि० ॥ ४ ॥ धर अनुराग विलोकत जाको, दुरित नसैं सब ही । दौलत महिमा अतुल जासकी, कापै जात कही ॥ नेमि० ॥ ४ ॥

१ कामदेवको मारकर । २ नवदुगुण-अष्टादश दोष । ३ नीरंतर । ४ पृथिवी । ५ अपूर्व सूर्य ।

[३१]

अहो नमिजिनप[1] नित नमत शत सुरप[2] कंदर्प[3]-गजदर्प-नासन-प्रवल पनलपन[4]। अहो० ॥टेक॥ नाथ! तुम वानंपयपान करत भवि, नसै तिनकी जरा-मरन-जामन-तपन ॥ अहो० ॥ ॥ १ ॥ अहो शिवभौन तुम चरनचिंतौन जे, करत तिन जरत भावी[5] दुखदभवविपन[6]। हे भुवनपाल तुम विशद[7]गुनमाल उर धरैं, ते लहैं टुककालमें श्रेयपन[8]। अहो नमि० ॥ २ ॥ अहो गुनतूप[9] तुमरूप चखसहसकर, लखत संतोष प्रापति भयो नाकपं[10] न। अजे[11] अकलं[12] तज सकल दुखद परिगह-कुगह[13], दुसहपरिसह सही धार व्रतसारपन ॥ अहो नमि० ॥ पाय केवल सकल लोककरवत लख्यो, अख्यो[14] वृष द्विधा सुनि नसत

१ नमिनाथ भगवान। २ सौइंद्र। ३ कामदेव। ४ पंचानन सिंह। ५ भविष्यमें दुख देनेवाले। ६ संसार वन। ७ स्वच्छ। ८ श्रेष्ठता। ९ गुणोंके समूह। १० इन्द्र। ११ जिसका आगेको जन्म न हो। १२ निष्पाप। १३ खोटे ग्रह। १४ उपदेश्यो।

भ्रमतम-झंपन । नीच कीचक किया मीचतें रहित जिम, दौसको पास ले नाश भवपासँपन ॥ अहो नमि० ॥ ४ ॥

(३२)

प्रभु मोरी ऐसी बुधि कीजिये, रागदोष दावानलसे बच, समतारसमें भीजिए ॥ प्रभु० ॥ टेक ॥ परमैं त्याग अपनपो निजमें, लाग न कबहूं छीजिए । कर्मकर्मफलमांहि न राचत, ज्ञानसुधा-रस पीजिए ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शन ज्ञान चरननिधि, ताकी प्रापति कीजिए । मुझ कार-जके तुम बडकारन, अरज दौलकी लीजिए ॥ प्रभु० ॥ २ ॥

(३३)

हे जिन तेरो सुजस उजागर गावत हैं मुनिजन ज्ञानी, हे जिन० ॥ टेक ॥ दुर्जय मोह-महा-भट जानै, निज-बस कीने जगप्रानी । सो तुम

१ ढक्कन २ मृत्युसे । ३ दौलतको । ४ पंचपरिवर्तनरूप संसारकी फांस । ५ इस पदके दौलतरामजीकृत होनेमें संदेह है । ६ न्यून होवै ।

ध्यानकृपान पानि-गहि, ततछिन ताकी थिति भानी ॥ हे जिन० ॥ १ ॥ सुप्त अनादि-अविद्या-निद्रा, जिन जन निजसुधि विसरानी। ह्वै सचेत तिनि निजनिधि पाई, श्रवन सुनी जब तुम वानी ॥ हे जिन० ॥ २ ॥ मंगलमय तू जगमें उत्तम, तुही सरन शिवमगदानी। तुम-पद-सेवा परम औषधी, जन्मजरामृत-गद-हानी[1] ॥ हे जिन० ॥ ३ ॥ तुमरे पंचकल्यानकमाहीं, त्रिभुवन-मोद-दशा ठानी। विष्णु, विदंवर, जिष्णु, दिगंवर, बुध, शिव, कहि ध्यावत ध्यानी ॥ हे जिन० ॥ ४ ॥ सर्व-दर्व-गुनपरजय-परनति, तुम सुबोधमें नहिं छानी। तातैं दौलदास उरआशा, प्रगट करो निजरससानी ॥ हे जिन० ॥ ५ ॥

(३४)

हो तुम त्रिभुवनतारी हो जिनजी, मो भव-जलधि क्यों न तारत हो? हो तुम० ॥ टेक ॥ अंजन[2] कियो निरंजन[3] तातैं, अधम-उधार-विरद धारत

---

१ जन्मजरामरनरूपी रोग। २ अंजनचोरको। ३ कर्मरहित।

हो। हरि[1] वराह[2] मर्कट[3] झट तारे, मेरी बेर ढील पारत हो॥ हो तुम०॥ १॥ यों वहु अधम उधारे तुम तो, मै कहा अधम न? मुहि टारत हो। तुमको करनो परत न कछु शिव,-पथ-लगाय भव्यनि सारत हो॥ हो तुम०॥ २॥ तुम छवि निरखत सहज टरै अघ, गुण चिंतत विधि-रज झारत हो। दौल न और चहै मो दीजै, जैसी आप भावना-रत हो। हो तुम०॥ ३॥

(३५)

और अबै न कुदेव सुहावै, जिन थांके चरनन-रति जोरी॥ और०॥ टेक॥ काम-कोह-वश गहैं असन असि, अंकें[4] निशंक धरैं तिय गोरी। औरनके किम भाव सुधारैं?, आप कुभाव-भार-धर-धोरी॥ और०॥१॥ तुम विनमोह अकोहें[5]-छोहबिन, छके शांतरसपीय कटोरी। तुम तजं[6] सेय अमेय[7] भरी जो, विपदा जानत हो सब

१ सिंह। २ सूअर। ३ बंदर। ४ गोदमें। ५ क्रोधरहित। ६ तुम्हें छोडकर जो मैं दूसरेकी सेवा करके। ७ अपरिमाण।

मोरी ॥ और० ॥२॥ तुम तज तिन्हें भजै शठ जो सो, दाख न चाखत खात निमोरी। हे जगतार! उधार दौलको, निकट विकट-भव-जलधि[1] हिलोरी ॥ और० ॥ ३ ॥

(३६)

प्रभु थारी आज महिमा जानी, प्रभुथारी ॥ ॥ टेक ॥ अबलों मोहमहामद पिय मैं, तुमरी सुध विसरानी। भागजोग तुम शांति छवी लखि, जडतानींद विलानी ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ जग-विजयी दुखदाय रागरुष, तुम तिनकी थिति भानी। शांतिसुधासागर गुनआगर, परम विराग विज्ञानी ॥ प्रभु० ॥२॥ समवसरन अतिशय कमलाजुत, पै निरग्रंथ निदानी। कोह-विना दुठमोहविदारक, त्रिभुवनपूज्य अमानी ॥ प्रभु० ॥३॥ एकस्वरूप सकलज्ञेयाकृत, जगउदास जगज्ञानी। शत्रुमित्र सबमें तुम सम हो, जो दुखसुखफलथानी ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ परम ब्रह्मचारी है प्यारी, तुम हेरी

१ भवसमुद्रकी लहरें।

शिवरानी। है कृतकृत्य तदपि तुम शिवमग, उपदेशक-अगवानी। प्रभु० ॥५॥ भई कृपा तुमरी तुममैं यह, भक्ति सु मुक्तिनिशानी। है दयाल अब देहु दौलको, जो तुमने कृति ठानी ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥

(३७)

तुम सुनियो श्रीजिनराजा! अरज इक मेरीजी ॥ तुम० ॥ टेक ॥ तुम विनहेत-जगतउपकारी वसुकर्मन मोहि कियो दुखारी, ज्ञानादिक निधि हरी हमारी, द्यावो सो ममकेरीजी ॥ तुम० ॥१॥ मैं जिन! भूलि तुमहिं सँग[1] लाग्यो, तिनकृत करन विषयरसपाग्यो, तातैं जन्मजरादव-दाग्यो करि समता मम नेरीजी ॥ तुम० ॥२॥ वे अनेक प्रभु मैं जु अकेला, चहुंगतिविपतिमाहि मोहि पेला, भाग जगे तुमसे भयो भेला, तुम हो न्याय-निवेरी जी ॥ तुम० ॥ ३ ॥ तुम दयाल बेहाल हमारो, जगतपाल निज बिरद सँभारो, ढील

1 कर्मोंके संग।

न कीजै वेगि निवारो, दौलतणी भवफरी जी ॥ तुम० ॥ ४ ॥

(३८)

जय वीर जिनवीर जिनवीर जिनचंद, कलुष-निकंद मुनिहृदसुखकंद ॥जय०॥टेक॥ सिद्धारथ नंद त्रिभुवनको दिनेंद चंद, जावचकिरन भ्रम-तिमिरनिकंद । जय० ॥ १ ॥ जाके पद अर-विंद सेवत सुरेंद्र वृंद, जाके गुन रटत फटत भव-फंद ॥ जय० ॥ २ ॥ जाकी शांतमुद्रा निरखत हरखत रिखि, जाके अनुभवत लहत चिदानंद ॥ जय०॥३॥ जाके घातिकर्म विघटत प्रघटत भये, अनंतदरस-बोध-वीरज-अनंद ॥जय० ॥४ लोकालोकज्ञाता पै स्वभावरत राता प्रभु, जगको कुशल-दाता त्रातापै अद्वंद ॥ जय० ॥ ५ ॥ जाकी महिमा अपार गणी न सकें उचार, दौलत नमत सुख चहत अमंद ॥ जय० ॥ ६ ॥

(३९)

जय श्रीरिषभ जिनंदा, नासतो करौ स्वामी मेरे

दुखदंदा ॥टेक॥ मातु मरुदेवी प्यारे, पिता नाभिके दुलारे, वंश तो इक्ष्वाक जैसैं नभ वीच चंदा ॥ जय० ॥ १ ॥ कनक वरन तन, मोहत भविक जन, रवि शशि कोटि लाजै, लाजै मकरंदा ॥ ॥ जय० ॥२॥ दोष तो अठारा नासे, गुन छियालीस भासे, अष्टकर्मकाट स्वामी, भये निरफंदा ॥ जय० ॥ ३ ॥ चार ज्ञानधारी गनी, पार नहिं पावै मुनी, दौलत नमत सुख चाहत अमंदा ॥ ॥ जय० ॥ ४ ॥

(४०)

सुधि लीज्योजी म्हारी, मोहि भवदुखदुखिया जानके, सुधि लीज्योजी म्हारी ॥टेक॥ तीनलोक स्वामी नामी तुम, त्रिभुवनके दुखहारी। गनधरादि तुम सरन लई लखि, लीनी सरन तिहारी ॥ सुधि० ॥१॥ जो विधि अरी करी हमरी गति, सो तुम जानत सारी। यादकिये दुख होत हिये ज्यों, लागत कोट कटारी ॥ सुधि० ॥ २ ॥ लब्धिअपर्यापत

१ कामदेव।

निगोदमें, एक उसासमझारी । जनममरन नव दुगुन[1] विथाकी, बात न जात उचारी ॥ सुधि० ॥ ३ ॥ भू[2] जल ज्वलन[3] पवन प्रत्येक तरु, विकल त्रयतनधारी । पंचेंद्री पशुनारकनरसुर, विपति भरी भयकारी ॥ सुधि० ॥४॥ मोहमहारिपु नेक न सुखमैं, होन दई सुधि थारी । सो दुठ मंद भयो भागनतैं, पाये तुम जगतारी ॥ सुधि० ॥ ५ ॥ यदपि विरागि तदपि तुम शिवमग, सहज प्रगट करतारी । ज्यों रविकिरन सहज मगदर्शक, यह निमित्त अनिवारी ॥ सुधि० ॥६॥ नाग छाग गज बाघ भीलदुठ, तारे अधम उधारी । सीस नवाय पुकारत अब तो दौल अधमकी बारी ॥ ॥ सुधि० ॥७॥

(४१)

जाऊं कहां तज शरन तिहारे, जाऊं ॥ टेक ॥ चूक अनादितणी या हमरी, माफ करो करुणा गुणधारे ॥ जाऊं० ॥ १ ॥ डूबत हों भवसागरमें अब, तुम विन को मुहि बार निकारे । तुम सम

१ अठरह । २ पृथिवीकाय । ३ अग्निकाय ।

देव अवर नहिं कोई, तातैं हम यह हाथ पसारे ॥ जाऊं० ॥ २ ॥ मोसम अधम अनेक उधारे, वरनत हैं श्रुत शास्त्र अपारे। दौलतको भवपार करो अब, आयो है शरनागत थारे ॥जाऊं॥३॥

३। भागचंदकृत पद।

(४२)

वीतराग जिन महिमा थारी, वरन सकै को जन त्रिभुवनमैं ॥ वीतराग० ॥ टेक ॥ तुमरे अतट चतुष्टय प्रगट्यो, निःशेषावरनच्छय छिनमैं। मेघपटल विघटनतैं प्रगटत, जिम मार्तंडप्रकाश[1] गगनमें ॥ वीतराग ॥ १ ॥ अप्रमेय ज्ञेयनके ज्ञायक, नहिं परिणमत तदपि ज्ञेयनमें। देखत नयन अनेकरूप जिम, मिलत नहीं पुनि निज विषयनमैं ॥ वीतराग० ॥ २ ॥ निज उपयोग आपणे स्वामी, गाल दियां निश्चलआपनमें। है असमर्थ वाह्य निकसनको, लवण घुला जैसैं जीवनमैं[2] ॥ वीतराग० ॥ ३ ॥ तुमरे भक्त परम

१ सूर्यका प्रकाश २ जलमें।

सुख पावत, परत अभक्त अनंत दुखनमैं। जैसो मुख देखो तैसा है, भासत जिम निर्मल दरपनमैं ॥ वीतराग० ॥ ४ ॥ तुम कषाय विन परम शांत हो, तदपि दक्ष[1] कर्मारिहतनमैं[2]। जैमैं अति शीतल तुषार[3] पुनि, जार देत द्रुमभारैं[4] गंहनमैं[5]॥ वीतराग०॥५॥ अव तुम रूप जथारथ पायो, अव इच्छा नहिं अन कुमतनमैं। भागचन्द अमिरत रस पीकर, फिर को चाहै विष निज मनमैं ॥ वीतराग० ॥ ६ ॥

४३। राग जंगला।

तुम गुनमनिनिधि हो अरहंत। तुम० ॥१॥ ॥ टेक ॥ पार न पावत तुमरो गनपति, चार ज्ञानधर संत ॥ तुम गुन० ॥ १ ॥ ज्ञानकोष सब दोषरहित तुम, अलख अमूर्ति अचिंत ॥ तुम गुन० ॥ २ ॥ हरिगन अरचत तुमपद-वारिज, परमेष्ठी भगवंत ॥ तुम गुन० ॥ ३ ॥ भागचंदके

१ चतुर। २ कर्मशत्रुओंके मारनेमें। ३ हिम—बरफ। ४ वृक्षोंका समूह। ५ वनमें।

घटमंदिरमैं, बसहु सदा जयवंत ॥ तुमगुन०॥४॥

४४। राग जंगला।

म्हांकै जिनमूरति हृदय बसी बसी ॥ टेक ॥ यद्यपि करुणारसमय तद्यपि, मोहशत्रुहन-असी असी ॥ म्हांकै० ॥ १ ॥ भामंडल ताको अति निर्मल, निष्कलंक जिम ससी ससी ॥ म्हांकै० ॥ २ ॥ लखत होत अति शीतलमति जिम, सुधाजलधिमैं धसी धसी ॥ म्हांकै० ॥ ३ ॥ भागचंद जज ध्यानमंत्रसों, ममता नागन नसी नसी ॥ म्हांकै ॥ ४ ॥

४५। राग सोरठ।

इष्ट जिनकेवली, म्हांकै इष्टजन केवली, जिन सकल कलिमल दली ॥ टेक ॥ शांत छबि जिनकी विमल जिम, चंद्रदुति मंडली। संत-जन-मन[1]-केकि-तर्पन, सघन घनपटली[2] ॥ इष्टजिन० ॥ १ ॥ स्यात्पदांकित[3] धुनि सु जिनकी, बंदनतैं

१ मानरूपी मयूरको खुश करनेके लिये। २ मेघपटल। ३ स्याद्वादसे चिह्नित।

निकली। वस्तु तत्त्वप्रकाशिनी जिम, भानु किरनावली ॥ इष्टजिन० ॥ २ ॥ जास-पद-अर-विंदकी[1], मकरंद[2] अति निरमली। ताहि घ्रान करै[3] नमित हरि, मुकुटद्युतिमनि, अली ॥ इष्टजिन० ॥ ३ ॥ जाहि जजत विराग उपजत, मोहनिद्रा टली। ज्ञानलोचनतैं प्रगट लखि, धरत शिववटगली ॥ इष्टजिन० ॥ ४ ॥ जासु गुन नहिं पार पावत, बुद्धिरिद्धिवली[4]। भागचंद सु अल्पमति जन, की तहां क्या चली ॥ इष्टजिन० ॥ ५ ॥

४६ । राग सोरठ।

स्वामी मोहि अपनो जान तारो, या विनती अब चित धारो ॥ टेक ॥ जगत उजागर करुना-सागर, नागर नाम तिहारो ॥ स्वामी० ॥ १ ॥ भव अटवीमें भटकत भटकत, अब मैं अति ही हार्‍यो ॥ स्वामी० ॥ २ ॥ भागचन्द स्वच्छंद ज्ञानमय, सुख अनंत विस्तारो ॥ स्वामी० ॥ ३ ॥

---

१ चरण कमलकी। २ सुगंधित रज। ३ उसको सूंघते हैं नमित हुये इंद्रोंके मुकुटोंके मणि रूपी भँवरे। ४ बुद्धिरिद्धिके धारक।

४७ । राग सोरठ ।

स्वामीजी तुम गुन अपरंपार, चंद्रोज्वल अविकार । स्वामी जी० ॥ टेक ॥ जबै तुम गर्भमाहि आये, तबै सब सुरगन मिल धाये, रतन नगरीमैं बरसाये, अमित अमोघ सु ढार ॥ स्वामी जी० ॥ १ ॥ जनम प्रभु तुमने जब लीना, न्हवन मंदरपै हरि कीना, भक्ति कर सची सहित भीना, बोला जयजयकार ॥ स्वामीजी० ॥ २ ॥ जगत जब छनभंगुर जाना, लियो तब नगनवृती बाना, स्तवन लोकांतिकसुर ठाना-त्याग राजको भार ॥ स्वामीजी० ॥ ३ ॥ घातिया प्रकति जबै नासी, चराचर वस्तु सबै भासी, धर्मकी वृष्टि करी खासी, केवलज्ञान-भँडार ॥ स्वामीजी० ॥ ४ ॥ अघाती प्रकृति सु विघटाई, मुक्तिकांता तब ही पाई, निराकुल आनँद असहाई, तीनलोकसरदार । स्वामीजी० ॥ ५ ॥ पार गनधर हू नहिं पावै, कहां लगि भागचंद गावै, तुमारे चरनांबुज

ध्यावै, भवसागरसों तार ॥ स्वामी जी० ॥ ६ ॥

(४८) राग धनाश्री।

प्रभु थांको लखि मम चित हरषायो ॥ टेक ॥ सुंदर चिंतारतन अमोलक, रंक पुरष जिम पायो ॥ प्रभु थाँको० ॥ १ ॥ निर्मल रूप भयो अब मेरो, भक्ति नदी जल न्हायो ॥ प्रभु थाँको० ॥ २ ॥ भागचंद अब मम करतलमैं, अविचल शिवथल आयो ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥

(४९) रागमल्हार।

प्रभु म्हाकी सुधि, करुना करि लीजै ॥ टेक ॥ मेरे इक अवलं-वन तुम ही, अब न विलंब करीजै ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ अन्य कुदेव तजे सब मैने, तिनतैं निजगुन छीजै ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ भागचंद तुम सरन लियो है, अब निश्चल पद दीजै ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥

(५०) राग कहरवा-कलिंगड़ा।

केवलजोति सु जागीजी, जब श्रीजिनवरकै ॥ केवल० ॥ टेक ॥ लोकालोकविलोकत

जैसैं, हस्तामल बडभागीजी ॥ केवल० ॥ १ ॥ हरिचूडामणिशिखा सहज ही. नमत भूमितैं लागीजी ॥ केवल० ॥ २ ॥ समवसरन-रचना सुर कीनी, देखत भ्रम जन त्यागीजी ॥ केवल० ॥ ३ ॥ भक्तिसहित अरचा तब कीनी, परम-धरमअनुरागीजी ॥ केवल० ॥ ४ ॥ दिव्य ध्वनि सुनि सभा दुवादश, आनंदरसमैं पागी-जी ॥ केवल० ॥ ५ ॥ भागचंद प्रभुभक्ति चहत है, और कछू नाहिं मांगोजी ॥ केवल० ॥६॥

(५१) ख्याल ।

विन काम ध्यान मुद्राभिराम तुम हो, जगना-यकजी ॥टेक॥ यद्यपि वीतरागमय तद्यपि, हो शिवदायकजी ॥ विन काम० ॥ १ ॥ रागीदेव आपही दुखिया, सो क्या लायकजी ॥ विन काम० ॥२॥ दुर्जय मोहशत्रु हनवेको, तुम वच शायकजी ॥ विनकाम० ॥३॥ तुम भवमोचन ज्ञान सुलोचन, केवलक्षायकजी ॥ विनकाम० ॥४॥ भागचंद भागनतैं प्रापति, तुम सब ज्ञायकजी ॥ बिनकाम० ॥ ५ ॥

५२। भावना।

प्रभूपै यह वरदान सुपाऊं, फिर जगकीच बीच नहि आऊं ॥ टेक ॥ जल गंधाक्षत, पुष्प सु मोदक, दीप धूप फल सुंदर ल्याऊं। आनँद जनक-कनक-भाजन-धरि, अर्घ अनर्घ बनाय चढाऊं ॥ प्रभूपै० ॥१॥ आगमके अभ्यासमांहि पुनि, चित एकाग्र सदीन लगाऊं। संतनिकी संगति तजिकैं मैं, अंत कहूं इक छिन नहिं जाऊं ॥ प्रभूपै० ॥२॥ दोषवादमैं मौन रहूं फिर, पुण्य-पुरुषगुन निशदिन गाऊं। मिष्ट स्पष्ट सबहिसों भाषों, वीतराग निज भाव बढाऊं ॥ प्रभूपै० ॥३॥ बाहिजदृष्टि खैंचके अंतर, परमानंद स्व-रूप लखाऊं। भागचंद शिव प्राप्त न जोलों, तोलों तुम चरणांबुज ध्याऊं ॥ प्रभूपै० ॥४॥

(५३)

मैं तुम शरनलियो, तुम सांचे प्रभु अरहंत। मैं तुम० ॥ टेक ॥ तुमरे दर्शन-ज्ञान-मुकरमैं सकल ज्ञेय झलकंत। अतुल निराकुल सुख आ-

१ यातो अपना विरद भूल जावो या मेरी अर्ज सुनलो।

स्वादन, बीरज अतुल अनंत ॥ मैं तुम० ॥१॥ रागरोष-विभाव नाश भए, परम समरसी संत। पद देवाधिदेव पाए क्रिय, दोष क्षुधादिक अंत॥ मैं तुम०॥ २॥ भूषण वसन शस्त्र कामादिक, करनविकार अनंत। तिन विन तुम परमौदारिक तन, मुद्रा सम शोभंत ॥ मैं तुम० ॥ ३॥ तुम बानीतैं धर्मतीर्थ जग,–माहि त्रिकाल चलंत। निज कल्याण-हेतु इंद्रादिक, तुम पद सेव करंत ॥ मैं तुम० ॥ ४ ॥ तुम गुन अनुभवतैं निज-पर-गुन, दर्शत अगम अचिंत। भागचंद निजरूप प्राप्ति अब, पावैं हम भगवंत॥ मैं तुम० ॥ ५॥

५४। राग दीपचंदी।

कीजिए कृपा मोहि दीजिए स्वपद, मैं तो थांको ही सरन लीनो हे नाथजी ॥ टेक ॥ दूर करो इह मोह शत्रुको, फिरत सदा जो मेरे साथ जी ॥ कीजिए० ॥ १॥ तुमरे वचन कर्मगद मोचन, संजीवन औषधी क्वाथजी ॥ कीजिए०

१। इंद्रियोंके विकार।

॥ २ ॥ तुमरे चरनकमल बुध ध्यावत, नावत हैं पुन निज माथजी ॥ कीजिए० ॥३॥ भाग- चंद मैं दास तिहारो, ठाडो जोडूं जुगल हाथजी ॥ कीजिए ॥ ४ ॥

(५५)

सोई है सांचा महादेव हमारा, जाके नाहीं रागरोष-मद-मोहादिक विस्तारा ॥ सोई है ॥ टेक ॥ जाके अंग न भस्म लिप्त है, नहिं रुंडन- कृतहारा। भूषण व्याल न भाल चंद्र नहिं, शीश- जटा नहिं धारा ॥ सोई है० ॥ १ ॥ जाके गीत न नृत्य न मृत्यु न, बैल तणो न सवारा। नहि कोपीन न काम कामिनी, नहि धन धान्य पसा- रा ॥ सोई है० ॥ २ ॥ सो तो प्रगट समस्त वस्तुको, देखनजाननहारा। भागचंद ताहीको ध्यावत, पूजत वारंवारा ॥ सोई है० ॥ ३ ॥

(५६)

स्वामी रूप अनूप विशाल, मन मेरे बसत। स्वामी ॥ टेक ॥ हरिगन चमरवृंद ढोरत तहँ

उज्वल जेम मराल ॥ स्वामी० ॥ १ ॥ छत्रत्रय ऊपर राजत पुनि, सहित सु मुक्तामाल ॥ स्वामी० ॥२॥ भागचंद ऐसे प्रभुजीको, नावत माथ त्रिकाल ॥ स्वामी० ॥ ३ ॥

(५७)

आनंदाश्रु बहै लोचनतैं, तातैं आनन न्हाया। गद्गद शुद्ध वचन जुत निर्मल, मिष्ट गान सुरगाया ॥ आनंदाश्रु०॥ टेक ॥ भववनमैं बहु भ्रम न कियो तहँ, दुखदावानल ताया। अब तुम भक्ति-सुधारस-वापी,-मैं अवगाह कराया। आनंदाश्रु ॥ १ ॥ तुम वपुदर्पनमें मैंने अब, आत्मस्वरूप लखाया। सर्व कषाय नष्ट भये अब ही, विभ्रम दुष्ट भगाया ॥ आनंदाश्रु ॥२॥ कल्पवृक्ष मैंने निज घरके, आंगन मांझ उगाया। स्वर्ग विमोक्ष विलास वास पुनि, मम करतलमें आया ॥ आनंदाश्रु० ॥ ३ ॥ कलिमलपंक सकल अब मैंने, चितसे दूर बहाया। भागचंद तुम चरणांबुजको, भक्तिसहित सिर नाया ॥ आनंदाश्रु० ॥ ४ ॥

(५८)

मो-सम कौन कुटिल खल कामी, तुमसम कलिमल दलन न नामी ॥ टेक ॥ हिंसक झूठ वाद-मति विचरत, परधन-हर परवनितागामी। लोभितचित्त वित्त नित चाहत, धावत दशदिश करत न खामी ॥ मोसम० ॥ १ ॥ रागी देव बहुत हम जांचे, राचे नहिं, तुम सांचे स्वामी। बांचे श्रुत कामादिक-पोपक, सेये कुगुरु सहित धन धामी ॥ मोसम० ॥ २ ॥ भाग उदयसे मैं प्रभु पाये, वीतराग तुम अंतरजामी। तुम धुनि सुनि परजयमें परगुण, जाने निजगुणचिन विसरामी ॥ मोसम० ॥ ३ ॥ तुमने पशुपक्षी सब तारे, तारे अंजन चोर सुनामी। भागचंद करुणाकर सुखकर, हरना यह भवसंतति लामी ॥ मोसम० ॥ ४ ॥

कवि भूधरदासकृत पद।

५९। रागगौरी।

अजित जिनेश्वर अघहरणं, अघहरणं अशरन शरणं ॥ अजित० ॥ टेक ॥ निरखत नयन

तनक नाहिं त्रिपते, आनँदजनक कनक-वरणं ॥ अजित० ॥ १ ॥ करुणा भीजे वायक जिनके, गणनायक उर आभरणं । मोह महारिपु घायक सायक, सुखदायक दुखछय करणं ॥ अजित० ॥ २ ॥ परमातम प्रभु पतित-उधारन, वारण-लच्छन-पगधरणं । मनमथमारण, विपति विदारण, शिवकारण तारणतरणं ॥ अजित० ॥ ३ ॥ भव-आताप-निकंदन-चंदन, जगवंदन वांछा भरणं । जय जिनराज जगत वंदत जिहँ, जन भूधर वंदत चरणं ॥ अजित० ॥ ४ ॥

६० । राग काफी ।

सीमंधर स्वामी, मैं चरननका चेरा । इस असार संसारमैं कोई, अवर न रच्छक मेरा ॥ सीमंधर० ॥ टेक ॥ लख चौरासी जोनिमैं मैं, फिर फिर कीना फेरा । तुम महिमा जानी नहीं प्रभु, देख्या दुःख घनेरा ॥ सीमंधर० ॥ १ ॥ भाग उदयतैं पाइया

---

१ वचन । २ नाश करनेवाला । ३ बाण-तीर । ४ हाथीका चिन्ह । ५ कामको मारनेवाले । ६ अपार ।

अब, कीजै नाथ निबेरा। वेगि दयाकरि दीजिए मुझ, अविचल-थान-बसेरा[1] ॥ सीमंधर० ॥ २ ॥
नाम लिए अघ[2] ना रहै ज्यों, उगे भान अँधेरा। भूधर चिंता क्या रही जब, समरथ साहिब तेरा ॥ सीमंधर० ॥ ३ ॥

६१। राग धमाल।

देखे देखे जगतके देव राग-रिससों भरे। काहूके सँग कामिनि कोऊ, आयुधवान खरे ॥ ॥ देखे देखे० ॥ टेक ॥ अपने अवगुन आपही हो, प्रगट करैं उघरे। तऊ अबूझन बूझहि देखो, जनमृग-भोरैंप[3] रे ॥ देखे देखे० ॥ १ ॥ आप भिखारी है किनही हो, काके दरिद हरे। चढ़ि पाथरकी नावपै कोई, सुनिए नाहिं तरे ॥ देखे० ॥ २ ॥ गुन अनंत जा देव में औ, ठारह दोष टरे। भूधर ता-प्रति भावसों दोऊं, कर निज सीस धरे ॥ देखे देखे० ॥ ३ ॥

६२। राग ख्याल कानडी।

एजी मोहि तारिये शांति जिनंद ॥ एजी० ॥

---

१ मोक्ष स्थान। २ पाप। ३ भोलापन।

॥ टेक ॥ तारिए तारिए अधम उधारिए, उधारिए, तुम करुनाके कंद ॥ एजी० ॥ १ ॥ हस्तिनापुर जनमें जग जानै, विश्वसेननृपनंद। एजी० ॥ २ ॥ धनि वह माता एरा देवी, जिन जाए जगचंद ॥ एजी० ॥ ३ ॥ भूधर विनवै दूर करो प्रभु, सेवकके भवदंद ॥ एजी० ॥ ४ ॥

६३ । राग धनासरी ।

शेष सुरेश नरेश रटैं तोहि, पार न कोई पावै जू ॥ शेष० ॥ टेक ॥ कांपै नपत व्योमें विलसत सौं, को तारे गिन लावै जू ॥ शेष० ॥ १ ॥ कौन सुजान मेघ-बूंदनकी, संख्या समुझ सुनावै जू ॥ शेष० ॥ २ ॥ भूधर सुजस-गीत-संपूरन गणपैति भी नाहिं गावै जू ॥ शेष० ॥ ३ ॥

६४ । राग रामकली ।

आदिपुरुष मेरी आस भरो जी । अवगुन मेरे माफ करो जी ॥ आदि० ॥ टेक ॥ दीनदयाल विरद विसरो जी, कै विनती मोरी श्रवण

१ किससे । २ आकाश । ३ विलसतोंसे । ४ गणधर ।

घरो जी ॥ आदि० ॥ १ ॥ काल अनादि वस्यो जगमाहीं, तुमसे जगपति जाने नाहीं। पाँय न पूजे अंतरजामी, यह अपराध क्षमाकर स्वामी ॥ आदि० ॥ २ ॥ भक्तिप्रसाद परम पद है है, बंधी बंधदशा मिटि जैहै। तब न करों तेरी फिर पूजा, यह अपराध छमो प्रभु दूजा ॥ ॥ आदि० ॥ ३ ॥ भूधर दोष किया बकसावै[1], अरु आगैंको लारैं लावै। देखो सेवककी ढिठं[2]-वाई, गरुवे साहिबसौं[3] बनियाई[4] ॥ आदि० ॥ ॥ ४ ॥

६५ । राग ख्याल करवा ।

म्हे तो थांकी आज महिमा जानी, अबलौं उरनहिं आनी ॥ म्हेतो० ॥ टेक ॥ काहेको भव-वनमें भ्रमते, क्यों होते दुखथानी ॥ म्हेतो० ॥ १ ॥ नामप्रताप तिरे अंजनसे, कीचकसे अभिमानी ॥ म्हेतो० ॥ २ ॥ ऐसी साख बहुत सुनियत है,

१ माफ कराता है। २ धीटता। ३ बडेभारी मालिकसे भी। ४ बनियापन। करता है।

जैनपुराण बखानी ॥ म्हेतो० ॥ ३ ॥ भूधरको सेवा वर दीजै, मैं जाचक तुम दानी ॥ म्हेतो० ॥ ४ ॥

६६ । राग सोरठ ।

स्वामीजी सांची सरन तिहारी ॥ स्वामीजी० ॥ टेक ॥ समरथ शांत सकल गुन पूरे, भयो भरोसो भारी ॥ स्वामीजी० ॥ १ ॥ जनमजरा जगवैरी जीते, टेव मरनकी टारी । हमहूको अजरामर करियो, भरियो आस हमारी ॥ स्वामीजी० ॥ २ ॥ जनमैं मरैं धरैं तन फिर फिर, सो साहिब संसारी । भूधर परदालिद क्यों दलि है, जो है आप भिखारी ॥ स्वामीजी० ॥ ३ ॥

६७ । राग ख्याल ।

नैननिको बान परी दर्शनकी ॥ टेक ॥ जिनमुखचंद चकोर चित्त मुझ, ऐसी प्रीति करी ॥ नैननिको० ॥ १ ॥ अवर अदेवनके चितवनकी अब चितचाह टरी । ज्यों सब धूलि दबै दिशि दिशिकी, लागत मेघझरी ॥ नैननिको० ॥ २ ॥ छबी समाय रही लोचनमें, विसरत नाहिं

घरी । भूधर कहैं यह टेव रहो थिर, जनम जनम हमरी ॥ नैननिको० ॥ ३ ॥

द्यानतरायकृत पद ।

(६८)

अब हम नेमिजीकी सरन । अब० ॥ टेक ॥ और ठौर न मन लगत है, छाडि प्रभुके चरन ॥ अब० ॥ १ ॥ सकल भवि-अघ-दहन-वारिद[1], विरद तारन तरन । इंद चंद फनिंद ध्यावैं, पाय सुख, दुखहरन ॥ अब० ॥ २ ॥ भरम तमहरतरनिदीपति[2], करमगन छयकरन । गणधरादि सुरादि जाके, गुन सकत नहिं वरन ॥ अब० ॥ ३ ॥ जा समान त्रिलोकमैं हम, सुन्यो अवर न करन[3] । दास द्यानत दयानिधि प्रभु, क्यों तजैंगे परन[4] ? ॥ अब० ॥ ४ ॥

६९ । राग काफी ।

तू जिनवर स्वामी मेरा, मैं सेवक प्रभु हों

---

१ भव्य जीवोंके अघरूपी अग्निके लिये मेघ । २ भ्रमरूपी अंधकारको नाश करनेकेलिये सूर्यके प्रकाशकी समान । ३ कानोंसे । ४ अपना प्रण वा प्रतिज्ञा ।

तेरा ॥टेक॥ तुम सुमरनविन मैं बहु कीना, नाना-
जोनि-बसेरा । भाग उदय तुम दर्शन पायो,
पाप भज्यो तजि खेरा ॥ तू जिनवर० ॥ १ ॥
तुम देवाधिदेव परमेश्वर, दीजे दान सवेरा । जो
तुम मोख देत नहिं हमको, कहाँ जाँय किंह डेरा
॥ तू जिनवर० ॥ २ ॥ मात तात तू ही वड
भ्राता, तोसों प्रेम घनेरा । द्यानत तार निकार
जगततैं, फेर न ह्वै भवफेरा ॥ तू जिनवर० ॥ ३ ॥

७० । राग सोरठ कडखा ।

रुल्यो चिरकाल, जगजाल चहुंगतिविषै, आज
जिनराज तुम सरन आयो । रुल्यो ॥टेक॥ सह्यो
दुख घोर, नहिं छोर आवै कहत, तुमसों कछु
छिप्यो नहिं तुम बतायो ॥ रुल्यो० ॥ १ ॥ तुही
संसार-तारक नहीं दूसरो, ऐसो मुहि भेद न
किन्हीं सुनायो ॥ रुल्यो० ॥ २ ॥ सकल सुर
असुर नरनाथ वंदत चरन, नाभिनंदन निपुन
मुनिन ध्यायो ॥ रुल्यो० ॥ ३ ॥ तुही अरहंत
भगवंत गुणवंत प्रभु, खुले मुझ भाग अब दरश

पायो ॥ रुल्यो० ॥ ४ ॥ सिद्ध हों, शुद्ध हों बुद्ध अविरुद्ध हों, ईश जगदीश बहु गुणनि गायो ॥ रुल्यो० ॥५॥ सर्व चिंता गई, बुद्धि निर्मल भई, जबहि चित जुगल चरनन लगायो ॥ रुल्यो० ॥ ६ ॥ भयो निहचिंत द्यानत चरन-शर्नगहि, तार अब नाथ ! तेरो कहायो ॥ रुल्यो० ॥ ७ ॥

७१ । राग रामकली ।

प्रभु तुम कहियत दीनदयाल ॥ प्रभुतुम० ॥ टेक ॥ आपन जाय मुकतिमें बैठे, हम जु रुलत जगजाल ॥ प्रभुतुम०॥१॥ तुमरो नाम जपैं हम नीके, मनवच तीनों काल । तुम तौ हमको कछू देत नहिं, हमरो कौन हवाल ॥ प्रभुतुम० ॥२॥ बुरे भले हम भगत तिहारे, जानत हो हम चाल। अवर कछू नहिं यह चाहत है, रागरोपको टाल ॥ प्रभुतुम० ॥ ३ ॥ हमसों चूक परी सो बकसो[1], तुम तो कृपाविशाल । द्यानत एकबार प्रभु जगतैं, हमको लेहु निकाल ॥ प्रभुतुम० ॥ ४ ॥

१ । माफ करो ।

७२। राग ख्याल।

मैं नेमिजीका बंदा मैं साहिबजीका बंदा॥ मैं नेमिजी०॥ टेक॥ नैनचकोर दरसको तरसै, स्वामी पूनमचंदा॥ मैं नेमिजीका०॥ १॥ छहों दरबमें सार बतायो, आतम आनँदकंदा। ताको अनुभव नितप्रति करते, नासै सब दुख दंदा॥ ॥ मैं नेमिजीका० ॥२॥ देत धरम उपदेश भविक प्रति, इच्छा नाहिं करंदा। रागरोष मद मोह नहीं नहिं, क्रोध लोभ छलछंदा॥ मैं नेमिजीका० ॥३॥ जाको जस कहि सकै न क्योंही, इंद फनिंद नरिंदा। सुमरन भजन सार है द्यानत, अवर बात सब फंदा[1]॥ मैं नेमिजीका०॥ ४॥

(७३)

बंदों नेमि उदासी, मद मारवेको। बंदों०॥टेक॥ रजमतिसी तिन नारी छारी, जाय भए बनवासी॥ बंदों०॥ १॥ हय गय रथ पायक सब छांडे, तोरी ममता फांसी। पंच महाव्रत दुद्धर धारे

१ 'धंदा' ऐसा भी पाठ है।

राखी प्रकृति पचासी ॥ वंदों० ॥ २॥ जाके दरशन ज्ञान विराजत, लहि वीरज सुखरासी । जाकों वंदत त्रिभुवननायक, लोकालोक-प्रकाशी ॥ वंदों० ॥३॥ सिद्ध शुद्ध पर-मातम राजैं, अविचल-थान-निवासी । द्यानत मन-अलि प्रभुपद-पंकज,—रमत रमत अघ जासी ॥ वंदों० ॥४॥

(७६)

मेरी वेर कहा ढील करी जी ॥ मेरीवेर० ॥ टेक ॥ सूलीसों सिंहासन कीनो. सेठसुदर्शनविपतिहरी जी ॥ मेरीवेर०॥१॥ सीतासती अगनिमें पैठी, पावक नीर करी सगरीजी । वारिषेण पै खडग चलायो.फूलमाल कीनी सुथरीजी ॥ मेरीवेर०॥२॥ धन्य[1] वापी पर्‌यो निकार्‌यो, ताघर ऋद्धि अनेक भरीजी । सिरीपाल सागरतैं तार्‌यो राजभोगकर मुकति वरीजी ॥ मेरीवेर० ॥ ३ ॥ सांपकियो फूलनकी माला, सो[2]मापर तुम दयाधरीजी । द्यानत मैं कछू जांचत नाहीं, कर वैराग्यदशा हमरीजी ॥ मेरीवेर० ॥ ४ ॥

---

१ धन्यकुमार । २ सोमा सतीपर

(७५)

हमको प्रभु श्रीपास सहाय ॥हमको०॥ जाको दर्शन करते जबहीं, पातक जाय पलाय ॥ हमको० ॥ जाको इंद फनिंद चक्रधर, वंदै सीस नवाय.। सोई स्वामी अंतर-जामी, भव्यनिकों सुखदाय ॥ हमको० ॥ १ ॥ जाके चार घातिया बीते, दोष जु गए विलाय। सहित अनंत चतुष्टय साहिब, महिमा कही न जाय ॥ हमको० ॥ २ ॥ तकियो बडो मिल्यो है हमको, गहि रहिये मनलाय। द्यानत अवसर वीत जायगो, फेर न कछू उपाय ॥ हमको ० ॥ ४ ॥

(७६)

ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी नेमजी ! तुमही हो ज्ञानी ॥ ज्ञानी० ॥ टेक ॥ तुम्ही देव गुरु तुम्ही हमारे, सकल दरब जानी ॥ ज्ञानी०॥ १ ॥ तुम समान कोउ देव न देख्या, तीनभवन छानी। आप तरे भविजीवनितारे, ममता नहिं आनी ॥ज्ञानी०

---

१ सहारा आश्रयस्थान अर्थात् दो गांवके बीचमें ठहरनेकी जगह है।

२ ॥ अवर देव सब रागी द्वेषी, कामी कै मानी तुम हो वीतराग अकषायी, तजि राजुल रानी ॥ ज्ञानी०॥ ३ ॥ यह संसार दुःख ज्वाला तजि, भये मुकति थानी । द्यानत दास निकास जगतैं हम गरीब प्रानी ॥ ज्ञानी० ॥ ४ ॥

(७७)

देख्या माने नेमिजी प्यारा ॥ देख्या०॥टेक॥ मूरति ऊपर करों निछावर, तन धन जोबन सारा ॥ देख्या० ॥ १ ॥ जाके नखकी शोभा आगैं, कोटि-कामछवि डारों वारा । कोटि-संख्य रविचंद छिपत हैं, वपुकी द्युति है अपरंपारा ॥ देख्या० ॥२॥ जिनके वचन सुने जिन भविजन, तजि घर मुनिवरका व्रत धारा । जाको जस इंद्रादिक गावैं, पावैं सुख नासैं दुख भारा । देख्या० ॥ ३ ॥ जाके केवलज्ञान विराजत, लोकालोक प्रकाशनहारा । चरण गहेकी लाज निबाहो, प्रभुजी द्यानत भगत तिहारा॥ देख्या० ॥ ४ ॥

१ करोडों कामदेवोंकी सुंदरता ।

(७८)

प्रभु अब हमको होहु सहाय ॥ प्रभु० ॥टेक॥ तुम बिन हम बहु जुग दुख पायो, अब तव परसे पांय॥प्रभु०॥१॥तीनलोकमें नाम तिहारो, है सबको सुखदाय । सोई नाम सदा हम गावैं, शीघ्र जाहु पतियाय ॥ प्रभु०॥२॥ हम तो नाथ कहाए तेरे, जावैं कहां सु बताय । बांह गहेकी लाज निवाहो, जो हो त्रिभुवनराय ॥ प्रभु०॥३॥ द्यानत सेवकने प्रभु इतनी, विनती करी बनाय। दीनदयाल दया धर मनमें, जमतैं लेहु बचाय॥ प्रभु० ॥ ४ ॥

(७९)

प्रभु मैं किहविधि थुति करुं तेरी ॥प्रभु०॥टेक॥ गणधर कहत पार नाहिं पावत, कहा बुद्धि है मेरी ॥प्रभु० ॥ १ ॥ शक्र[1]-जन्मधर सहस जीभकर, तुम जस होत न पूरा । एकजीभ कैसैं गुण गावै उल्लू[2] कहै किम सूरा[3] ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ चमर छत्र

1 इन्द्रका जन्म धरकर । २ उल्लू पक्षी । ३ सूरज ।

सिंहासन वरनों, ये गुण तुमतैं न्यारे। तुमगुण कहन वचनबल नाही, नैन गिनैं किम तारे॥ प्रभु०॥ ३॥

(८०)

दरसन तेरा मन भावै। दरसन०॥ टेक॥ तुमकों देखि तृपति नहिं सुरपति, नैन हजार बनावै॥दरसन०॥१॥ समवसरनमें निरखै सचि पति[2], जीभसहस गुनगावै। क्रोड़ कामको रूप छिपत है, तेरो दरश सुहावै॥ दरसन०॥२॥ आंख लगै अंतर है तो भी, आनँद उर न समावै। ना जानों कितनों सुख हरिको[3] जो नहिं पलक लगावै॥ दरशन०॥ ३॥ पाप नाशकी कौन बात है, द्यानत सम्यक् पावै। आसन ध्यान अनूपम स्वामी। देखे ही बनि आवैं॥ दरशन०॥ ४॥

(८१)

हो स्वामी जगत जलधितैं तारो॥ होस्वामी०

१ इस पदमें एक कडी रह गई दिखती है। २ इन्द्र। ३ इन्द्रको।

॥टेक॥ मोहमच्छ अरु कामकच्छतैं, लोभलहरतैं उबारो ॥ हो स्वामी० ॥ १ ॥ खेद खारजल, दुखदावानल, भरमभँवरभय टारो ॥ होस्वामी० ॥२॥ द्यानत वारबार यों भाषै, तूही तारनहारो ॥ हो स्वामी० ॥ ३ ॥

८२ । राग वसंत ।

मोहि तारो हो देवाधिदेव, मैं मनवचतनकरि करों सेव॥टेक॥तुम दीनदयाल अनाथ-नाथ,हमहूको राखहु आप साथ ॥मोहि०॥१॥ यह मारवाड संसार देश, तुम चरणकल्पतरु हरकलेश ॥ मोहि० ॥ २ ॥ तुम नाम रसायन जीव पीय, द्यानत अजरामर[1] भवतरीय ॥ मोहि० ॥ ३ ॥

८३ । राग वसंत ।

तुम ज्ञानविभव फूली वसंत, यह मन मधुकर सुखसों रमंत ॥ तुम० ॥ टेक ॥ दिन बडे भए वैरागभाव, मिथ्यामतरजनीको घटाव । तुम० ॥ १ ॥ बहु फूली फैली सुरुचि बेल, ज्ञाताजन

१ अजर अमर होजाता है ।

समता संग केलि ॥ तुम० ॥ २ ॥ द्यानत वानी पिकमधुररूप, सुरनर पशु आनँद घन-स्वरूप ॥ तुम० ॥ ३ ॥

८४। रागगौरी।

देखो भाई श्रीजिनराज विराजैं ॥ देखो० ॥ टेक ॥ कंचन मणिमय सिंहपीठपर, अंतरीछ[1] प्रभु छाजैं ॥ देखो० ॥ १ ॥ तीन छत्र त्रिभुवन जस जंपै[2], चौसठि चमर समाजैं। वानी जोजन घोर मोर सुनि, डर अहि-पातक[3] भाजैं ॥देखो० ॥२॥ साढे वारह कौडि दुंदुभी, आदिक बाजे वाजैं। वृक्ष अशोक दिपत भामंडल, कोटि सूर शशि लाजैं ॥ देखो० ॥३॥ पहुपवृष्टि जल मंद पवन कर, इंद्र सेव नित साजैं। प्रभु न बुलावैं द्यानत जावैं, सुरनर पशु निजकाजैं ॥देखो० ४

८५। राग गौरी।

अब मोहि तार लेहु महावीर ॥अब०॥टेक॥ सिद्धारथ-नंदन जगवंदन, पापनिकंदन धीर ॥

१ अधर आकाशमें। २ कहते हैं। ३ पापरूपी सर्प।

अब० ॥ १ ॥ ज्ञानी ध्यानी दानी जानी, बानी गहर गँभीर। मोखके कारन दोष निवारन, रोष विदारन, वीर ॥ अब० ॥ २ ॥ आनँद पूरत समतामूरत, चूरत आपदपीर ॥ बालजती दृढ व्रती समकिती, दुखदावानल-नीर ॥ अब० ॥३॥ गुन अनंत भगवंत अंत नहिं, शशि कपूर हिम हीर। द्यानत एकहु गुन हम पावैं, दूर करै भव-भीर ॥ अब० ॥ ४ ॥

८६। राग गौरी।

जय जय नेमिनाथ परमेश्वर। जय जय० ॥ टेक ॥ उत्तम पुरुषनिको अति दुर्लभ, बालशील धरनेश्वर ॥ जय जय० ॥ १ ॥ सेव करैं नारायण बहु नृप, जय अघतिमिरदिनेश्वर[1]। तुम जस महिमा हम कहा जानै, भाखत सकल सुरेश्वर ॥ जय जय० ॥ २ ॥ इंद्र सबहिं मिल पूजैं ध्यावैं, जय भ्रमतपतनिशेश्वर[2]। गुन अनंत हम अंत न पावैं वरनन सकत गनेश्वर[3] ॥ जय जय० ॥३॥ गण-

१ सूर्य। २ चंद्रमा। ३ गणधर।

धर सकल करैं थुति ठाढे, जय भवजलपोतेश्वर[1]।
द्यानत हम छद्मस्थ[2] कहा कहैं, कहन सकत सर्वेश्वर ॥ जय जय० ॥ ४ ॥

८७। राग गौरी।

श्रीआदिनाथ तारनतरनं ॥ श्री० ॥ टेक ॥
नाभिराय मरुदेवी-नंदन, जनम अयोध्या अघहरनं ॥श्रीआदि० ॥ १ ॥ कलपवृक्ष गये जुगल दुखित भये, करमभूमिविधि सुख-करनं। अपछरनृत्य-मृत्यु लखि चेते, भवतन भोग जोग-धरनं ॥ श्रीआदि० ॥ कायोत्सर्ग छमास धर्यो दिढ, वन-खग-मृग पूजतचरनं। धीरजधारी वरस अहारी, सहस वरस तपआचरनं ॥ श्रीआदि० ॥ करम नास परगासि ज्ञानको, सुरपति कियो समोसरनं। सबजनसुख दे शिवपुर पहुंचे, द्यानत भवितुमपदसरनं ॥ श्रीआदि० ॥ ४ ॥

(८८)

प्रभु तेरी महिमा किह मुख गावैं ॥प्रभु०॥टेक

१ संसाररूपी समुद्रसे तारने वाली जहाजके स्वामी। २ अल्पज्ञानी।

गरभ छमास अगाउ कनकनग[1], सुरपति नगर बनावैं। प्रभु०॥१॥ क्षीर उदधिजल मेरु सिंघासन, मल मल इंद्र न्हुलावैं। दीक्षा समय पालकी बैठो, इंद्र कहार उठावैं। प्रभु तेरी०॥ २॥ समवसरन रिधि ज्ञानमहातम, किंहविधि सर्व बतावैं। आपन जातकी[2] बात कहा, शिववात सुने भवि जावैं॥ प्रभु तेरी०॥ ३॥ पंच कल्यानक थानक स्वामी, जे तुम मन वच ध्यावैं। द्यानत तिनकी कौन कथा है, हम देखे सुख पावैं॥ प्रभु तेरी०॥ ४॥

(८९)

प्रभु तेरी महिमा कहिय न जाय ॥टेक॥ थुति करि सुखी दुखी न निंदातैं, तेरे समता भाय॥ प्रभु तेरी०॥१॥ जो तुम ध्यावैं थिर मनलावैं, सो किंचित् सुखपाय। जो नहिं ध्यावत[3] ताहि करत हो, तीनभुवनको राय॥ प्रभु तेरी०॥ २॥ अंजन चौर महा अपराधी, दियो स्वर्ग पहुंचाय।

---

१ सुवरण और रत्नोंसे नगरीको बनाते हैं। २ अपने जन्मकी।
३ जो तुम्हे न ध्यानकर अपनी आत्माका ध्यान करता है, उसको।

कथानाथ श्रेणिक समदृष्टी, कियो नरक दुखदायं ॥ प्रभु तेरी० ॥ ३ ॥ सेव असेव कहा चलै जियकी, जो तुम करो सुन्याय । द्यानत सेवक-गुन गहि लीजै, दोष सबै छिटकाय । प्रभुतेरी० ॥ ४ ॥

९० । राग विलावल ।

प्रभु तुम सुमरनहीतैं तारे ॥ प्रभु० ॥ टेक ॥ सूकर सिंह न्यौल[1] बानर जे, कहो कौन व्रत धारे ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ सांप जापकर सुरपद पायो, स्वानश्यालभय जारे । भेक[2] बोक[3] गज अमर कहाए, दुरगति भाव विदारे ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ भील चोर मातंग[4] जु गनिका, बहुतनिके दुख टारे । चक्री भरत कहा तप कीनो, लोकालोक निहारे ॥ प्रभु तुम० ॥ ३ ॥ उत्तम मध्यम भेद न कीनों, आये शरन उबारे । द्यानत रागरोष विन स्वामी, पाये भाग हमारे ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥

---

१ न्योला । २ मेंढक । ३ बकरा । ४ चंडाल ।

(९१)

मानुष जनम सफल भयो आज। मानुष०॥ टेक
सीस सफल भयो ईसे[1] नमतही, श्रवन सफल
जिन-वचन समाज ॥ मानुष० ॥ १ ॥ भाल[2]
सफल जु दयाल तिलकतैं, नयन सफल देखे जिन
राज। जीभ सफल जिनवान गानतैं, हाथ सफल
कर पूजन साज ॥ मानुष० ॥ २ ॥ पांय सफल
जिन-भौन-गौनतैं[3], काय सफल नाचे बल गाज।
वित्त सफल जो प्रभुको लागै, चित्त सफल
प्रभु ध्यान इलाज ॥ मानुष० ॥ ३ ॥ चिंतामन
चिंतत वरदाई, कलपवृच्छ कलपनतैं काज।
देत अचिंत अकल्प महा सुख, द्यानत भक्ति
गरीबनवाज ॥ मानुष० ॥ ४ ॥

(९२)

अपनो जानि मोहि तारले, शांति कुंथु अर
देव ॥ अपनो० ॥ टेक ॥ अपनो जानिकै भक्त

१ भगवानको। २ ललाट। ३ भगवानके मंदिर जानेसे।

पिछानकै सुरपति कीनी सेव । कामदेव जिन चक्रवर्तिपद,—तीन भोगि स्वयमेव। अपनो०॥१॥ तीन कल्यानक हथिनापुरमैं, गरभ जनम तप भेव । दशोंदिशा दशधर्म-प्रकाश्यो, नाश्यो अघतम एव ॥ अपनो० ॥ २ ॥ सहस अठोत्तर नाम सुलच्छन, अच्छ विना सुख बेव। द्यानत दास आस प्रभु तेरी, नास जनम मृत टेव ॥ अपनो० ॥ ३ ॥

(९३)

हे जिनरायजी, मोहि दुखतैं लेहु छुडाय ॥ टेक ॥ तनदुख मनदुख स्वजनदुख, धनदुख कह्यो न जाय॥ हे जिनरायजी० ॥ १ ॥ इष्ट वियोग अनिष्ट समागम, रोग सोग बहु भाय। गरभ जनम-मृत बाल-विरध-दुख, भोगे धरि धरि काय ॥ हेजिनरायजी० ॥ २॥ नरक निगोद अनंती बिरियां, करि करि विषय कषाय पंचपरावर्त्तन बहु कीने, तुम जानो जिनराय ॥ ॥ हे जिन० ॥३॥ भवबन-भ्रमतम, दुखदव जम

हर, तुम विन कौन सहाय। द्यानत हम कछु चाहत नाहीं। भव भव दरस दिखाय॥ हे जिन-रयजी॥ ४॥

(९४)

श्रीजिनदेव न छाडि हों, सेवा मनवचकाय हो श्रीजिन०॥ टेक॥ सब देवनके देव हो, सब गुरुके गुरुराय हो ॥ श्रीजिन० ॥ १॥ गर्भ जनम तप ज्ञान शिव, पंचकल्यानक-ईश हो। पूजैं त्रिभुवनपति सदा, तुमको श्रीजगदीश हो॥ श्रीजिन०॥ २॥ दोष अठारह छय गये, गुणहि छियालिसखान हो। महा दुखीको देत हो, बडे रत्नको दान हो॥ श्रीजिन० ॥ ३॥ नाम थापना दरबको, भाव खेत अरु काल हो। षट विध मंगल जे करैं, दुख नासै सुखमाल हो। श्रीजिन०॥ ४॥ एक दरब कर जो भजै, सो पावै सुखसार हो। आठ दरब ले हम जजैं, क्यों नहिं उतरैं पार हो॥ श्रीजिन०॥ ५॥ गुण अनंत भगवंतजी, कहि न सकैं सुरराय हो। बुद्धि

तनकसी मोविषै । तुमही होउ सहाय हो ॥ श्री-जिन०।६। तातैं वंदूं जग गुरू, वंदो दीन दयाल हो । वंदों स्वामी लोकके, वंदूं भविजनपाल हो ॥श्रीजिन० ॥ ७ ॥ विनती कीनी भावसों, रोम रोम हरपाय हो । या संसार असारमैं, द्यानत भक्ति उपाय हो ॥ ८ ॥

९५ । राग सोरठ ।

जिनराय ! मोहि भरोसो भारी । जिन० ॥ टेक ॥ सुरनरनाथ विभूति देहु तो, अब नहिं लागत प्यारी ॥ जिन० ॥ १ ॥ सिरीपाल भूपाल विथा गई, लहि संपति अधिकारी । सूली सेठ अगनि तैं सीता, कहा भयो जो उबारी ॥ जिन० ॥२॥ विदित रूपखुर[1] तस्कर तुमतैं, भए अमर अवतारी । भविसुदत्त अर सालभद्रकी, किहकारण रिधसारी ॥ जिनराय० ॥ ३ ॥ भेक[2] श्वान गज सिंह भए सुर, विषयरीति विस्तारी । कृष्णपिता सुत[3] बहु रिधिपाई, विनाशीक तुम धारी ॥ जिन

१ । रूप छिपानेवाला अंजन चोर । २. मेंडक । ३ प्रद्युम्न ।

॥ ४ ॥ जातिविरोध जात जीवनके, मूरति देख तिहारी। मानतुंगके बंधन टूटे, यह शोभा तुम न्यारी ॥ जिनराय० ॥ ५ ॥ तारन तरन सु विरद तिहारो, यह लखि चिंता डारी। द्यानत शिवपद आपहि देहो, बनी सुवात हमारी ॥ जिनराय० ॥ ६ ॥

(९६)

त्रिभुवनमें नामी, कर करुना जिनस्वामी ॥ त्रिभुवनमें० ॥ टेक ॥ चहुंगति जन्म मरनकिम भाख्यो, तुम सब अंतरजामी ॥ त्रिभुवनमें ॥१॥ करमरोगके वैद तुमहि हो, करों पुकार अकामी। त्रिभुवनमें ॥२॥ द्यानत पूरव-पुण्य-उदयतैं, सरन तिहारी पामी ॥ त्रिभुवनमें० ॥ ३ ॥

९७। राग धमाल।

मैं बंदा स्वामी तेरा ॥ मैं० ॥ टेक ॥ भवभंजन आदि निरंजन, दूर दुःख मेरा। मैं० ॥१॥ नाभिराय नंदन जगवंदन, मैं चरननका चेरा ॥ मैं० ॥ २ ॥ द्यानत ऊपर करुना कीजे, दीजे शिवपुर डेरा ॥ मैं० ॥ ३ ॥

(९८)

स्वामी श्रीजिन नाभिकुमार ! हमको क्यों न उतारो पार ॥ स्वामी० ॥ टेक ॥ मंगल मूरत हैं अविकार, नामभजैं भजैं विघन अपार । स्वामी० ॥१॥ भवभयभंजन महिमासार, तीनलोक जिय तारनहार ॥ स्वामी० ॥ २ ॥ द्यानत आए शरन तुम्हार, तुमको है सब शरम हमार ॥ स्वामी० ॥ ३ ॥

(९९)

नेमजी तो केवलज्ञानी, ताहीकों मैं ध्याऊं ॥ ॥ नेमिजी० ॥ टेक ॥ अमल अखंडित चेतन-मंडित, परम पदारथ पाऊं ॥ नेमिजी० ॥ १ ॥ अचल अवाधित निज गुण छाजत, वचनन कैसे बताऊं ॥ नेमिजी० ॥ २ ॥ द्यानत ध्याइए शिवपुर जाइए, बहुरि न जगमैं आऊं ॥ नेमिजी० ॥ ३ ॥

(१००)

हम आए हैं जिनभूप ! तेरे दरशनको ॥ हम०

॥ टेक ॥ निकसे घर आरतिकूप तुम पद-परशनको ॥ हम० ॥ १ ॥ वैननिसों सुगुन निरूप, चाहैं दर्शनको ॥ हम० ॥२॥ द्यानत ध्यावैं मन रूप, आनँद वरसनको ॥ हम० ॥ ३ ॥

(१०१)

तुम तार करुना धार स्वामी आदिदेव निरंजनो ॥ तुम० ॥ टेक ॥ सार जग आधार नामी, भविकजनमनरंजनो ॥ तुम० ॥ १ ॥ निराकार जमी अकामी, अमल देह अमंजनो ॥ तुम० ॥ २ ॥ करहु द्यानत मुकतिगामी, सकल भवभयभंजनो ॥ तुम० ॥ ३ ॥

(१०२)

इक अरज सुनो साहिब मेरी ॥ इक० ॥ टेक ॥ चेतन एक बहुत जड घेर्यो, दई आपदा बहुतेरी ॥ इक० ॥ १ ॥ हम तुम एक दोय इन कीने, विनकारन बेरी गेरी ॥ इक० ॥ २ ॥ द्यानत तुम तिहुं जगके राजा, करो ज कछु करुणा नेरी ॥ इक० ॥ ३ ॥

(१०३)

जिन साहिब मेरे हो, निवाहिये दासको ॥ जिन० ॥ टेक ॥ मोहमहातम घोर भर्यो है, कीजिये ज्ञानप्रकाशको ॥ जिन० ॥ १ ॥ लोभ रोगके वैद प्रभुजी, औषध द्यो गदनासको ॥ जिन० ॥ २ ॥ द्यानत क्रोधकी आग बुझावो, वरस छिमाजलरासको ॥ जिन० ॥ ३ ॥

(१०४)

सांचे चंद्रप्रभू सुखदाय ॥ सांचे० ॥ टेक ॥ भूमि सेत अम्रत वरषाकरि, चंद नामतैं शोभा पाय ॥ सांचे० ॥ १ ॥ नरवरद्राई कौन बडाई, पशुगन तुरत किये सुरराय ॥सांचे॥२॥ द्यानत चंद असंखनिके प्रभु, सार्थ नाम जपों मनलाय ॥ सांचे० ॥ ३ ॥

(१०५)

काम सरैं सब मेरे, देखे पारसस्वाम ॥ काम० ॥ टेक ॥ सप्तफना अहि सीस विराजै, सात

१ रोग। २ यथा नाम तथा गुण।

पदारथ धाम ॥ काम० ॥ १ ॥ पद्मासन शुभ बिंब अनूपम, श्यामघटा अभिराम ॥काम०॥२॥ इंद फनिंद नरिंदनिस्वामी, द्यानत मंगल ठाम ॥ काम० ॥ ३ ॥

(१०६)

जिनरायके पाँय सदा सरनं ॥ जिनरायके०॥ टेक॥ भवजलपतित-निकारन कारन, अंतर पाप-तिमिरहरनं ॥जिनरायके ॥१॥ परसी भूमि भई तीरथ सो, देवमुकुटमनि-छविधरनं॥जिनरायके० २॥द्यानत प्रभु-पग-रज कच पावैं, लागत भागत है मरनं ॥ जिनरायके० ॥ ३॥

(१०७)

मोहि तारो जिनसाहिबजी ॥ मोहि०॥टेक॥ दास कहाऊं क्यों दुख पाऊं, मेरी ओर निहारो ॥ मोहि० ॥ १ ॥ षटकाया-प्रतिपालक स्वामी, सेवककों न विसारो ॥ मोहि० ॥ २ ॥ द्यानत तारन-तरन विरद तुम, अवर न तारनहारो ॥ मोहि० ॥ ३ ॥

(१०८)

दास तिहारो हूं, मोहि तारो श्रीजिनराय ॥ दास तिहारो भक्त तिहारो, तारो श्रीजिनराय ॥ दास०॥ टेक ॥ चहुँगति दुखकी आगतैं अब, लीजे भक्त बचाय ॥ दास० ॥१॥ विषय-कषाय-ठगनि ठग्यो, दोनोंतैं लेहु छुडाय ॥ दास०॥२॥ द्यानत ममता नाहरीतैं, तुम बिन कौन उपाय ॥ दास० ॥ ३ ॥

(१०९)

जिनवरमूरत तेरी, शोभा कहिय न जाय ॥ जिनवर०॥टेक॥ रोम रोम लखि हरख होत है, आनँद उर न समाय ॥ जिनवर० ॥ १ ॥ शांत रूप शिवराह बतावै, आसन ध्यान उपाय ॥ जिनवर० ॥ २ ॥ इंद फनिंद नरिंद विभव सब, दीसत हैं दुखदाय ॥ जिनवर० ॥ ३ ॥ द्यानत पूजै ध्यावै गावै, मन वच काय लगाय ॥ जिन० ॥ ४ ॥

(११०)

प्रभु तुम चरन सरन लीनों, मोहि तारो करु-णाधार ॥ प्रभु० ॥ टेक ॥ सात नरकतैं नवग्रीव-कलों, रुल्यो अनंती बार ॥ प्रभु ॥ १ ॥ आठ करम बैरी बड़े तिन, दीनों दुःख अपार ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ द्यानतकी यह वीनती मेरो, जनम मरन निरवार ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥

१११ । राग-कन्हारा ।

शरन मोहि वासुपूज्य जिनवरकी ॥ शरन० ॥ ॥ टेक ॥ अधम-उधारन पतित-उबारन, दाता रिद्धि अमरकी ॥ शरन० ॥ १ ॥ असरन-सरन अनाथनाथजी, दीनदयाल नजरकी ॥ शरन० ॥ २ ॥ द्यानत बालजती जगबंधू, बंधहरन, शिवकरकी ॥ ३ ॥

(११२)

अब मोहि तारलै शांतिजिनंद ॥ अब० ॥ टेक कामदेव तीर्थंकर चक्री, तीनोंपद सुखवृंद ॥ अब० ॥ १ ॥ सुरनरजुत धरमामृत बरसत, शोभा

पूरन चंद ॥अब०॥२॥द्यानत तीनों लोक विघन छय, जाको नाम करंद ॥ अब० ॥ ३ ॥

(११३)

अब मोहि तारलै कुंथु जिनेश ॥अब०॥टेक॥ कुंथादिक प्रानी प्रतिपालक, करुणासिंधु महेश अब० ॥ १ ॥ सम्यकरत्नत्रयपदधारक, तारक जीव अशेष ॥ अब० ॥२॥ द्यानत शोभासागर स्वामी, मुक्ति-वधू-परमेश ॥ अब० ॥ ३ ॥

(११४)

अब मोहि तारलै अर भगवान ॥अब०॥टेक दीप विना शिवराह-प्रकाशक, भवतम-नाशक-भान ॥ अब० ॥ १ ॥ ज्ञानसुधाकरजोत सदा घर, पूरनशशि सुखदान ॥ अब० ॥ २ ॥ भ्रम-तपवारन जगहित-कारन, द्यानत मेघ समान ॥ अब० ॥ ३ ॥

(११५)

भजरे मनुवा प्रभु पारसको ॥ भजरे० ॥ टेक ॥ मन-वच-काय लाय लौ इनकी, छांडि सकल भ्रम

आरसको ॥ भजरे० ॥ १ ॥ अभयदान दै दुख सब हरलै, दूर करै भवकारसको ॥भजरे० ॥२॥ द्यानत गावै भगति बढावै, चाहै पावै ता रसको ॥ भजरे० ॥ ३ ॥

(११६)

लगन मोरी पारससों लागी ॥लगन०॥टेक॥ कमठ मान-भंजन मनरंजन, नाग किये बडभागी ॥ लगन०॥ १ ॥ संकट-चूरत मंगल पूरत, परम-धरम अनुरागी ॥ लगन० ॥ २ ॥ द्यानत नाम सुधारस स्वादत, प्रेम-भगति-मति पागी ॥लगन० ॥ ३ ॥

(११७)

प्रभुजी मोहि फिकर अपार ॥प्रभुजी०॥टेक॥ दानव्रत नाहिं होत हमपैं, होंहिंगे क्यों पार ॥ प्रभुजी० ॥ १ ॥ एक गुनथुति कहि सकत नाहिं, तुम अनंत भंडार। भगति तेरी बनत नाहीं, मुकतिकी दातार ॥प्रभुजी० ॥ २ ॥ एक भवके

१ संसाररूपी कालिमा।

दोष केई, थूल कहूं पुकार। तुम अनंत जनम निहारे, दोष अपरंपार ॥ प्रभुजी० ॥३॥ नांव दीनदयाल तेरो, तरनतारनहार। बंदना द्यानत करत है, ज्यों बनै त्यों तार ॥ प्रभुजी० ॥ ४ ॥

(११८)

प्रभुजी प्रभू सुपास जगवासतैं दास निकास ॥ प्रभु० ॥ टेक ॥ इंदके स्वाम फनिंदके स्वाम, नरिंदके चंदके स्वाम। तुमको छांडके किसपै जावैं, कौनको ढूंढैं धाम ॥ प्रभुजी०॥ १ ॥ भूप सोई दुख दूर करै है, साह सो दे दान। वैद सोई सब रोग मिटावै, तुम्ही सबै गुनवान ॥ प्रभुजी० ॥२॥ चोर अंजनसे तार लिये हैं, जार कीचसे राव। हम तो सेवक सेव करैं हैं, नाम जपैं मन चाव ॥ प्रभुजी० ॥ ३ ॥ तुम समान हुये न होंगे, देव त्रिलोकमझार। तुम दयाल देवोंके देव हो, द्यानतको सुखकार ॥ प्रभुजी० ॥ ४ ॥

(११९)

तेरी भक्ति बिना धिक है जीवना ॥ तेरी० ॥

॥ टेक ॥ जैसैं बेगारी दरजीकों, पर घर कपडोंका सीवना ॥ तेरी ॥ १ ॥ मुकुट बिना अंबर सब पहिरे, जैसैं भोजनसैं घीव ना ॥ तेरी० ॥ २ ॥ द्यानत भूप बिना सब सेना, जैसैं मंदिरकी नीव ना ॥ तेरी० ॥ ३ ॥

(१२०)

बुधजनकृत हजूरीपदसंग्रह ।

म्हे तो थांपरवारी, वारी वीतरागीजी, शांत छवी थांकी आनँदकारीजी० ॥ म्हैंतो० ॥टेक॥ इंद नरिंद फनिंद मिलि सेवत, मुनि सेवत ऋधि धारीजी ॥ म्हैंतो० ॥१॥ लखि अविकारी पर उपकारी, लोकालोक निहारीजी ॥म्हैंतो०॥२॥ सब त्यागीजी कृपा तिहारी, बुधजन ले बलिहारीजी ॥ म्हैं तो० ॥ ३ ॥

(१२१)

राग—अलहिया बिलावल- ताल धीमा तेताला ।

श्रीजिनपूजनको हम आए, पूजत ही दुखद्वंद मिटाए ॥ श्रीजिन०॥टेक॥ विकलप गयो प्रगट

भयो धीरज, अद्भुत सुखसमता बरसाए। आधि
व्याधि अब दीखत नाहीं, धरमकलपतरु आंगन
छाए ॥ श्रीजिन०॥१॥ इतमैं इंद्र चक्रधर इतमैं,
इतमैं फनिंद खडे सिरनाए। मुनिजनवृंद करैं
थुति हरखत, धनि हम जनमैं पदपरसाए ॥ श्री
जिन०॥ २॥ परमौदारिकमैं परमातम, ज्ञानमयी
हमको दरसाए। ऐसेही हममैं हम जानैं, बुधजन
गुनमुख जात न गाए ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥

(१२२)

राग आसावरी जोगिया ताल धीमो तेतालो।

करम देत दुख जोर, हो सांइयां ॥करम० टेक॥
कई परावृत पूरन कीने, संग न छांडत मोर, हो
सांइयां ॥ करम०॥१॥ इनके वशतैं मोहि बचा-
ओ, महिमा सुनी अति तोर, हो साइयां ॥करम०
॥२॥ बुधजनकी विनती तुमहीसों, तुमसा प्रभु
नहिं और, हो साइयां ॥ करम० ॥ ३ ॥

१२३। राग असावरी।

अरज म्हारी मानोजी, याही म्हारी मानो,

भवदधिसे तारना म्हारा जी ॥ अरज०॥ टेक ॥ पतित-उधारक पतित पुकारैं, अपनो विरद पिछानो० ॥ अरज० ॥ १ ॥ मोहमगरमछ दुख दावानल, जनम मरन जल जानो । गति गति भ्रमण भँवरमैं डूबत, हाथ पकरि ऊंचो आनो । अरज०॥२॥ जगमैं आनदेव बहु हेरे, मेरा दुख नहिं भानो । बुधजनकी करुणा ल्यो साहिब, दीजे अविचल थानो ॥ अमर० ॥ ३ ॥

(१२४)

राग असावरी जोगिया ताल धीमो तेतालो ।

थें ही मोनैं तारोजी, प्रभुजी कोई न हमारो ॥टेक॥ हूं एकाकि अनादि कालतैं, दुख पावत हूं भारोजी ॥ थें ही० ॥१॥ विन मतलबके तुमही स्वामी, मतलबको संसारो । जगजनमिल मोहि जगमैं राखैं, तूही काढनहारो ॥ थेई०॥ बुधजनके अपराध मिटाओ, शरन गह्यो छै थारो । भवदधिमाही डूबत मोकों, करगहि आप निकारो० ॥ थे ही ॥३॥

(१२५)

राग–आसावरी मांझ ताल–धीमो एकतालो ।

प्रभूजी अरज़ म्हारी उरधरो ॥प्रभूजी०॥१॥ प्रभूजी नरकनिगोद्यां मैं रुल्यो,पायो दुःख अपार ॥ प्रभूजी०॥१॥ प्रभूजी हूं पशुगतिमैं उपज्यो, पीठ सह्यो अति भार ॥ प्रभूजी०॥ २ ॥ प्रभूजी विषयमगनमैं सुर भयो, जात न जान्यो काल ॥ प्रभूजी०॥३॥ प्रभूजी नरभव कुल श्रावक लह्यो, आयो तुम दरबार॥ प्रभूजी० ॥ ४ ॥ भवभरम-न बुधजनतनों, मेटो करि उपगार ॥ प्रभूजी० ॥ ५ ॥

(१२६)

राग सारंगकी मांझ–ताल दीपचन्दी ।

म्हारी सुणज्यो दीनदयालु, तुमसों अरज करूं ॥ म्हारी०॥ टेक ॥ आन उपाव नहीं या जगमैं, जगतारक जिनराज, तेरैं पांय परूं ॥ म्हारी ॥१॥ साथ अनादि लाग विधि मेरी, करत रहत बेहाल ।इनकों कोलों भरों ॥म्हारी०॥२॥ करि

करुना करमनकों काटो, जनममरन दुखदाय, इनतैं बहुत डरूं ॥ म्हारी० ॥ ३ ॥ चरन सरन तुम पाय अनूपम, बुधजन मांगत येह, गतिगति मांहि फिरूं ॥ म्हारी० ॥ ४ ॥

(१२७)

राग लहरि सरंग ।

अरज करूं (तसलीम करूं) ठाडो विनऊं चरननको चेरो ॥ अरज० ॥ टेक ॥ दीनानाथ दयाल गुसाईं, मोपर करुणा करकै हेरो । अरज ॥ १ ॥ भवबनमैं मोहि निरबल लखिकै, दुष्ट करम सब मिलके घेरयो । नानारूप बनाकै मेरो, गति चारोमें दयो है फेरो ॥ अरज० ॥ २ ॥ दुखी अनादि कालको भटकत, सरनो आय गह्यो मैं तेरो । अब तो कृपा करो बुधजनपैं, हरो वेगि संसारबसेरो ॥ अरज० ॥ ३ ॥

(१२८)

राग लहरि सारंग जल्द तेतालो ।

मोकों तारोजी तारोजी तारोजी किरपा करिकै ॥

मोकों०॥ टेक॥ अनादिकालको दुखी रहत हौं, टेरतहू जमतैं डरिकै ॥ मोकों० ॥ १ ॥ भ्रमत फिरत चारों गति भीतर, भवमाहीं मरि मरि करिकै। डूबत अगम अथाह जलधिमैं, राखो हाथ पकर करिकै ॥ मोकों० ॥ २ ॥ मोह भरम विपरीत वसत उर, आप न जानों निजकरिकै। तुम सर्वज्ञायक मोहि उवारो, बुधजनको अपनो करिकै ॥ मोकों० ॥३॥

१२९। राग सारंग।

हम शरन गह्यो जिनचरनको ॥ हम०॥ टेक ॥ अब अवरनकी मान न मेरे, डरहू रह्यो नहिं मरनको ॥ हम०॥१॥ भरमविनाशन तत्त्वप्रकाशन, भवदधि-तारनतरनको। सुरपति नरपति ध्यान धरत वर, करि निश्चय दुखहरनको ॥ हम०॥२॥ याप्रसाद ज्ञायक निजमान्यो, जान्यो तन जड परनको। निश्चय सिधसो पै कषायतैं, पात्र भयो दुख भरनको ॥ हम० ॥३॥ प्रभुविन अवर नहीं याजगमैं, मेरे हितके करनको। बुध-

ज़नकी अरदास यही है, हर संकट भवफिरन-को ॥ हम० ॥ ४ ॥

१३० । राग लहरि मीणाकी चालमें ।

अहो देखो केवलज्ञानी, ज्ञानी छवि भली या विराजै हो, भली या विराजै हो ॥अहो०॥टेक॥ सुरनरमुनि याकी सेव करत हैं, करम हरनके काजै हो ॥ अहो० ॥१॥ परिगहरहित प्रातिहा-रजजुत, जगनायकता छाजै हो । दोष विना गुन सकल सुधारस, दिविधुनि मुखतैं गाजै हो ॥ अहो० ॥ २ ॥ चितमें चितवत ही छिन माहीं, जन्म जन्म अघ भाजैं हो । बुधजन याकों कबहु न विसरो, अपने हितके काजै हो ॥ अहो० ॥ ॥ ३ ॥

१३१ । राग-सारंग लहरि ।

श्रीजिन तारनहारा थेतो मोनै प्यरा लागो राज श्रीजिन०॥ टेक ॥ बारह सभा विच गंधकुटीमैं, राज रहे महराज ॥श्रीजिन॥१॥ अनँतकालका भरम मिटत है, सुनतहि आप अवाज ॥ श्री०

॥ २ ॥ बुधजन दास रावरो विनवैं, थांस्यु सुधरैं काज ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥

१३२ । राग-पूरवी जल्द तितालो ।

हरना जी जिनराज मोरी पीर ॥ हरना० ॥ टेक॥ आनदेव सेये जगवासी, सरयो नहीं मेरो काज ॥ हरनाजी० ॥ १ ॥ जगमैं वसत अनेक सहज ही, प्रनवत विविधसमाज । तिनपैं इष्ट अनिष्ट कल्पना, मेटोगे महाराज ॥ हरनाजी० ॥२॥ पुदगल राचि अपनपौं भूल्यो, विरथा करत इलाज । अवहि यथाविधि वेग वनाओ, बुधजनके सिरताज ॥ हरनाजी० ॥ ३ ॥

१३३ । राग-धनासरी धीमा तेताला ।

प्रभु थांसू अरज हमारी हो ॥ प्रभु० ॥ टेक॥ मेरे हितू न कोऊ जगतमें तुमही तो हितकारीहो ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ संग लग्यो मोहि नेक न छांड़ैं, देत मोह दुख भारी । भववनमांहि नचावत मोकों, तुम जानत हो सारी ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ थांकी महिमा अगम अगोचर, कहि न सकैं

बुधि म्हारी। हाथ जोरिकै पांय परत हूं, आवागमन निवारी हो॥ प्रभु०॥ ३॥

१३४। राग जंगला।

मेरो मनुवा अति हरषाय तोरे दरसनसों। मेरे ॥ टेक ॥ शांति छवी लखि शांतभाव ह्वै, आकुलता मिटजाय, तोरे दरशनसों। मेरो० ॥ १॥ जबलों चरन निकट नहिं आया, तब आकुलता थाय। अब आवत ही निजनिधि पाया, निति नव मंगल थाय, तोरे दरशनसों॥ मेरो०॥ बुध जन अरज करैं करजोरे, सुनिए श्रीजिनराय। जबलों मोख होय नहिं तबलों, भक्ति करों गुन गाय, तोरे दरशनको॥ मेरो० ॥ २॥

१३५। राग खमाच।

छवि जिनराई राजै छै ॥ छवि० ॥ टेक॥ तरु अशोकतर सिंहासनपैं बैठे, धुनिघन गाजै छै ॥ छवि० ॥ १॥ चमर छत्र भामंडलदुतिपैं, कोटिभान दुति लाजै छै। पुष्पवृष्टि सुरनभतैं दुंदुभि मधुर मधुर सुर बाजै छै॥ छवि० ॥२॥

सुरनर मुनि मिलि पूजन आवैं, निरखत नवड़ो काजै छै। तीनकाल उपदेश होत है, भवि बुध-जन हित काजै छै॥ छवि०॥ ३॥

१३६। राग—गारो कान्हरो।

थांका गुण गास्यांजी आदिजिनंदा ॥थांका० ॥टेक॥ वचन सुण्या प्रभु मूनै, म्हारा निजगुण भास्यांजी॥ आदि०॥ १॥ म्हांका सुमन-कम-लमें निसदिन,थांका चरन बसास्यांजी॥आदि० ॥२॥ याही मूनै लगन लगी छै, सुख द्यो दुःख नसास्यांजी॥ आदि०॥३॥ बुधजन हरख हिये अधिकाई, शिवपुरवासा पास्यांजी॥ आदि०॥

१३७। राग—सोरठ।

म्हारी कोन सुनै, थे तो सुन ल्यो श्रीजिनराज॥ म्हारी०॥टेक॥ अवर सरब मतलबके गाहक, म्हारो सरत न काज। मोसे दीन अनाथ रंकको, तुमतैं बनत इलाज॥ म्हारी०॥ १॥ निजपर नेकु दिखात नाहीं, मिथ्यातिमिर समाज। चंद्र प्रभू परकाश करो उर, पाऊं धाम निजाज॥

म्हारी ॥ २ ॥ थकित भयो हूं गति गति फिरतां, दर्शन पायो आज । बारंबार वीनवै बुधजन, सरन गहेकी लाज ॥ म्हारी० ॥ ३ ॥

(१३८) राग-सोरठ।

बेगि सुधि लीज्यो म्हारी, श्रीजिनराज ॥ बेगि० ॥ टेक ॥ डरपावत नित आपु रहत है, संग लग्या जमराज० ॥ बेगि० ॥ १ ॥ जाके सुरनर नारक तिरजग, सब भोजनके साज । ऐसो काल हर्‌यो तुम साहब, यातैं मेरी लाज ॥ बेगि० ॥ २ ॥ परघर डोलत उदर भरनको, होत प्राततैं सांज । डूबत आश अथाह जलधिमैं, द्यो समभाव ज़िहाज ॥ बेगि० ॥ घनादिनाको दुखी दयानिधि, अवसर पायो आज । बुधजन सेवक ठाड़ो विनवै, कीज्यो मेरा काज० ॥ बेगि० ॥ ४ ॥

(१३९)

थांका गुन गास्यांजी, जिनजीराज थांका दरसनतैं अघ नास्या ॥ थांका० ॥ टेक ॥ थां सा-

रीखा तीनलोकमैं, अवर न दूजा भास्याजी ॥ जिनजी० ॥ १ ॥ अनुभव,-रसतैं सींचि सींचि-कैं, भवआताप बुझास्यांजी। बुधजनका विक-ल्प सब भाग्या, अनुक्रमतैं शिव पास्यांजी ॥ जिनजी० ॥ २ ॥

(१४०)

भजि जिन चतुरवि संति नाम। भजि०टेक॥ जे भजे ते उतरि भवदधि, लयो शिवसुखधाम ॥ भज० ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव स्वामी, अभिनंदन अभिराम। सुमति पदम सुपास चंदा, पुष्पदंत प्रनाम ॥ भज० ॥ २ ॥ शीतल श्रेयान् वासुपूज्य, विमल अनंत सुनाम। धर्म-सांति जु कुंथु अरहा, मल्लि राखै माम॥ भज० ॥ ३ ॥ मुनिसुवृत नमि नेमिनाथा, पार्स सन्मति स्वाम। राखि निश्चय जपो बुधजन, पुरै सबकी काम ॥ भज० ॥ ४ ॥

१४१। राग-कानडो।

आज मनरी वनी छै जिनराज ॥ आज० ॥ टेक॥ थांको ही सुमरन थांको ही पूजन, थांको

ही तत्त्व विचार ॥ आज० ॥१॥ थांके विछुरे अति दुख पायो, मोपै कह्यो न जाय। अब सनमुख तुम नयनों निरखे, धन्य मनुष्य परजाय ॥आज० ॥ २ ॥ आजहि पातक नास्यो मेरो, ऊतरस्यों भवपार। यह प्रतीत बुधजन उर आई, लेस्यों शिवसुख सार ॥ आज०॥

१४२। रेखता।

ऋषभ तुमसे स्वाल मेरा, तुही है नाथ जगकेरा ॥ ऋषभ० ॥ टेक ॥ सुना इंसाफ है तेरा, विगर मतलब हितू मेरा० ॥ ऋषभ० ॥ १ ॥ हुई अर होयगी अब है, लखो तुम ज्ञानमें सब है। इसीसे आपसे कहना, औरसे गरज क्या लहना ॥ ऋषभ० ॥ २ ॥ न मानी सीख सतगुरुकी, न जानी बाट निजघरकी। हुवा मदमोहमें माता, घने विषयनके रँगराता ॥ ऋषभ० ॥ ३ ॥ गिना परद्रव्यको मेरा, तबै वसु कर्मने घेरा। हरा गुन ज्ञानधन मेरा, करा विधि जीवको चेरा ॥ ऋषभ० ॥ ४ ॥ नचावे स्वांग रचि-

मोकों, कहूं क्या खबर सब तोकों। सहज भइ बात अति बांकी, अधमको आपकी झांकी॥ ऋषभ०॥५॥ कहूं क्या तुम सिफत सांई, बनत नहिं इंद्रसों गाई। तिरे भविजीव भवसरतैं, तुमारा नांव उर धरतैं॥ ऋषभ०॥ मेरा मतलब अवर नाहीं, मेरा तौ भाव मुझमाहीं। वाहिपर दीजिये थिरता, अरज बुधजन यही करता ऋषभ०॥६॥

१४२। रेखता।

चंदजिन विलोकवेतैं फंद गलि गया, धंद सब जगतके विफल, आज लखि लिया॥ चंद०॥टेक॥ शुद्धचिदानंद खंध, पुद्गलके माहिं; पहिचान्या हममें हम, संशय भ्रम नाहिं॥ चंद०॥१॥ सो न ईस सो न दास, सो नहीं है रंक। ऊंच नीच गोत नांहिं, नित्य ही निशंक॥चंद०॥२॥ गंध वर्न फरस स्वाद, वीसगुन नहीं। एक आतमा अखंड, ज्ञान है सही॥ चंद०॥४॥ परकों जानि ठानि परकी, बानि पर भया। परकी सांझ

दुनियामैं, खेदको लया ॥ चंद० ॥ ३ ॥ काम क्रोध कपट, मान, लोभकों करा । नारकी नर देव पशू होयकैं फिरा ॥ चंद ॥ ४ ॥ ऐसे वखतके बीच ईश, दरश तुम दिया । मिहरवान होय दास, आपका किया ॥ चंद ॥ ५ ॥ जोलौं कर्म काट मोखधाम ना गया । तौलौं बुधजनको सरन राख करि मया ॥ चंद० ॥ ६ ॥

१४४ । राग-मल्हार ।

जगतपति तुम हो श्रीजिनराई ॥ जगत० ॥ टेक ॥ अवर सकल परिगहके धारक, तुम त्यागी हो सांई ॥ जगत० ॥१॥ गर्भ मास पंदरे लौं धनपति, रतनवृष्टि बरसाई । जनम समय गिरिराज-शिखरपर, न्हौंन कर्‌यो सुरराई ॥ जगत० ॥ २ ॥ सदन त्यागि बनमें कचलोंचत, इंद्रनि पूजा रचाई । सुकलध्यानतैं केवलि उपज्यो, लोकालोक दिखाई ॥ जगत० ॥३॥ सर्व कर्म हरि प्रगटि शुद्धता, नित्य निरंजनताई ।

मनवचतन बुधजन वंदत है, द्यो समता सुख-दाई ॥ जगत० ॥ ४ ॥

१४५ । राग—रेखता ।

अरज जिनराज यह मेरी, इस्या अवसर बतावोगे० ॥ अरज० ॥ टेक ॥ हरो इन दुष्ट करमनको, मुकतिका पद दिलावोगे ॥अरज०॥ १ ॥ करूं जब भेष मुनिवरका, अवर विकलप विसारूंगा । रहूंगा आप आपेमें, परिग्रहको विडारूंगा ॥ अरज० ॥२॥ फिरचा संसार सारे-में दुखी मैं सब लख्या दुखिया । सुनत जिन ग्यानि गुरुमुखिया, लख्या चेतन परम सुखिया ॥ अरज० ॥३॥ पराया आपना जाना, बनाया काज मनमाना । गहाया कुगति तैखाना, लहाया विपति विललाना ॥ अरज० ॥ ४ ॥ जगतमैं जन्म अर मरना, डरा मैं आ लिया शरना । मिहिर बुधजनपै यां करना, हरो परतैं ममत भरना ॥ अरज० ॥ ५ ॥

(१४६)

आयो प्रभु तोरे दरबार, सब मो कारज सरिया ॥ आयो० ॥ टेक ॥ निरखत ही तुम चरनन ओर, मोहतिमिर मो हरिया ॥ आयो० ॥ १॥ मैं पाई मेरी निधि सार, अबलों रह्या विसरिया । अब हूवा उर हरष अपार, कृत्य कृत्य तुम करिया ॥ आयो० ॥ २ ॥ जड चेतन नहिं मान्या भेद, राग रोष जब धरिया । तब हूवा ये निपट कुज्ञान, करमबंधमैं परिया ॥ आयो० ॥ ३ ॥ इष्ट अनिष्ट संयोगन पाय, दुष्ट दवानल जरिया । तुम पाए बडभागन जोग, निरखत हिय गय हरिया ॥ आयो० ॥ ४ ॥ धारत ही तुम बानी कान, भरमभाव सब गरिया । बुध जनके उर भई प्रतीत, अब भवसागर तरिया ॥ आयो० ॥ ५ ॥

(१४७)

ऐसे प्रभुके गुन कोऊ कैसैं कहै ॥ ऐसे० ॥ टेक ॥ दरश ज्ञान सुख वीर्य अनंता, अवर अनंत

गुन जामैं रहै ॥ ऐसे० ॥ १ ॥ तीन काल पर-
जाय द्रव्य गुन, एक समय जाको ज्ञान गहै ॥
ऐसे० ॥२॥ जो निज शक्ति गुपत छी अनादी,
सो सब प्रगट अब लहलहै ॥ ऐसे० ॥ ३ ॥
नंतानंत काललों जाकों, सांत सुथिर उपयोग
बहै ॥ ऐसे० ॥ ४ ॥ मन-वच-तनतैं वंदत बुध-
जन, ऐसे गुननको आप चहैं ॥ ऐसे० ॥ ५ ॥

(१४८)

तुम बिन जगमैं कौन हमारा ॥ तुम० ॥ टेक ॥
जोलों स्वारथ तोलों मेरे, बिन स्वारथ नहिं देत
सहारा ॥ तुमबिन० ॥ १ ॥ अवर न कोई है या
जगमें, तुमही हो सबके उपगारा ॥ तुमबिन० ॥
२ ॥ इंद नरिंद फनिंद मिल सेवत, लखि भव-
सागर-तारनहारा ॥ तुमबिन० ॥ ३ ॥ भेद-
विज्ञान होत निज परका, संशय भरम करत
निरवारा ॥ तुम० ॥ ४ ॥ अनँत जन्मके पातक
नाशत, बुधजनके उर हरष अपारा ॥ तुम० ॥ ५ ॥

(१४९).

तूही तूही याद मोहि आवै जगतमैं ॥ तूही० ॥ टेक ॥ तेरे पदपंकज सेवत हैं, इंद नरिंद फनिंद भगतमैं ॥ तूही० ॥ १ ॥ मेरा मन निशदिन ही राच्या, तेरे गुन-रस गान पगतमैं ॥ तूही० ॥ २ ॥ भव अनंतका पातक नास्या, तुम जिनवर छवि दरस जगतमैं ॥ ३ ॥ मात तात परिकर सुत दारा, ये दुखदाई देख भगतमैं ॥ तूही० ॥ ४ ॥ बुधजनके उर आनँद आया, अब तो हूं नहिं जाऊं कुगतमैं ॥ तूही तूही० ॥ ५ ॥

१५० । राग-रेखता ।

तिहारी याद होते ही, मुझे अम्रत वरसता है जिगर तपता मेरा भ्रमसों, तिसैं समता सरसता है ॥ तिहारी० ॥ १ ॥ दुनीके देव दाने सब, कदम तेरे परसता है । तिहारे दरश देखनको, हजारों चँद तरसता है ॥ तिहारी० ॥२॥ तुम्हींने खूब भविजनको, बताया भिस्त[1]-रसता

[1] स्वर्गका रास्ता ।

है। उसी रस्ते चले सायर, तुमारे बीच्च बसता है ॥ तिहारी० ॥ ३ ॥ विमुख तुमसों भए जितनें, तिते दोजक[1]में धसता है। मुरीद[2] तेरा सदा बुध जन, आपने हाल सुसता है ॥ तिहारी० ॥४॥

१५१। राग—अडाणो।

तुम चरननकी शरन आय सुख पायो ॥ तुम० ॥ टेक ॥ अबलों चिरभव बनमें डोल्यो, जन्म जन्म दुख पायो ॥ तुम० ॥ १ ॥ ऐसो सुख सुर-पतिके नाहीं, सो मुख जात न गायो। अब सब संपति मो उर आई, आज परमपद लायो ॥ तुम० ॥ मनवचतनतैं, दृढकरि राखों, कबहुं न ज्या विसिरायो। बारंबार बीनवै बुधजन, कीजे मनको भायो ॥ तुम० ॥ ३ ॥

(१५२)

आनँद भयो निरखत मुख जिनचंद। आनँद० ॥ टेक ॥ सब आताप गयो ततखिन ही, उपज्यो हरष अमंद ॥ १ ॥ भूलथकी रागादिक कीने, तब

१ नरकमें। २ दास वा शिष्य।

बांधे विधिवंद[1]। इनकी कृपातैं अब मिटि जैहैं, विपदाके सब फंद ॥ आनँद० ॥२॥ केवल स्वेत सुभग सुछत्तापर, वारों कोटिक चंद। चरनकमल बुधजन उर भीतर, ध्यावै शिवसुखकंद ॥ आनँद० ॥ ३ ॥

१५३। राग—ईमन जल्द तिताला।

शरन गही मैं तेरी, जग-जीवन जिनराज जगपति ॥शरन०॥ टेक ॥ तारनतरन करन पावन जग, हरन करम-भवफेरी ॥ शरन०॥१॥ ढूंढत फिर्‍यो भर्‍यो नानादुख, कहूं न मिली सुखसेरी यातैं तजी आनकी सेवा, सेव रावरी हेरी ॥शरन ॥ २ ॥ परमैं मगन विसार्‍यो आतम, धर्‍यो भरम जगकेरी। ये मति तजूं भजूं परमातम, सो बुधि कीजे मेरी ॥३॥

१५४। पंजाबी भाषामें।

करमूंदां[2] कुपेंच मेरे है दुखदाइयां हो ॥टेक॥ करम हरन महिमा सुन आयो, सुनिए मैंडी[3]

१ कर्मबंद। २ कर्मोका। ३ मेरी।

साइयां हो ॥ करमूंदा०॥१॥ कबहुंक इदं नरिंद बनायो, कबहुंक रंक बनाइयां। कबहुंककीट गयंद रचायो, ऐसे नाच नचाइयां॥ करमूंदा०॥ ॥२॥ जो कुछ भई सो तुमही जानो, मैं जानत हूं नाइयां। कर्मबंध तुम काटे जाविधि, सो विधि मोहि दिखाइयां॥ करमूंदा०॥ ३॥

इति हजूरीपद-संग्रह समाप्त ॥ २ ॥

(३) जिनवाणी स्तुतिपदसंग्रह।

दौलतरामजीकृत शास्त्र स्तुति।

जिनबैन सुनत, मोरी भूल भगी ॥ जिनबैन ॥ टेक ॥ कर्मस्वभाव भाव चेतनको, भिन्नपिछानन सुमति जगी। जिनबैन० ॥१॥ जिन अनुभूति सहज ज्ञायकता, सो चिर तुष-रुष-मैल-पगी स्यादबाद-धुनि-निर्मल जलतैं, विमल भइ समभाव लगी ॥ जिनबैन०॥२॥ संशय-मोह-भरमत विघटी, प्रगटी आतमसौंज सगी। दौल अपूरब मंगल पायो, शिवसुख लेन होंस उमगी ॥ जिनबैन० ॥ ३ ॥

(२)

जय जय जग-भरमतिमर-हरन जिनधुनी ॥ जय जय० ॥ टेक ॥ या विन समुझे अजौं न सौंज-निज-मुंनी। यह लखि हम निजपर अविवेकता लुंनी॥२॥जय जय०॥१॥जाको गनराज अंग,-पूर्वमय चुनी। सोई कही है कुंदकुंद,-

१ निज परणति। २ इच्छा। ३ अभ्यस्त की ४। काटदी।

प्रमुख बहुमुनी ॥ जय जय० ॥२॥ जे चर जड भए पीय,[1]—मोह-वारुनी[2]। तत्त्वपाय चेते जिन, थिर सुचित सुनी ॥ जय जय० ॥ ३ ॥ कर्ममल पखारनेहि,[3] विमल सुरधुनी। तजि विलंब अंब[4] करो, दोल उरपुंनी[5] ॥ जय जय० ॥ ४ ॥

(३)

अब मोहिं जान परी, भवोदधि तारनको है जैन[6] ॥अब०॥ टेक ॥ मोहतिमिरतैं सदा काल-के, छाय रहे मेरे नैन। ताके नासन-हेत लियो मैं, अंजन जैन सु ऐन ॥ अब० ॥ १ ॥ मिथ्या-मती भेपको लेकर, भाषत हैं जो वैन। सो वे वैन असार लखे मैं, ज्यों पानीके फैन ॥ अब० ॥ २ ॥ मिथ्यामती वेल जगफैली, सो दुखफल-की दैन। सतगुरु-भक्ति-कुठार हाथ लै, छेद लियो अति चैन ॥ अब०॥ ३ ॥ जा विन जीव सदैव कालतैं, विधिवस सुख न लहै न। अश-

१ जीव २। मोहरूपीमदिरा। ३. धोनेके लिये। ४ माता।
५. पुनीत-पवित्र। ६. शास्त्र जिनवाणी।

रन-शरन अभय दौलत अब, भजो रैन दिन जैन ॥ अब० ॥ ४ ॥

[४]

सुनि जिनवैंन, श्रवन सुख पायो ॥ सुनि० ॥ ॥ टेक ॥ नस्यो तत्त्वदुरअभिनिवेशतम, स्याद उजास कहायो। चिर विसरयो लह्यो आतम रैन[1] ॥ श्रवन० ॥ १ ॥ दह्यो अनादि असंजम दवतैं, लहि व्रत सुधा झिरायो। धीर धरी मन जीतन मैन[2] ॥ श्रवन० ॥२॥ भए विभाव अभाव सकल अब, सकल रूप चित लायो। दौल लह्यो अब अविचल चैन ॥ श्रवन० ॥ ३ ॥

(५)

नित पीज्यो धी धारी, जिनवानि सुधासम जानकै ॥ नित्य ॥ टेक ॥ वीरमुखारविन्दतैं[3] प्रगटी, जन्मजरागद[4]टारी। गौतमादि गुरु-उर घटव्यापी, परम सुरुचि-करतारी ॥ नित पीज्यो

१ आत्मरत्न २ । कामदेव । ३ महावीरस्वामीके मुखकमलसे । ४ । रोग ।

॥ १ ॥ सलिल[1] समान कलिलमल-गंजन[2], बुध-मनरंजनहारी। भंजन विभ्रम धूलि-प्रभंजन[3], मिथ्या-जलद-निवारी ॥ नित पीज्यो० ॥ २ ॥ मंगलतरू उपावन धरनी, तरनी भवजल-तारी। बंधविदारन[4] पैनी छैनी, मुक्तिनसैंनी सम्हारी ॥ नित पीज्यो० ॥ ३ ॥ स्वपर-स्वरूप-प्रकासन-को यह, भानु-किरन अविकारी। मुनिमन-कुमुद[5] निमोदन-शशिभा, शममुख[6]-सुमन-सुवारी ॥ नित पीज्यो० ॥ ४ ॥ जाको सेवत वेवत[7] निजपद, नसत अविद्या सारी। तीनलोकपति[8] पूजत जाको, जान त्रिजग-हितकारी ॥ नित पीज्यो० ॥ ५ ॥ कोटि जीभसों महिमा जाकी, कहि न सकै पवि-

१ जलके समान। २ पापरूपी मैलको नष्ट करनेवाली। ३ नष्ट करनेकेलिये भ्रमरूपीधूल व मिथ्यात्वरूपी बादलको उडानेवाली हवा (आंधी)। ४ कर्मबंधन छेदनेको तीक्ष्ण छैनी। ५ मुनियोंके मनरूपी कुमोदनीको प्रफुल्लित करनेकेलिये चन्द्रमाकी रोशनी॥ ६ समतारूपी सुख-पुष्पोंको पैदाकरनेकेलिये अच्छी वाटिका॥ ७ जानते वा अनुभव करते हैं आत्मीक रस। ८ तीन भुवनके-राजा इन्द्र नागेन्द्र नरेन्द्रादि।

धारी[1]। दौल अल्पमति केम कहैं यह, अघमउधा-
रनहारी॥ नित पीज्यो॥ ६॥

६। राग चर्चरी।

सांची तो गंगा यह वीतरागवानी, अविच्छिन्न
धारा निजधर्मकी कहानी ॥ सांची०॥ टेक॥ जामैं
अतिही विमल अगाध ज्ञानपानी। जहां नहीं
संशयादि पंककी निशानी ॥ सांची०॥१॥ सप्त
भंग जहँ तरंग, उछलत सुखदानी। संतचित्त
मराल वृन्द, रमैं नित्य ज्ञानी ॥ सांची०॥ २॥
जाके अवगाहनतैं, शुद्ध होय प्रानी। भागचंद
निहचै, घटमांहिं या प्रमानी॥ सांची०॥ ३॥

७। राग–ईमन।

महिमा है अगम जिनागमकी, ॥ महिमा है०॥
॥ टेक॥ जाहि सुनत जन भिन्न पिछानी, हम
चिनमूरति आतमकी॥ महिमा०॥१॥ रागादिक
दुखकारन जाने, त्याग बुद्धि दीनी भ्रमकी।
ज्ञानजोति जागी उर अंतर, रुचि बाढी पुनि

१ वज्रधारी–इंद्र।

शमदमकी ॥ महिमा० ॥ २ ॥ कर्मबंधकी भई निर्जरा, कारण परंपराक्रमकी। भागचंद शिव लालचलाग्यो, पहुंच नहीं है जहं जमकी ॥ महिमा० ॥ ३ ॥

८। राग—सोरठ देशी।

थांकी तो वानीमैं हो, जिन स्वपरप्रकाशक-ज्ञान ॥ थांकी तो० ॥ एकीभाव भये जड चेतन, तिनकी करत पिछान ॥ थांकी तो०॥१॥ सकल पदार्थ प्रकाशत जामैं, मुकुर तुल्य अमलान ॥ थांकी तो० ॥२॥ जगचूड़ामन शिव भये तेही, तिन कीनो सरधान ॥ थांकी तो० ॥३॥ भाग-चंद बुधजन ताहीका, निश दिन करत बखान ॥ थांकी तो० ॥ ४ ॥

९ राग—सोरठ।

म्हाकै घर जिनधुनि अब प्रगटी ॥म्हाके घर० ॥ टेक ॥ जाग्रत दशा भई अब मेरी, सुप्त-दशा विघटी। जगरचना दीसत अब मोकों, जैसी रहँ-टघटी ॥ म्हाकैं घर० ॥ १ ॥ विभ्रम-तिमिर-

हरन निज दृगकी, जैसी अँजन वटी। तातैं स्वानुभूति प्रापतितैं, परपरनति सब हटी॥ ॥ म्हाके घर० ॥ २ ॥ ताके विन जो अवगम चाहै, सो तो शठ कपटी। तातैं भागचंद निशिवासर, इक ताहीको रटी ॥ म्हारे घर० ॥ ३ ॥

१० । राग—मल्हार ।

बरसत ज्ञान सुनीर हो, श्रीजिनमुखघनसों बरसत० ॥ टेक ॥ शीतल होत सुबुद्धि मेदिनी, मिटत भवातप पीर ॥ बरसत० ॥ १ ॥ स्याद्वाद नयदामिनि दमकै, होत निनाद गँभीर ॥ बरसत ॥ २ ॥ करुना नदी बहै चहुंदिशितैं, भरी सो दोई तीर ॥ बरसत० ॥ ३ ॥ भागचंद अनुभव मंदिरको, तजत न संत सुधीर ॥ बरसत० ॥ ४ ॥

११ राग—मल्हार ।

मेघघटासम श्रीजिनवानी ॥ मेघघटा० ॥ ॥ टेक ॥ स्यात्पद चपला चमकत जामैं, बरसत ज्ञान[१] सुपानी ॥ मेघघटा० ॥ १ ॥ धर्मसस्य[२] जातैं बहु

१ पदार्थोंका ज्ञान। २ धर्मरूपी अन्न।

बांढै, शिवआनँदफलदानी ॥ मेघघटा० ॥ २ ॥ मोहनधूल दबी सब यातैं, क्रोधानल सु बुझानी ॥ मेघघटा० ॥ ३ ॥ भागचंद बुधजन केकीकुल, लखि हरखे चित ज्ञानी ॥ मेघघटा० ॥ ४ ॥

१२। लावनी।

धन्यधन्य है घड़ी आजकी, जिनधुनि श्रवन परी। तत्त्वप्रतीत भई अब मेरे, मिथ्यादृष्टि टरी ॥ धन्यधन्य० ॥टेक॥ जडतैं भिन्न लखी चिन्मूरत, चेतन स्वरस भरी। अहंकार ममकार बुद्धि पुनि, परमैं सब परिहरी ॥ धन्य धन्य० ॥ १ ॥ पापपुण्यविधिबंध अवस्था, भासी अति दुख भरी। वीतराग विज्ञानभावमय, परनति अति विस्तरी ॥ धन्य धन्य ॥ २ ॥ चाहदाह विनसी बरसी पुनि, समतामेघझरी। बाढी प्रीति निराकुलपदसों, भागचंद हमरी ॥ धन्यधन्य० ॥३॥

(१३)

समझत क्यो नहिं वानी अज्ञानी जन ॥ समझत० ॥ टेक ॥ स्यादवाद अंकित सुखदायक,

भाषी केवलज्ञानी, समझत०॥१॥जाहि लखे निर्मलपद पावै, कुमति कुगतिकी हानी। उदय भया जिहिमैं परकासी, तिहँ जानी सरधानी॥ समझत०॥ २॥ जामैं देव धरम गुरु वरने, तीनों मुकति-निसानी। निश्चय देव धरम गुरु आतम, जानत विरला प्रानी ॥ समझत० ॥ ३॥ या जगमाहि तुझे तारनको, कारण नाव बखानी। द्यानत सो गहिए निहचैसों, हूजे ज्यों शिवथानी॥ समझत० ॥ ४॥

(१४)

वे प्रानी सुज्ञानी जिन जानी जिनवानी।वे०॥ टेक॥ चंदसूर हू दूरकरैं नाहिं, अंतर तमकी हानी॥ वे०॥ १॥ पच्छ सकल नय भच्छ करत हैं, स्यादवादमैं सानी॥ वे०॥२॥ द्यानत तीन भवन मंदिरमैं दीवट एक बखानी॥ वे०॥३॥

(१५)

तारनको जिनवानी॥ तारनको०॥ टेक॥ मिथ्यात चूरै समकित पूरै, जनम जरामृतु हानी

॥ तारनको० ॥ १ ॥ जड़ता नाशै ज्ञान प्रकाशै, शिवमारग अगवानी ॥ तारनको० ॥ २ ॥ द्यानत तीनोंलोक विथाहर, परमरसायन मानी तारनको० ॥ ३ ॥

१६ । राग—आसावरी जोगिया ।

कलिमैं ग्रंथ बडे उपगारी ॥ कलिमैं० ॥ टेक ॥ देवशास्त्र गुरु सम्यक सरधा, तीनों जिनतैं धारी ॥ कलिमैं० ॥ १ ॥ तीन वरस वसुमास पंद्र-दिन, चौथाकाल रहा था । परमपूज्य महावीर स्वामि तव, शिवपुरराज लहा था ॥ कलिमैं० ॥२॥ केवलि तीन पांच श्रुतकेवलि, पीछैं गुरुनि विचारी । अंगपूर्व अब है न रहैंगे, वात लखी थिरकारी ॥ कलिमैं० ॥ ३ ॥ भविहितकारन धर्मविथारन, आचारजों बनाये । बहुतनि तिनकी टीका कीनी, अदभुत अरथ समाये ॥ कलिमैं० ॥ ४ ॥ केवलि श्रुतकेवलि यहां नाहीं, मुनिगुन प्रगट न सूझैं । दोऊं केवलि आज यही हैं, इनहीको मुनि बूझैं ॥ कलिमैं० ॥ ५ ॥ बुद्धि

प्रगट करि आप बांचिये, पूजा वंदन कीजै। दरब खरचि लिखवाय सुधायसु, पंडितजनकों दीजै ॥ कलिमैं० ॥ ६ ॥ पढतैं सुनतैं चरचा करतैं, है संदेह जु कोई। आगम माफिक ठीक करै कै, देख्यो केवलि सोई ॥ कलिमैं० ॥ ७ ॥ तुच्छबुद्धि कछु अरथ जानिकै, मनसों विंग उठाये। औधिज्ञान श्रुतज्ञानी मानों, सीमंधर मिलि आये ॥ कलिमैं० ॥ ८ ॥ ये तो आचा-रज हैं सांचे, ये आचारज झूठे। तिनिके ग्रंथ पढैं नित बंदैं, सरधा ग्रंथ अपूठे ॥ कलिमैं० ॥ ९ ॥ सांचझूठ तुम क्योंकर जान्यो, झूठ जान क्यों पूजो। खोट निकाल शुद्ध कर राखो, अवर बनावो दूजो ॥ कलिमैं० ॥ १० ॥ कौन सहामी बात चलावैं, पूछै आनमती तो। ग्रंथ लिख्यो तुम क्यों नहिं मानो, ज्वाब कहा कहि जीतो ॥ कलिमैं० ॥ ११ ॥ जैनी जैनग्रंथके निंदक, हुंडासर्पिनी जोरा। द्यानत आप जानि चुप रहिये, जगमैं जीवन थोरा० ॥ कलिमैं० ॥ १२ ॥

१ आजकल—'छपवाय छपाकर' कहना चाहिये।

१७ । राग—विलावल इकतालो ।

सारद ! तुम परसादतैं, आनँद उर आया ॥ सारद ॥ टेक ॥ ज्यो तिरसातुर जीवको, अम्रतजल पाया ॥ सारद० ॥ १ ॥ नय परमान निछेपतैं, तत्त्वार्थ बताया । भाजी भूल मिथ्यातकी, निजनिधि दरसाया ॥ सारद० ॥ २ ॥ विधना मोहि अनादितैं चहुंगति भरमाया । ताहरिवेकी विधि सबै, मुझमांहि बताया ॥ सारद० ॥ ३ ॥ गुन अनंत मति अलपतैं, मोतैं जात न गाया । प्रचुर कृपा लखि रावरी, बुधजन हरखाया ॥ सारद० ॥ ४ ॥

(१८)

भवदधि तारक नवका, जगमाही जिनबान ॥ भवदधि० ॥ टेक ॥ नयप्रमान पतवारी जाकै, खेवट आतम ध्यान ॥ भवदधि० ॥ १ ॥ मन वच तन सुधि जे भवि धारत, ते पहुंचत शिवथान । परत अथाह मिथ्यातभँवर ते, जे नहिं गहत अजान ॥ भवदधि० ॥ २ ॥ विन अक्षर जिन-

मुखतैं निकरी, परी वरनजुत कान । हितदायक बुधजनको गनधर, गूंथे ग्रंथ महान ॥ भविदधि० ॥ ३ ॥

१९ । राग—ललित जल्द तितालो ।

हो जिनवाणीजू तुम मोकों तारोगी ॥ हो० ॥ टेक ॥ आदि अंत अविरुद्ध वचनतैं, संशय भ्रम निरवारोगी ॥ हो० ॥ १ ॥ ज्यों प्रतिपालत गाय वत्सकों, त्योंही मुझको पारोगी । सनमुख कालबाध जब आवै, तब तत्काल उबारोगी ॥ हो० ॥ २ ॥ बुधजन दास बीनवै माता, या विनती उर धारोगी ॥ उलझि रह्यो हूं मोहजालमैं, ताकों तुम सुरझारोगी ॥ हो० ॥ ३ ॥

२० । राग—विलावल कनडी ।

मनकै हरष अपार, चितकै हरष अपार, वानी सुन ॥ टेक ॥ ज्यों तिरषातुर अंमृत पीवै, चातक अंबुंदधार ॥ वानीसुनि० ॥ १ ॥ मिथ्यातिमिरि गयो ततखिनही, संशय भरम निवार ।

१ बादलकी धावा बूंद ।

तत्त्वारथ अपने उर दरश्यो, जान लियो निज-सार ॥ वानीसुन० ॥ २ ॥ इंद नरिंद फनिंद पदीधर, दीसत रंक लगार । ऐसा आनँद बुध-जनके उर, उपज्यो अपरंपार ॥वानीसुनि०॥३॥

(२१)

जिनवानीके सुनेसों मिथ्यात मिटै, मिथ्यात मिटै समकित प्रगटै ॥ जिनवानीके० ॥ टेक ॥ जैसे प्रात होत रवि ऊगत, रैन तिमिर सब दूर फटै ॥ जिनवानीके०॥१॥ कालअनादिकी भूल मिटावे, अपनी निधि घटमैं प्रगटै । त्याग विभाव सुभाव सु धारै, अनुभव करतां कर्म कटै ॥जिन० ॥ २ ॥ अवर काम तजि सेवो याकों, या विन नाहिं अज्ञान घटै । बुधजन या भव परभव माही, वाकी हुंडी तुरत पटै ॥ जिनवानीके ॥ ३ ॥

२२ । रेखता ।

परम जननी धरम कथनी, भवार्णवपारकों तरनी ॥परम०॥ टेक॥ अनक्षरि[1]घोष आपतेंकी[2],

---

१ अनक्षरी धुनि । २ आप्तकी—सच्चे देवकी ।

अछरजुत गनधरों वरनी॥ परम०॥१॥ निरखे-पो-नयनें जोगनतैं, भविनको तत्त्वअनुसरनी। विथंरनी[2] शुद्ध दरसंनकी, मिथ्यातम मोहकी हरनीं परम०॥ २॥ मुकतिमंदिरके चढनेकों सुगमसीं, सरल नीसैंरनी[3]। अंधेरे कूपमें परता, जगत उद्धारकी करनी॥ परम०॥३॥ तृषाके ताप मेट-नकों, करत अमिरत वचन झरनी। कथंचितवाद[4] आचरनी, अवर एकांत परिहरनी॥परम०॥४॥ तेरा अनुभव करत मोकों, बहुत आनंद उरभरनी। फिर्‍यो संसार दुखिया हूं, गही अब आन तुम संरनी०॥ परम०॥५॥ अरज़ बुधजनकी सुनि जननी, हरो मेरी जनममरनी। नमूं करजोर मनवचतैं, लगाके सीसको धरनी॥ परम०॥६॥

२३। राग-परज मारू।

जिनवानी प्यारी लागै छै महराज, सब दुख-हारी अतिसुखकारी॥ जिनवानी०॥ टेक॥ अनँत जनमके कर्म मिटत हैं, सुनतहि तनक

१ निक्षेपनयके अनुयोगसे। २ विस्तारनी। ३ नसैनी। ४ स्याद्वाद

अवाज ॥ जिनवानी० ॥ १ ॥ षटद्रव्यनको कथन करत है, गुन-परजाय समाज। हेया ह्रेय वतावत सिगरे, कहत है काज अकाज ॥ जिनवानी० ॥ २ ॥ नय-निक्षेप-प्रमाण-वचनतैं, परमत-हरत-मिजाज । बुधजन मनवांछा सब पूरै, अमृत स्याद् अवाज ॥ जिनवानी० ॥ ३ ॥

२४ । राग—ठुमरी ।

सुनकर वानी जिनवरकी म्हारे, हरष हिये न समाय जी ॥ सुनकर० ॥ टेक ॥ काल अनादि-की तपन बुझाई, निजनिधि मिली अघाय जी ॥सुनकर० ॥ १ ॥ संशय भर्म विपर्जय नास्या, सम्यक-बुधि उपजाय जी ॥ सुनकर०॥२॥ अब निरभय पद पाया उरमैं, वंदों मनवचकायजी ॥ सुनकर० ॥ ३ ॥ नरभव सुफल भया अब मेरा, बुधजन भेंटत पांय जी ॥ सुन० ॥ ४ ॥

२५ । राग—दीपचंदी ।

म्हारा मनकै लगगई मोहकी गांठ, मैं तो जिन आगमसैं खोलों ॥ म्हारा० ॥ टेक ॥ अनादि

कालकी धुलरही गाढी, ज्ञानछुरीसों छोलों ॥ म्हारा० ॥ १ ॥ अष्टकरम ज्ञानावरणादिक, मो-आतम-ढिग जोलों । रागरोप विकलप नहिं त्यागूं, तोलों भववन डोलों ॥ म्हारा० ॥२ भेदविज्ञानकी दृष्टि भई जब, परपद नाहिं टटोलों । विषय-कषाय-वचन हिंसाका, मुखतैं कबहूं न बोलों ॥ म्हारा० ॥ ३ ॥ धन्य जथारथ वचन जिनेश्वर, महिमा बरनूं कोलों । बुधजन जिन-गुन कुसुम गूंथिकै, विधिकर कंठमैं पोलों ॥ म्हारा० ॥ ४ ॥

२६ । राग अलहिया विलावल ।

वानी जिनकी बखानी, होजी, वाकों सब मुनि मनमैं आनी ॥ वानी० ॥ टेक ॥ मिथ्याभानी सम्यकदानी, म्हारा घटमैं बसो हितदानी ॥ वानी० ॥ १ ॥ निश्चय व्योहार जितावनहारी, नय निक्षेपप्रमानी । तुहि जाने विन भववन भटक्यो, करहु कृपा सुखदानी ॥वानी०॥२॥ जिते तिरे भवि भवदधिसेती, तिन निश्चय उर आनी ।

अब हूं तरि हैं बुधजन तुमतैं, अंकित स्याद निशानी ॥ वानी० ॥ ३ ॥

भैया भगवतीदासजी कृत।

२७-राग-धनाश्री।

जिनवानी को को नहिं तारे ॥ जिनवानी०॥ टेक ॥ मिथ्यादृष्टी जगत निवासी, लहि समकित निजकाज सुधारे। गौतम आदिक श्रुतके पाठी, सुनत शब्द अघ सकल निवारे ॥ जिनवानी ० ॥१॥ परदेशी राजा छिनवादी[1], भेद सु तत्त्व-भरम सब टारे। पंच महाव्रत धर तू भैया, मुक्तिपंथ मुनिराज सिधारे ॥ जिनवानी०॥ २ ॥

२८। राग-धनाश्री।

जिनवानी सुन सुरत संभारे ॥ जिनवानी०॥ टेक ॥ सम्यग्दृष्टी भवननिवासी, गहि व्रत केवल तत्त्व निहारे ॥ जिनवानी० ॥ १ ॥ भये धरनेंद्र पद्मावति पलमें, युगल नाग प्रभु पास उबारे ॥ बाहूबलि बहुमान धरत सो, सुनत वचन शिव

१ पाद्यणिकवादी बोधमती।

सुख अवधारे ॥जिनवानी०॥२॥ गनधर सबहि प्रथम धुनि सुनकर, दुविध परिग्रहसंग निवारे। गजसुकुमाल बरष बसुहीके, दीक्षा गहत करम सब टारे ॥ जिनवानी० ॥ ३ ॥ मेघकुँवर श्रेणिकको नंदन, वीरवचन निज भवहिं चितारे, औरहु जीव तरे जे भैया, ते जिनवचन सबै उपगारे ॥ जिनवानी० ॥ ४ ॥

२९ । राग-ठुमरी झिझोटी ।

जिनधुनि सुनि दुरमति नसि गईरे, नय स्यादवादमय आगमभैं ॥ टेक ॥ विभ्रम सकल तत्त्व दरसावत, यह तौ भविजनके मन वशगई रे ॥ नय० ॥ चिर-भ्रम-ताप-निवारण-कारण, चंद्रकलासी दरसगईरे ॥ नय० ॥ २॥ अघमल पावनकारण 'मानिक' मेघघटासी बरसि गई रे ॥ नय० ॥ ३ ॥

(३०)

जब वानी खिरी महावीरकी तब,आनंद भयो अपार हो ॥ सब मानी मन ऊपजी हो, धिकधिक यह संसार ॥ जब० टेक ॥ बहुतनि समकित आदरचो हो, श्रावक भये अनेक। घर तजिके बहु बन गये हो, हिरदै धरचो विवेक ॥जब०॥१
केई भावैं भावना हो, केई गहैं तप घोर। केई जपैं प्रभु नामको, भाजैं कर्म कठोर ॥ जब०॥२॥
बहुतक तप करि शिव गये हो, बहुत गये सुर-लोय। द्यानत तो वानी सदा हो, जयवंती जग होय॥ जब०॥ ३ ॥

(४)

गुरुस्तुति-पदसंग्रह।

(१) रेखता।

जिन रागरोष त्यागा वह सतगुरू हमारा ॥ ॥ जिन० ॥ टेक ॥ तज राजरिद्ध तृणवत, निज काज सँभारा ॥ जिन० ॥ १ ॥ रहता वह वन खंडमैं, धरि ध्यान कुठारा। जिन मोह महातरु को, जडमूल उखारा ॥ जिन० ॥ २ ॥ सर्वांग तज परिग्रह, दिग अंवर धारा। अनंतज्ञान गुणसमुद्र, चारित्रभंडारा ॥ जिन०॥३॥ शुक्लाग्निको प्रजालकैं, वसुकर्मबन जारा। ऐसे गुरु को दौल है, नमोस्तु हमारा ॥ जिन० ॥ ४ ॥

[२]

घनि मुनि जिनकी, लगी[1] लौ शिव ओरनै[2] ॥ घनि० ॥ टेक ॥ सम्यग्दर्शनज्ञानचरननिधि, धरत हरत भ्रमचौरनै ॥ धनि० ॥१॥ यथाजात[3]

---

१ लगन। २ 'नै' विभक्ति सब जगह 'को' के अर्थमें है।
३ नग्नदिगम्बर मुद्रा।

मुद्राजुत सुंदर, सदन विजन गिरिकोरनै। तृन-कंचन-अरिस्वजन गिनत सम, निंदन और निहोरनै[1] ॥ धनि० ॥ २ ॥ भवसुखचाह सकल तजि बल साजि, करत द्विविध तप घोरनै। परम विरागभाव-पैवितैं[2] नित, चूरत कर्मकठोरनै[3] ॥ धनि० ॥ ३ ॥ छीन शरीर न हीन चिदानन, मोहतमोहझकोरनै। जग-तप-हर भविकुमुद[4]-निशाकर, मोदन दौलचकोरनै ॥ धनि० ॥ ४ ॥

(३)

धनि मुनि जिन यह, भाव पिछाना ॥ धनि० ॥ टेक ॥ तनव्यय वांछित प्रापति मानी, पुण्य उदय दुख जाना ॥ धनि० ॥ १ ॥ एक विहारि सकल-ईश्वरता[5], त्याग महोत्सव माना। सब सुख कों परिहार सार सुख, जानि रागरुष भाना ॥ धनि० ॥ २ ॥ चित्स्वभावको चिंत्य प्रान निज,

---

१ स्तुति—वा प्रसंशाको। २ वज्रसे। ३ कर्मरूपी कठोर पर्वत-कों। ४ भव्यरूपी कमोदिनीकूं खिलानेवाले चंद्रमा। ५ ऐश्वर्य।

विमल-ज्ञान-दृगसाना। दौल कौन सुख जान लह्यो तिन, कियो शांतिरस पाना ॥ धनि०॥३॥

(४)

धनि मुनि निज आतम हित कीना। भव असार तन असुचि विषयविष, जान महाव्रत लीना धनि मुनि० ॥टेक॥ एकाविरारी परिगह छारी, परिसह सहत अरीना। पूरव तन तप-साधन मान न, लाज गनी परवीना ॥धनिमुनि०॥१॥ शून्यसदन गिरगहनगुफामैं, पद्मासन आसीना। परभावनतैं भिन्न आप पद, ध्यावत मोहविहीना॥ धनिमुनि० ॥ २ ॥ स्वपरभेद जिनकी बुधि निजमैं, पागी बाह्य लगी ना। दौल तास पद-वारिज-रँजनैं[2], किस[3] अघ[4] करे न छीना ॥ धनि मुनि०॥ ३ ॥

५। भावन।

कबधों मिलै मोहि श्रीगुरु मुनिवर, करि हैं

१ सम्यग्ज्ञानसम्यग्दर्शनसें सन गये। २ चरणकमलोंकी धूलिने ३ किसके। ४ पाप।

भवदधिपारा हो ॥ कवधों० ॥ टेक ॥ भोग-उदास जोग जिन लीनो, छांडि परिग्रह-भारा हो। इंद्रियदमन वमनमद कीनो, विषयकषाय-निवारा हो ॥ कवधों० १ ॥ कंचन काच बरा-बर जिनकै, निंदक वंदक सारा[1] हो। दुद्धर तप तपि सम्यक निजघर, मनवचतनकर धारा हो ॥ कवधों० ॥ २ ॥ ग्रीषमगिरि हिम सरिता-तीरैं, पावस तरुतर ठारा हो। करुणा भीनें[2] चीन त्रसथावर, ईर्यापंथ समारा हो ॥ कवधों० ॥३॥ मार[3]-मार व्रतधार शीलदृढ, मोहमहामल टारा हो। मास मास उपवास वास वन, प्रासुक करत अहारा हो ॥ कवधों० ॥ ४ ॥ आर्त[4]रौद्र[5]लेश नहिं जिनकैं, धर्म[6]-शुक्ल[7] चितधारा हो। ध्याना-रूढ गूढ निज-आतम, शुधउपयोग विचारा हो ॥ कवधों० ॥ ५ ॥ आप तरहिं अवरनकों तारहिं, भवजलसिंधु अपारा हो। दौलत ऐसे

१ सब। २ करुणारससे भीजे हुये। ३ कामदेवको मारकर। ४ आर्तध्यान। ५ रौद्रध्यान। ६ धर्मध्यान। ७ शुक्लध्यान।

जैनजतीको, नितप्रति ढोक हमारा हो ॥ कव-
धों० ॥ ६ ॥

६।

धनधन जैनी साधु अबाधित, तत्त्वज्ञानवि-
लासी हो ॥ धनधन० ॥ टेक ॥ दर्शन बोधमयी
निज मूरति, अपनी जिनको भासी हो । त्यागी
अन्य समस्त वस्तुमें, अहंबुद्धि दुखदा सी हो ॥
धनधन० ॥ १ ॥ जिन अशुभोपयोगकी पर-
नति, सत्तासहित-विनासी हो । होय कदाचि
शुभोपयोग तो, तहँ भी रहत उदासी हो ॥ धन-
धन० ॥ २ ॥ छेदत जे अनादिदुखदायक,
दुविध-बंधकी फाँसी हो । मोह क्षोभ विन जिनकी
परनति, विमल मयंक-कॅलासी[1] हो, धनधन० ॥ ३ ॥
विषय-चाहदवँदाह[2]—बुझावन, साम्यसुधारसरा-[3]
सी हो । भागचंद ज्ञानानंदी पद, साधत सदा
हुलासी[4] हो ॥ धनधन० ॥ ४ ॥

१ निर्मल चंद्रमाकी कला समान । २ विषयोंकी चाहरूपी दावा-
ग्निको बुझानेके लिये । ३. समतारूपी अमृतरसकी राशि । ४ प्रसन्न ।

७ राग–सारंग।

श्रीमुनि राजत समतासंग। कायोत्सर्ग समाहित अंग॥ श्रीमुनि०॥ टेक॥ करतैं नहिं कछु कारज तातैं, आलंवित भुज कीन अभंग। गमनकाज कछु हू नहिं तातैं, गति तजि छाके निजरसरंग॥ श्रीमुनि०॥ १॥ लोचनतैं लखिवो कछु नाहीं, तातैं नाशादृग अचलंग। सुनिवे जोग रह्यो कछु नाहीं, तातैं प्राप्त इकंत सुचंग॥ श्रीमुनि०॥ २॥ तहँ मध्याह्नमाहि निज ऊपर, आयो उग्रप्रताप पतंग[1]। कैधौं[2] ज्ञानपवनवलप्रज्वलित, ध्यानानलसौं उछलि फुलिंग॥ श्रीमुनि०॥ ३॥ चित्त निराकुल अतुल उठत जहँ, परमानंद-पियूष-तरंग, भागचंद ऐसे श्रीगुरुपद, वंदत मिलत स्वपद उत्तंग॥ श्रीमुनि०॥ ४॥

८।

ऐसे जैनी मुनिमहाराज, सदा उर मो वसो

१ सूरज है। २ मानों ज्ञानरूपी पवनके वलसे जलाई हुई। ३। ध्यानरूपी अग्निका फुलिंगा ही है।

॥ ऐसे० ॥ टेक ॥ जिन समस्त परद्रव्यनिमाही, अहंबुद्धि तज दीनी । गुनअनंत ज्ञानादिक मम पुनि, स्वानुभूति लखलीनी ॥ ऐसे० ॥ १ ॥ जे निजबुद्धिपूर्वरागादिक, सकल विभाव निवारैं पुनि अबुद्धिपूर्वक[1] नाशनको, अपनी शक्ति सम्हारैं ॥ ऐसे० ॥ २ ॥ कर्म-शुभाशुभ-बंध विषयमैं, हर्ष विषाद न राखैं । सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरन-तप,-भाव-सुधारस चाखैं ॥ ऐसे जैनी० ॥ ३ ॥ परकी इच्छा तजि निजबल सजि, पूरव कर्म खिरावैं । सकल कर्मतैं भिन्न अवस्था, सुखमय लखि चितचावैं ॥ ऐसे० ॥ उदासीन शुद्धोपयोगरत, सबके दृष्टा ज्ञाता । बाहिज रूप नगन समता कर, भागचंद सुखदाता ॥ ऐसे० ॥ ५ ॥

९ । राग—जंगला ।

शांतिवरन मुनिराई वर लखि ॥शांति०॥टेक॥ उत्तर गुनगनसहित मूलगुन,-सुभग बरात

१ अबुद्धिपूर्वक हुये रागद्वेषादि भावोंको नाश करनेके लिये ।

सुहाई ॥ शांति० ॥ १ ॥ तपरथपै आरूढ अनूपम, धर्म सुमंगलदाई ॥ शांति० ॥ २ ॥ शिवरमनीको पाणिगहन कर, ज्ञानानंद उपाई ॥ शांति० ॥ ३ ॥ भागचंद ऐसे बनराको, हाथ जोरि शिरनाई ॥ शांति० ॥४॥

१० । राग खमाच।

ज्ञानी मुनि हैं ऐसे स्वामी गुनरास ॥ ज्ञानी० ॥ टेक ॥ जिनके शैल नगर मंदिर पुनि, गिरि कंदर सुखवास ॥ ज्ञानी० ॥१॥ निःकलंक परयंक शिला पुनि, दीपमृगांक[2]-उजास ॥ ज्ञानी० ॥ २ ॥ मृग किंकर करुणा वनिता पुनि, शील सलिल तप ग्रास ॥ ज्ञानी० ॥ ३ ॥ भागचंद ते हैं गुरु हमरे, तिनहीके हम दास ॥ज्ञानी०॥ ४ ॥

११ । राग-खमाच

श्रीगुरु हैं उपगारी ऐसे, वीतराग गुनधारी वे । श्री गुरु० ॥ टेक ॥ स्वानुभूति-रमनी सँग कीड़ैं[3], ज्ञानसंपदा भारी वे ॥ श्रीगुरु० ॥ १ ॥

१ दुल्हाको। २ चंद्रमाका उजाला। ३ खेलैं।

ध्यानपींजरामैं जिन रोक्यो, चितखग चंचल चारी वे ॥ श्री गुरु० ॥ २ ॥ तिनके चरनसरोरुह[1] ध्यावै, भागचंद अघटारी वे ॥श्रीगुरु०॥३॥

१२ । राग–परज ।

सम-आराम-विहारी, साधुजन सम-आराम विहारी ॥टेक॥ एक कल्पतरु पुष्पनसेती जजत भक्ति विस्तारी । एक कंठविच सर्प नाखिया, क्रोध दर्पजुत भारी ॥ राखत एक वृत्ति दोउनिमैं सबहीके उपगारी ॥ सम आराम० ॥ १ ॥ सारंगी[2] हरिबाल[3] चुँखावै, पुनि मराल मंजारी । व्याघ्रबाल[4]कर सहित नंन्दिनी[5], व्याल[6] नकुलकी नारी ॥ तिनके चरन कमल आश्रयतैं, अरितां[7] सकल निवारी ॥सम-आराम० ॥२॥ अक्षय अतुल प्रमोदविधायक, ताको धाम अपारी । काम धराविचगढी सो चिरतैं, आतमरिधि अविकारी॥ खनत ताहि लेकर करमैं जो, तीक्षणबुद्धि कुदारी

१ चरनकमल । २ मृगी । ३ सिंहके बचेको । ४ वाघके बचेको । ५ गइया । ६ सर्प । ७ दुसमनी । ८ तेज-प्रकाश ।

॥ सम-आराम० ॥ ३ ॥ निज शुद्धोपयोगरस चाखत, परममता न लगारी । निज सरधान ज्ञानचरणात्मक, निश्चयशिवमगचारी ॥ भागचंद ऐसे श्रीयति प्रति, फिर फिर ढोक हमारी ॥सम-आराम० ॥ ५ ॥

१३ । राग—सोरठ मल्हारमें ।

गिरिवनवासी मुनिराज, मनवसिया म्हारै हो ॥ गिरि०॥टेक॥ कारन विन उपगारी जगके, तारन तरन जिहाज ॥ गिरिवन०॥ १ ॥ जनम जरामृत-गद-गंजनको, करत-विवेक-इलाज ॥ गिरिवन० ॥ २ ॥ एकाकी जिम रहत केशरी, निरभय स्वगुन समाज ॥गिरिवन० ॥३॥ निर्भूषन निर्वसन निराकुल, सजि रतनत्रय साज ॥ गिरिवन० ॥४॥ ध्यानाध्ययनमाहिं तत्पर नित, भागचंद शिवकाज ॥ गिरिवन० ॥ ५ ॥

१४ । राग—कालिंगडा

ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं ॥ऐसे० ॥टेक॥ आप तरैं अरु परकों तारैं, निष्प्रेही निरमल हैं

॥ ऐसे०॥ १ ॥ तिलतुषमात्र संग[1] नाहिं जिनकै, ज्ञान-ध्यान-गुनबल हैं ॥ ऐसे० ॥२॥ शांत दिगंबरमुद्रा जिनकी, मंदरतुल्य अचल हैं ॥ ऐसे० ॥३॥ भागचंद तिनको नित चाहै, ज्यों कमलनिको अलि[2] हैं ॥ ऐसे०॥ ४ ॥

१५ । राग–मल्हार ।

वे मुनिवर कब मिलि हैं उपगारी, वे मुनिवर ॥ टेक ॥ साधु दिगंबर नगन निरंबर, संवर-भूषन-धारी ॥ वे मुनिवर० ॥१॥ कंचन काच बराबर जिनकैं, ज्यों रिपु त्यों हितकारी । महल मसान मरन अरु जीवन, सम गरिमा[3] अरु गारी[4] ॥ वे मुनिवर० ॥ २ ॥ सम्यग्ज्ञान-प्रधान-पवन-बल-तपपावकपरजारी[5] । शोधत जीव-सुवर्ण सदा जे, कायकारिमा[6] टारी ॥ वे मुनिवर० ॥ ३ ॥ जोरि जुगल कर भूधर विनवै, तिनपदढोक

१ परिग्रह । २ भंवरा । ३ गरिमा–बडाई । ४ गाली । ५ जलाकर । ६ कायरूपी कालिमा ।

हमारी । भाग उदय दर्शन जब पाऊं, ता दिनकी बलिहारी ॥ वे मुनिवर० ॥ ४ ॥

१६ । राग—सोरठ ।

सो गुरुदेव हमारा है साधो ॥ सो गुरु०॥ टेक
जोग-अगनिमैं जो थिर राखैं, यह चित चंचल, पारा है ॥ सो गुरु० ॥१॥ करन[1]-कुरंग खरे मद माते, जप तप खेत उजारा[2] है । संजम-डोर-जोर वश कीने, ऐसा ज्ञान-विचारा है ॥ सो गुरु०॥२ जा लक्ष्मीको सब जग चाहै, दास हुआ जग सारा है । सो प्रभुके चरननकी चेरी, देखो अचरज भारा है ॥ सो गुरु०॥३॥ लोभ-सरपके कहर ज़हरकी, लहरि गई दुख टारा है । भूधर ता रिखि[3]का शिखँ[4] हूजे, तब कछु होय सुधारा है ॥ सो गुरु० ॥ ४ ॥

१७ । राग—मल्हार ।

परम गुरु बरसत ज्ञान-झरी ॥ परम गुरु० ॥ टेक

---

१ इंद्रियरूपी हिरन । २ उजाड दिये, नष्ट करदिये । ३ ऋषि-मुनिका । ४ शिष्य ।

हरखि हरखि बहु गरजि गरजिकैं, मिथ्या तपन हरी ॥ परम गुरु०॥ १ ॥ सरधा-भूमि सुहावनि लागै, संशय वेल हरी । भविजनमनसरवर भरि उमड़े, समझ-पवन सियरी ॥ परम गुरु०॥ ॥ २ ॥ स्याद्वादनयविजुरी चमकत, परमत-शिखरपरी। चातक मोर साधु श्रावककै, हृदय सुभक्ति भरी ॥ परम गुरु०॥३॥ जप-तप-परमानंद बढ्यो है, सु समय नींव धरी ॥ द्यानत पावन पावस आयो, थिरता शुद्ध करी ॥ परम गुरु० ॥ ४ ॥

(१८)

गुरु समान दाता नहिं कोई ॥गुरु० ॥ टेक ॥ भानुप्रकाश न नाशत जाको, सो अँधियारा डारै खोई ॥गुरु०॥१॥ मेघसमान सबनपै बरसै, कछु इच्छा जाकै नहिं होई। नरकपशूगति-आगमाहितैं, सुरगमुकतसुखथापै सोई ॥ गुरु० ॥ २ ॥ तीनलोकमंदिरमैं जानो, दीपक सम परकाशक लोई । दीपतलैं अँधियार भर्यो

है, अंतरबाहिर विमल है जोई ॥ गुरु० ॥ ३ ॥ तारनतरनजिहाज सुगुरु हैं, सब कुटुंब डोबै जगतोई। द्यानत निशिदिन निर्मल मनमैं, राखो गुरुपदपंकज दोई ॥ गुरु० ॥ ४ ॥

(१९)

धनि ते साधु रहत वनमाहीं ॥धनि०॥ टेक॥ शत्रु मित्र सुख दुख सम जानैं, दर्पन देखत पाप पलाँहीं ॥ धनि०॥१॥ अट्ठाईस मूलगुण धारहिं, मनवचकायचपलता नाहीं। ग्रीषम[1] शैल-शिखर[2] हिम[3]-तटनी[4], पावस वर्षा अधिक सहाहीं ॥ धनि० ॥ २ ॥ क्रोध मान छल लोभ न जानैं, रागरोष नाहीं उनपाँहीं। अमल अखंडित चिद्-गुणमंडित[5], ब्रह्मज्ञानमैं[6] लीन रहांहीं ॥ धनि० ॥ ३ ॥ तेई साधु लहैं केवलिपद, आठ-काठ-दहि[7] शिवपुर जांहीं। द्यानत भवि तिनके गुण गावैं,

१-२ गर्मीकी ऋतुमें पर्वतकी चोटी पर। ३ शीत ऋतुमें। ४ नदीके किनारेपर। ५ आत्मीक गुणों सहित। ६ आत्मज्ञानमें ७ अष्टकर्मरूपी ईंधनको जलाकर।

पावैं शिवसुख दुःख नशाहीं ॥ धनि ते० ॥४॥

(२०)

धनि धनि ते मुनि गिरिबनवासी ॥ धनिधनि० ॥ टेक ॥ मार[1]मार जगजार[2] जार ते, द्वादशव्रत तप-अभ्यासी ॥ धनि धनि० ॥ १ ॥ कौड़ीलाल[3] पास नहिं जाकै, जिन छेदी आशा[4]पासी । आतम आतम पर पर जानै, द्वादश तीन प्रकृति नासी ॥ धनि धनि० ॥ २ ॥ जा दुख देख दुखी सब जग है, सो दुख लखि सुख है तासी । जाकों सब जग सुख मानत हैं, सो सुख जान्यो दुख-रासी ॥ धनि धनि० ॥ ३ ॥ बाहिज भेष कहत अंतर गुण, सत्यमधुरहितमितभाषी । द्यानत ते शिवपंथ[5]-पथिक हैं, पांवपरत पातक जासी ॥ धनि धनि० ॥ ४ ॥

२१ ।

भाई धनि मुनि ध्यान लगायकैं खरे हैं ॥ भाई

१ कामदेवकूं मारकर । २ जगतके जालकूं जलाकर । ३ रतन । ४ आशारूपी फांसी । ५ मोक्षपंथके रस्तागीर हैं ।

॥ टेक ॥ मूसलधारसी धार परै है, विजुली कड़-कत शोर करै है ॥ भाई० ॥ १ ॥ रात अँध्यारी लोक डरै हैं, साधुजी अपने कर्म हरै हैं । भाई० ॥ २ ॥ झंझांपवन[1] चहूंदिश बाजैं, बादर घूम घूम अति गाजैं ॥ भाई० ॥ ३ ॥ डसैं मशक बहु दुख उपराजैं, द्यानत लाग रहे निज काजैं ॥ भाई० ॥ ३ ॥

२२ ।

मुनि वन आए बना, शिवबनरी ब्याहनको उमगे, मोहित भविकजना ॥ मुनि० ॥ टेक ॥ रत्नत्रय शिर सेहरा बांधैं, सजि संवर वसना । संग बराती द्वादश भावन, अरु दशधर्मपना ॥ मुनि० ॥ १ ॥ सुमति नार मिलि मंगल गावत, अजपा गीत घना । रागरोपकी आतिसबाजी, छूटाति अगनिकना ॥ मुनि० ॥ २ ॥ दुविधकर्मका दान बटत है, तोषित लोकमना । शुक्लध्यानकी अगनि जलाकर, होमैं कर्म घना ॥ मुनि० ॥ ३ ॥

१ बरसा सहित आंधी आनेको झंझावात कहते हैं ।

शुभबेल्यां शिवबनरि वरी मुनि, अदभुत हरष बना। निजमंदिरमैं निश्चल राजत, बुधजन त्यांगसना ॥ मुनि० ॥ ४ ॥

२३। राग-मल्हार।

देखे मुनिराज आज जीवनमूल वे ॥ देखे०॥ टेक ॥ शीस लगावत सुरपति जिनकी, चरन कमलकी धूर वे ॥ देखे० ॥ १ ॥ सूखी सरिता नीर बहत है, वैर तज्यो मृग सूर वे। चालत मंद सुगंध पवनवन, फूल रहे सब फूल वे ॥ देखे० ॥२॥ तनकी तनक खबर नहिं तिनको, जर जावो जैसैं तूल[1] वे। रंकरावतैं रंच न ममता, मानत कनकको धूल वे ॥ देखे० ॥ ३ ॥ भेद करत हैं चेतन जडको, मेटत हैं भवि-भूल वे। उपकारक लखि बुधजन उरमैं, धारत हुकुम कबूल वे ॥ देखे० ॥ ४ ॥

२४।

मनुवो लागिरह्योजी, मुनिपूजा विन रह्यो

१. रुईकी तरह।

न जाय ॥ मनुवो ० ॥ टेक ॥ कोटि बात पिय क्यों कहो, हूं मानूं नहिं एक। बोधमती गुरु ना नमूं, याही म्हारै टेक ॥ मनुवो०॥१॥ जन्म-मृत्यु सुख दुख विपति, वैरी मीत समान। राग रोप परिगह-रहित, वे गुरु मेरे जान ॥ मनुवो० ॥२॥ सुरसिवदायक जैन गुरु, जिनकै दया प्रधान। हिंसक भोगी पातकी, कुगतिदाय गुरु आन ॥ मनुवो० ॥ ३ ॥ खोटी कीनी पीव तुम, मुनिके गल अहि डारि। थे तौ नरकां जायस्यो वे नहिं काढ़ैं डारि ॥ मनुवो० ॥ ४ ॥ श्रेणिक सँगतैं चेलणा, छायक समकित धार। आप सातमा नरक हरि, पहुंचे प्रथममँझार ॥ मनुवो० ॥५॥ तीर्थंकरपद धारसी, आवत कालमझार। बुधजन पद वंदन करै, मेरी विपदा टार ॥ मनुवो० ॥ ६ ॥

२५। राग—मल्हार।

माई आज महामुनि डोलैं। मतिवंता गुनवंत काहुसों, बात कछू नहिं खोलैं ॥ माई ॥टेक॥ तू

नहिं आई ये घर आये, चरन कमल अब धोलैं। विधि पड़गाहे असन कराये, निधि वध गई अतोलै ॥ माई० ॥ २ ॥ नगर जिमाया कोइ न रहाया, यों अचरज कहों कोलैं ॥ माई०॥ ३ ॥ धन्य मुनीसर धन यह दानी, बुधजन यों मुख बोलै ॥ माई० ॥ ४ ॥

२६। राग जंगला।

वीतराग मुनिराजा मोकों दरस बताजा, दरस बताजा धर्म सुनाजा ॥ वीतराग० ॥टेर॥ परिगहरत न नगन छवि थांकी, तारन तरन जिहाजा ॥वीतराग०॥१॥ जीवन मरन विपति अर संपति, दुख सुख किंकर राजा। सबमैं समता रमता निजमैं, करत आपनों काजा ॥ वीतराग० ॥ २ ॥ तनकारागृह भोग भुजँगसा, परिकर शत्रुसमाजा। ऐसी जानि त्याग वन बसिकै, राखत धर्म इलाजा ॥ वीतराग० ॥३॥ कर्मविनासी मुनिवनवासी, तीनलोक-शिर-

१ बंध गई।

ताजा। आपसारिखा कर बुधजनकों, तुमको मेरी लाजा ॥वीतराग० ॥४॥

२७। राग कालिंगडा।

जो मोहि मुनिको मिलावै ताकी बलिहारी, जो०॥टेक॥ मिथ्याव्याधि मिटत नहिं उनविन, वे निज अमृत पावै ॥जो०॥१॥ इंदफनिंदनरिंद तीनो मिलि, उन—चरना शिरनावै। सब परिहारी परउपगारी, हितउपदेश सुनावै।जो० ॥२॥ तजि सब विकलप, निजपदमाहीं, निशि दिन ध्यान लगावै। जन्मसुफल बुधजन तब ह्वै है, जब छवि नैन लखावै॥ जो० ॥ ३ ॥

२८। राग मल्हार

झूम झूम बरसै बदरवा, मुनिवर ठाड़े तरुवर-तरवा ॥ झूमझूम० ॥टेक॥ कारीघटा तैसी बीज[1] डरावैं, वे निधड़क मानों काठ पुतरवा ॥झूमझूम ॥१॥ बाहर को निकसै ऐसेमैं, बडे बडे घरहू गलि गिरवा। झंझावात[2] बहै अति सियरी, वे न हिलैं

१ बिजली। २ बरसा सुहित आंधी।

निजबलके धरवा ॥ लूमझूम०॥२॥ देख उन्हें जो (कोई) आय सुनावैं, ताकीतो करहू न्योछरवा। सफल होय शिर पांयपरसिकैं, बुधजनके सब कारज सरवा ॥लूमझूम० ॥३॥

२९। राग—सोरठमें ठुमरी।

निरग्रंथ यती मन भावै, कुगुरादिक नाहिं सुहावैं ॥ निरग्रंथ०॥ टेक ॥ वीतराग विज्ञान-भावमय, शिवमारग दरसावैं ॥ निरग्रंथ० ॥१॥ रत्नत्रय-भूषण युत सोहत, निज अनुभूति रमावैं। निर० ॥१॥ विनकारण जगबंधु जगतगुरु, हित उपदेश सुनावैं। निरग्रंथ०॥४॥ कर्मजनित आचार त्यागकैं, परमातमको ध्यावैं ॥ निरग्रंथ०॥ ५ ॥ मानिक भवि सतगुरु सुचंद्रलखि, आकुल ताप बुझावैं ॥ निरग्रंथ० ॥६॥

३०। राग—गजल रेखता।

जिन रागरोष त्यागा, सो सतगुरु है हमारा। तजि राजरिद्ध तृणवत, निजकाज निहारा ।टेक रहता है वो वनखंडमें, धरि ध्यान-कुठारा। जिन

महामोह तरुको, जड़मूल उखाड़ा ॥जिन० १॥ जगमाहिं छा रहा है, अज्ञान अँधियारा। विज्ञान मान तमहर, घर माहिं उजारा ॥ जिन० ॥२॥ सर्वांग तजि परिग्रह, दिग अंबर धारा। रत्नत्रयादि गुणसमुद्र, शर्मभंडारा॥ जिन०॥३॥ विधि उदय शुभ अशुभमैं, हर्ष अरति निवारा। निज अनुभवरसमाहिं, कर्ममलको पखारा॥ जिन० ॥ ४ ॥ पर-वस्तु-चाह-रोकि, पूर्व-कर्म संहारा। परद्रव्यसे जु भिन्न, चिदानंद-निहारा॥ जिन० ॥ ५॥ शुक्लाग्निको प्रजालि, कर्मकानन जारा। तिनमुनिकों देख 'मानिक' नमस्कार उचारा॥ जिन० ॥ ६ ॥

(३१)

वनमैं नगन तन राजै, योगीश्वर महराज, ॥टेक इक तो दिगंबर स्वामी, दूजो कोई नाहिं साथ॥ वनमैं ॥ १ ॥ पांचों महाव्रतधारी, परिसह जीतै बहु भाँत॥ वनमैं०॥२॥ जिनने अतनमदमार्यो,

१ कामदेवका मद मारा।

हिरदै धार्‌यो वैराग ॥ वनमैं०॥ ३॥ (एजी) रजनी भयानककारी, विचरै व्यंतर वैताल ॥ वनमैं ॥ ॥ ४ ॥ बरसै विकट घनमाला, दमकै दामिनि चालै वाय ॥ वनमैं० ॥ ५ ॥ सरदी कपिन मद गालै, थरहर कांपैं सब गांत ॥ वनमैं० ॥ ६ ॥ रविकी किरन सर सोखैं, गिरिपै ठाड़े मुनिराज ॥ वनमैं ॥ ७ ॥ जिनके चरनकी सेवा, देवै शिव-सुख साज ॥ वनमैं० ॥ ८ ॥ अरजी जिनेश्वर येही, प्रभुजी राखो मेरी लाज ॥ वनमैं० ॥ ९ ॥

३२ । रंगत–लंगड़ी ।

परम वीतरागी गृहत्यागी, शिवभागी निरग्रंथ महान । अचरजकारी जिन्होंकी, परनति जानैं सकल जहाँन ॥ टेर ॥ त्रस थावर हिंसा तज दीनी, झूट वचन नहिं भाखत हैं । परिगह त्यागी दया,–खटकायतनी उर राखंत हैं ॥ चोरी तजै महादुखदाई, परसनेह सब नांखत हैं । जिनमैं रचिकै गुरुजी, ब्रह्मचर्यरस चाखत हैं ॥

(३३)

रेखता-निरखिकैं पग धरैं भूपर, मधुर हित मित वच कहैं। आहार शुद्ध सम्हाल वृष-उपक करन निरखि धरैं गहैं॥ मलमूत्र हू निर्जंतु भुवि, एकांत मय छेपैं सही। पटवंदनादिक अवसि कारज, नित करैं वृपकी मही॥ पंचेन्द्रियको बसमैं राखैं, तिनको वर्णन सुनो सुजान॥अचरज०॥

सुंदररूप सची रतिरमनी, वा राक्षसनी भेष कराल। सुखदुखकारी अवर जे, जड चेतनके भेप कराल॥ कोमल कठिन दुगंध सुगंधित, रसनीरस वच शुद्ध सवाल। समकर जानैं न जानैं, पर परनतिकों अपनी चाल।

सैर-दृष्टि सबदिस छांड़िकै, नासाग्रमैं थिरता लही। मन विपय अवर कषाय तजि, शुभध्यानमैं थिरता गही॥ दृढ धारि आसन मौनसेती, शुद्ध आतम ध्यावते। तनमनवचनवश करैं गुरु वे, सुरग-शिव-सुख पावते॥ एकबार भोजन आदिक अठ,-वीस मूल गुन-धारक जान॥ अचरज०॥ २॥

सूख जाय सरवरपयरीता, पंथी पथ तज दीना है। ग्रीषम ऋतुमैं चील निज, अंडनको तज दीना है॥ जलचारी अरु पवन अहारी, नभ चारी इम कीना है। तज निज थलको ज़िन्होंने, सघन वनाश्रय लीना है॥ सेर–ऐसी विकट गरमी विषै गिरि,-गुफा वनकों छोड़कैं। शिल-शैलशृंग-समाधि-धारी, आस जीकी मोड़कैं॥ जिनके सुभाननभानसनमुख, भासमान न भान हैं। बहुज्योति मूरत धार धारा, इन समान न आन हैं॥ एकबार जिनके दर्शनतैं सभी निकट आवैं कल्यान॥ अचरज०॥ ३॥

घन गरजे लरजे अति दादुर, मोर पपैया शोर करैं। चपला चमकै पवन चालै, जलधारा अति ज़ोर परै॥ तरुतल निवसैं सुगुरु साहसी, अच-ल अंग है ध्यान धरैं। शीतकालमैं नीरतट, तपसी तप अति घोर करैं॥ सेर–बहु रिद्धि सिद्धि सुभावथिरता, ज्ञाननिधि या भवविषै। पावैं तपस्वी सुर असुरपद, मोक्षपद परभवविषै॥

ऐसे गुरुकी भक्ति करि वहु, नमों मनवच कायसों ॥ गुरुदेव मोहि छुडाय दीज्यो, मोहि रूपी वायसों ॥ कुगुरु त्यागकर सेव सुगुरुकी धरहु जिनेश्वरधर्म महान ॥अचरजकारी०॥४॥

२४। सुगुरुस्वरूपलावनी रंगत–लंगड़ी।

कहूं चिह्न कछु सुनो सुगुरुके जिनशासन अनुसारी हैं। भ्रमतमहारी जिन्होंके, वचन स्वपरहितकारी हैं ॥ टेर ॥ प्रथम दिगंबर भेष गुरूका वस्त्राभूषण त्याग दिया। शांतस्वरूपी अथिर जग, जान मान वैराग लिया ॥ वनमैं वसैं कसैं तन मनकूं, निजनिधिमय सद्ध्या न किया। परिगह त्यागी अनुपम, ज्ञानसुधा हित जान पिया। वदन चंद्रछवि अनुपम जिनने, वीतरागता धारी हैं ॥ भ्रमतम० ॥ १ ॥ असन हेत नहिं जात बुलाये, ना कछु संग सवारी है। भेट न चाहैं असन कछु, मिलै मधुर वा खारी है ॥ रागरोस नहिं करै कदाचित, जिनआज्ञा चित धारी हैं। भोजन करकैं गुरु

कर, जांय गमन तिहँबारी हैं ॥ यंत्र मंत्र नहिं करैं कुकिरिया, निरतिचार ब्रमचारी हैं ॥ भ्रमतम० ॥ २ ॥ त्रण कंचन अरि मित्र बराबर, जीवन मरन समान गिनै। सहैं परीषह बीस दो, समताको परधान गिनै ॥ काम क्रोध मद मोह लोभके, परिकर सब दुखदान जिनै। विषय-बासना महा अप,-वित्र पापकी खान गिनै ॥ लोकरीति परिहरी जिन्होंनै, वृत्ति अलौकिक धारी हैं ॥ भ्रमतम० ॥ ३ ॥ तारन तरन जैनके गुरुको, यह स्वरूप बाहिर जारी। उर अंतरमैं शुद्ध रत-नत्रयनिधिके सहचारी ॥ ये ही सरन सहाय जगतमैं, शिवमगमैं ये सहचारी। अचरजकारी जिन्होंकी, परनति है जगतैं न्यारी ॥ गुरुपदकमल 'जिनेश्वर'-उरमैं वास करो अनिवारी है ॥ भ्रमतम० ॥ ४ ॥

३५। लावनी रंगत-लँगड़ी।

या कलिकाल महानिशिमैं जिन,-वचन चंद्रिका जारी हैं। परिगह त्यागी गुरुकी, सेवा

शिवहितकारी है ॥ टेर ॥ कुंदकुंद आदिक श्रीगुरु, उपकार कर गये सब जगका । शास्त्र बनाकैं सर्व, बरताव दिखागये शिवमगका ॥ सत जिनधर्म लहै सो ज्ञाता, सरन गहै जो इस मगका । ज्ञानचक्षुतैं लखैं सब, सत्य झूठ हर मजहबका ॥ ज्ञानविरागविषै सुनि भाई, शिवलक्ष्मी–सहकारी हैं ॥ परिगहत्यागी ॥ १ ॥ विद्याके अभ्यास विना नहिं ज्ञानवृद्धिकों पाता है । विना ज्ञानके नही, परमागम मर्म लखाता है ॥ परमागम विन धर्म न जानै, धर्मविना दुख पाता है । इस कारनतैं एक यह, विद्या शिवसुखदाता है ॥ हाय हाय विद्याके दुस्मन, आज धर्म-अधिकारी हैं ॥ परिगहत्यागी० ॥ २ ॥ विषय-वासनामैं फँसि जिनने, धर्म कर्मकों लोप दिया । लोभ उदयसे जिन्होंने, सतमारगको गोप किया ॥ धर्मकल्पतरु-काटि आपनें पापवृक्षकों रोप दिया । धिकधिक इनकों सत्य, कहनेवालोंपर कोप किया । कहा कहों वे विष-

यत्चाहवस बन गये आप भिखारी हैं ॥ परि: गहत्यागी० ॥ ३ ॥ तजकर ज्ञानविराग आप बन, गये विषयवस अज्ञानी। खानपानमैं ऐस, इस्तरमैं सबके अगवानी ॥ धर्ममूल अरंहत देव निरग्रंथ गुरु हैं जिनवानी। इनके सँगमैं महाशठ, भैरवकी पूजा ठानी ॥ अर्ज जिनेश्वर देव सुनो, यह मोहकर्म अनिवारी है ॥ परिगह-त्यागी० ॥ ४ ॥

३६। लावनी रंगत लंगडी।

(कुगुरु स्वरूप)

सम्यग्ज्ञान विना जगमैं, पहिचाननवाला कोई नहीं। जैनधर्मको यथावत, जाननवाला कोई नहीं ॥ टेक॥ पहिले ज्ञान आपको चहिये, विना ज्ञान क्या समझैंगे। सत्य झूठका कहो वे, निरणय कैसैं कर लेंगे ॥ विन निर्धार किये जिनमतकी, उर प्रतीत क्या धरलेंगे। विन प्रतीतके क्रिया-करि, भवदधि कैसैं तिरलेंगे ॥ दुर्लभ जान ज्ञान होना यह, मानववाला कोई नहीं। जैनधर्मको०

॥ १ ॥ गुरुका काम ज्ञान देना वा धर्मदेशना करना है। आप धर्ममें लीन हो, कर्म अरीको हरना है ॥ हा कलिकाल प्रभाव आज गुरु, जगहँ जगहँ लड़ मरना है। अधर्म करकें पापका, भार आप सिर धरना है ॥ विन विद्या बल इन वातोंका छाननवाला कोई नहीं ॥ जैनधर्मको० ॥ २ ॥ ज्ञानदानके बदलेमें श्रुत, पाठन पठन निवार दिया। पढें जो कोई उसे पुस्तक देना इनकार किया ॥ जहां जिनागमकी चर्चा तहँ, विन कारण तकरार किया। भोले भाले जहां देखे तहां, रहनेका इखत्यार किया ॥ शिवमगमें ऐसे ठगकों गुरु माननवाला कोई नहीं ॥ जैनधर्मको० ॥३॥ धर्मदेशनाके बदले, लौकीक कथा कों करते हैं। बडे ढोंगसें आप निज, विषय विथाको हरते हैं ॥ सरस मनोहर असन वसन सय,—नासन नहीं विसरते हैं। बडे सूर हैं जगतसों, जरा नहीं वे डरते हैं ॥ वचन जिनेश्वर सत्य तदपि, पहिचाननवाला कोई नहीं ॥ जैनधर्मको० ॥ ४ ॥

कुगुरु निषेध ।

३७ लावनी, रंगत—लंगड़ी ।

कामक्रोधवशि होय कुधी जिनमतकै दाग लगाते हैं। धिक् धिक् इनको धर्म विन, जिनधर्मी कहलाते हैं॥ टेर॥ जिनवरवचन उथापि आपने वागजाल विस्तार दिया। खूब विचारी आपका, संघसहित निस्तार किया॥ ब्रह्मचर्य व्रत धारि बहुरि शृंगार गलैका हार किया। खानपानमैं पुष्टरस, भोजनको इकत्यार किया। इत्र फुलेल सुगंध लगाकर, कामदाह उपजाते हैं॥ धिक् धिक्॥ १॥ सुनो महाशय अर्ज हमारी, जरा गौर करकैं देखो। मृग तृणभक्षी जिन्होंके सुखसमाजको नहिं लेखो॥ शीत उष्ण दुख सहैं निरंतर, अरु संकित मनमैं पेखो। वे भी वनमैं मृगी लखि, कामक्रियामैं रत देखो॥ कहो आप फिर किस कारनसैं निरविकार रह जाते हैं॥ धिक् धिक्॥ २॥ भोजन आप करावै बहुविधि, शुद्ध कहावै सेवकसों। यह चा-

लाकी धन्य यह, पाप भयो सब सेवकसों ॥ पहिले असनपाप देकरकें, पीछैं धन ले सेवकसों । तुष्ट होकर वारता करै, रागजुत सेवकसों ॥ तुष्ट सुफल ये रुष्ट भये, क्या जानै क्या दे जाते हैं ॥ धिक्‌धिक् ॥३॥ चौमासाके प्रथम दिवस धरि, भेष दिगंवर पद्मासन् । जिनप्रतिमाके सामनै, करै प्रतिज्ञा वसनासन् ॥ सेवकगनसों यों कहलावें, वक्त नहीं सुन गुरुभाषन् । परिग्रह धारो तजो यह, योगप्रतिज्ञाको आसन् ॥ इम सुन वचन ततच्छन उठकर, फिर भेषी बन जाते हैं ॥ धिक् धिक् ॥ ४ ॥ खूब अनुग्रह किया आपने, सेवक गन सब तार दिया । जरा देरमें अधोगति, वंधनका हक़दार किया ॥ समझो सेवकगन हिरदैमैं, क्या अनुपम उपहार दिया । ज्ञान-चक्षु-कों खोलकर, देखो क्या उपकार किया ॥ मोह-नींदके जोर अज्ञजन, योंही काल गमाते हैं ॥ धिक् धिक् ॥ ५ ॥ आंख खोलकर देखो आगम भगवतनें क्या किया बयान् । देवधर्मगुरु इन्हींका,

सत्स्वरूप लीज्यो पहचान् । इनकों जान यथावत निजपर,--तत्त्वनको कीज्यो सरधान् । यह जिनमतको मूल है, याको पहिले निश्चय जान् ।। या विन भेष निरर्थक सब ही भववनमें भटकाते हैं ।। धिक् धिक् ।। ६ ।।

३८ । लावणि रंगत लंगडी ।

देखो कालप्रभाव आज पाखंड जगतमें छाया है । जैनधर्मको नीच लोगोंने दाग लगाया है ।। टेर ।। ज़गजाहर अरहंतदेव, निरग्रंथ गुरू हैं जिनमतके । दयाधर्म है जिनागम, सत्य वचन हैं जिनमतके ।। इनहींको जानै मानै श्रद्धान, करैं जन जिनमतके । सिवा इन्होंके औरकों, कभी न मानैं जिनमतके । इनकों तज अज्ञानोंने, मनकल्पित ठाट बनाया है ।। जैनधर्मको० ।।१।। कोई बनै कलयुगी अचारज, आरज धर्म विसार दिया । महंत होकैं अधर्मके, कामोंको इख्त्यार किया ।। पहिले नाम दिगंबर होके फिर वस्त्रादिक धार लिया । परिग्रह तजिकैं बनिज,

व्योपार व्याजका कार किया ॥ देखो हीन आचरन करिकैं, भगलनकों सरमाया है। जैनधर्मकों० ॥२॥ केई भोले जीव जिन्होंने, जिनशासनको नहिं जाना। जो कुछ जैसी किसीने, कही उसीको सच माना ॥ खानपान लड़नेमैं चातुर, पढनेमैं मन अलसाना। क्रोधी मानी लोभवश, लिया कृपणताका बाना ॥ हाय हाय ऐसे जीवोंने, नरभव वृथा गुमाया है ॥ जैनधर्मकों० ॥ ३ ॥ कोई उद्यमहीन दीन नर, पेट काज हैं भ्रमचारी। खान पानकों मिला तब, धर्यो भेष स्वेच्छाचारी। पूछेपर वे जबाव दें हम, इतनेही दिन व्रतधारी। धिक धिक उनको धर्मपद, छोड़ भये जे गृहचारी। सुनिये देव जिनेश्वर अरजी, यह कलयुगकी छाया है ॥ जैनधर्मको० ॥ ४ ॥

३९। लावनी, गृहस्थाचार्यकी, रंगत—लंगडी।

उत्तम नर जिनमतकों धारैं, सो श्रावक कहलाते हैं। कोई उन्हींमैं गृहस्थाचारजका पद पाते हैं ॥ टेर ॥ गर्भादिक संस्कार क्रिया जे

सभी करानेका अधिकार । जिनगृह प्रतिमा-प्रतिष्ठा, तथा धर्मके काम अपार ॥ व्रतविधान-की सभी प्रक्रिया, अथवा प्रायश्चितका परचार । गृहधर्मीका करावैं, इसभव परभव-हित-व्यवहार ॥ धर्मक्रियाकों करते करते, जो उत्तम कहलाते हैं। कोई उन्हींमैं ॥ १ ॥ क्रियाविशेष गृहस्थाचारज, करते जिनका सुनो बयान । जाके सुनते समझलैं, सर्वकालको चतुर सुजान ॥ दीक्षान्वय अवतारक्रियामैं, ग्रहन करै जिनमत सुखदान । चौथा दरजा त्याग कर, कुदेव पूजन निंद्यमहान । श्रीअरहंतदेवके पूजक, सदगृहस्थ कहलाते हैं ॥ कोई उन्हींमैं० ॥ २ ॥ व्रतका चिन्ह जनेऊ धारैं, नवमी क्रियाविषै व्रतवान् ॥ फिर क्रम क्रमसे पंद्रमीं, क्रिया लहै उपनीत महान् ॥ प्रायश्चित्त शास्त्रके ज्ञाता, जानत नय-निक्षेप प्रमान् । सो बडभागी गृहस्थाचारज जानो सम्यक्त्ववान् ॥ सभी गृहस्थी उनकों मानें जो श्रावक कहलाते हैं ॥ कोई उन्हींमैं० ॥ ३ ॥

श्रीमत्त आदिपुराण शास्त्रमें, उनतालिसमा है अधिकार। दीक्षान्वयकी क्रिया, उपनीतविधै देखो निरधार॥ गुण लच्छन पहिचान सुधीजन, यथायोग्य करते व्यवहार। विना परखके धर्मधन, खोवैं मूरख जीव अपार॥ यही जिनेश्वरकी आज्ञा है, जोश्रावक उर लाते हैं। कोई उन्हींमें० ॥ ४ ॥

(४०)

वृद्धोंकेलिये आचार्यवर्य शांतिसागरका दर्शन।

गीताछंद।

तुम शांतिसागर शांतिदायक, शांति द्यो इस दासको। तत्काल सबको शांतिप्रद हो, गहैं तुमरी पास जो॥ मो भाग आजहि उदय आयो, लही तुमरी शरन जी। यह दास नित ही शांति चाहत, सुनहु तारन तरनजी॥१॥ मैं अंतविन चिरकालतैं ही, नितनिगोद फँस्यो रह्यो। तामैं जु दुख चिरकाल भुगत्यो,वचनतैं जात न कह्यो॥ तहँतैं निकसि फिर भयो थावर, अवर पशु पक्षी

भयो। तहँ पाय अतिशय दुख अनंते, नरक सातनिमैं गयो ॥ २ ॥ नरकनतणे अति घोर दुख सह नरजनम गह, दुख सह्यो। फिर सुर असुर गति पायकर, कोउ पुण्यवश नरतन लह्यो ॥ सो बालपनमैं खेल खोयो, युवावस्था पुनि गही। सांसारि-विषय-कषाय-वश, सुख लह्यो रंच न दुख यही ॥ अब अधमरे सम वृद्ध-पनमैं, शक्ति कुछ भी ना रही। अतएव शांति प्रदाय लखि तुम,-चरनकी शरना गही ॥ अब शांतिसागर सुगुण-आकर, दया करहू दीनपर। तुम चरनपंकज सिरनवाकर, बंदहू मन लायकर ॥ ४ ॥

५

बधाई संग्रह।

१। बधाई—श्रीआदिनाथभगवानकी।

चलि सखि देखन नाभिरायघर, नाचत हरि नटवा ॥ चल०॥टेर॥ अदभुत ताल मान स्वर-लयजुत, चवंत राग पटवा ॥चलसखि० ॥ १ ॥ मनिमय नूपुरादि भूषण दुति, युतसुरंग पटवा हरिकर नखन नखनपै सुरतिय, पग फेरत कटवा ॥ चलि सखि ॥२॥ किंनर करधर बीन बजावत, लावत लय झटवा। दौलत ताहि लखे चखं तृपते, सूझत शिवबटवा ॥ चलि सखि० ॥ ३॥

२। बधाई—शांतिनाथ भगवानकी।

वारी हो बधाई या शुभ साजै, विश्वसेन ऐरां देवीगृह, जिनभवमंगल छाजै ॥ वारी हो०

१। इंद्ररूपी नट। २ गाते हैं। ३ छह राग। ४ कपड़े। ५ इंद्रके हाथोंके नखोंपर। ६. कमर। ७. शीघ्रही। ८ नेत्र। ९ मोक्षमार्ग। १० शांतिनाथ भगवानकी माता। ११ भगवानके जन्मका उत्सव।

॥ टेक ॥ सब अमरेश अशेष[1]विभवजुत, नगर-नागपुर[2] आये। नाग[3]दत्त सुर इंद्र वचनतैं, ऐरावत सज धाये॥ लखयोजन शत वदन वदन वसु[4]-रद प्रतिसर ठहराये। सर सर सौपन वीस नलिनि प्रति, पदम पचीस विराजै॥ वारी हो०॥ १॥
पदम पदम प्रति अष्टोत्तर शत, ठने सुदल मन हारी। ते सब कोटि सताईसपै मुद,-जुत नाचत सुरनारी॥ नवरस गान ठान काननको, उपजावत सुख भारी। बंक[5] लय लावत लंक[6] लचावत, दुति लखि दामिनि लाजै॥ वारी हो०॥ २॥
गोप[7] गोपतिय[8] जाय माय ढिग, करी तास थुति सारी। सुखनिद्रा जननीको कर नमि, अंक[9] लियो जगतारी[10]॥ लै वसु मंगल द्रव्य दिशसुरी[11], चलीं अग्र शुभकारी। हरखि हरी चख-सहस करी तब, जिनवर निरखन काजै॥ वारी हो०॥३॥

१ समस्त विभव सहित। २ हस्थनापुर। ३ कुवेर। ४ आठ आठ दांत। ५ बांकी। ६ कमर। ७ गुप्तभावसे। ८ इन्द्राणी जाकर। ९ गोदीमें लिया। १० भगवानको। ११ दिक्कुमारिका देवियां।

ता गजेंद्रपै प्रथम इंद्रने श्रीजिनेंद्र पधराये। द्वितियं[1] छत्र धरि तृतियं[2] तुरियं[3] हरि, मुद धरि चमर ढुराये॥ शेषं[4] शक्र जय शब्द करत नभ, लंघि सुराचल[5] छाये। पांडुशिला जिनथापि नची[6] सचि, दुंदुभि कोटिक बाजे॥ वारी हो०॥ ४॥ पुनि सुरेशने श्रीजिनेशको, जन्मन्हवन शुभ ठान्यो। हेमकुंभ[7] सुर हाथहि हाथन, क्षीरोदधि जल आन्यो॥ वदँन उदर अवगाह एक चौं, वसु योजन परमान्यो। सहसआठ[8] कर करि हरि जिनशिर, ढारत जय धुनि गाजै॥ वारी हो०॥५॥ फिर हरिनारि[9] सिंगार स्वामितन, जजे सुरा जस गाये। पूरवली[10] विधि करि पयान मुद ठान पिताघर[11] लाये॥ मनिमय आंगनमें

१ ऐसान इन्द्र। २ सनत्कुमार। ३ माहेंद्र इन्द्र। ४ बाकीके सब इंद्र। ५ सुमेरुपर्वतपर। ६ इन्द्राणी। ७ सोनेके कलसोंका मुख चार कोशका चौडा, पेट सोलह कोशका चौडा, और ऊंडा बत्तीस कोश था। ८ ऐसे एक हजार आठ कलशोंकेलिये इंद्रने एक हजार आठ हाथ बनाकर। ९ इन्द्राणीने १० पहिलेकी तरह हर्षके साथ ऐरावत हाती पर बिठाकर। ११ पिताके घर लाये।

कनकासन,—पै श्रीजिन पधराये । तांडवनृत्य[1] कियो सुरनायक, शोभा सकल समाजै ॥ वारी हो० ॥ ६ ॥ फिर हरि जगगुरु-पितरितोष[2] शांतेश[3] घोप[4] जिननाम । पुत्र जन्म उत्साह नगरमैं, कियो भूप अभिरामा[5] ॥ साथ सकल निजनिज नियोग सुर, असुर गये निज धामा[6] । त्रिपद[7] धारि जिन चारु[8] चरनकी, दौलत करत सदा जै ॥ वारी हो० ॥ ७ ॥

३ । वधाई—पार्श्वनाथ भगवानकी ।

बामाघर बजत बधाई, चलि देखरी माई ॥टेक॥ सुगुनरास जग-आस-भरन तिन, जने पार्श्व-जिनराई । श्री ही धृति कीरति बुधि लछमी, हर्षित अंग न माई ॥ चलि देखरी० ॥१॥ वरन वरन मनि चूर सची सब, पूरत चौक सुहाई ।

१ पुरुषका नृत्य, स्वयं इंद्रने किया । २ जगतके गुरु भगवानके पिताको प्रसन्न करके ३ शांतिनाथ नामकी । ४ घोपणा करके । ५ मनोहर उत्कृष्ट । ६ अपने अपने स्थान । ७ तीर्थंकरपद, चक्रवर्त्तिपद और कामदेवपदके धारक । ८ भगवानके उत्तम मनोहर चरनोंकी ।

हा हा हू हू नारद तुंबर, गावत श्रुति सुखदाई ॥ चलि देखरी० ॥२ ॥ तांडव नृत्य नटत हरिनट तिन, नख नख सुरीं नचाई। किन्नर करधर बीन बजावत, दृगमनहर छवि छाई ॥ चल देखरी ॥ ३ ॥ दौल तासु प्रभुकी महिमा सुर,—गुरुपै कहिय न जाई । जाके जन्मसमय नरकनमैं, नारिकि साता पाई ॥ चलि देखरी माई० ॥४॥

४ । बधाई—आदिनाथ भगवानकी राग—पंचम ।

आज गिरिराजके शिखर सुंदर सखी, होत है अतुल कौतुक महा मनहरन ॥ टेक ॥ नाभिके नंदको जगतके चंदको, लेगये इंद्र मिलि जन्ममंगल करन ॥ आज० ॥ १ ॥ हाथ हाथन घरे सुरन कंचन घरे, छीरसागर भरे नीर निरमल बरन । सहस अरु आठ गिन, एकही बार जिन, सीस सुर ईशके करन लागे ढरन ॥ आज० ॥ २ ॥ नचत सुरसुंदरी रहस रससों भरी, गीत गावैं अरी देहि ताली करन । देव

१ घड़े—कलश । २ अड़ी हुई—पास पास खड़ी हुई ।

दुंदुभि बजैं वीन वंशी सजैं, एकसी परत आनं-
दघनकी भरन ॥ आज० ॥३॥ इंद्र हर्षित हिये
नेत्र अंजुलि किए,तृपति होत न पिये रूप अमृत
झरन । दास भूधर भनै सुदिन देखे बनै. कहि
थके लोक लख जीभन सकै बरन ॥ आज०॥४॥

५। बधाई—आदिनाथजीकी । राग—पांज ॥

माई आज आनँद है या नगरी ॥ माई ०॥
टेक ॥ गजगमनी शशिवदनी तरुनी, मंगल
गावति हैं सगरी ॥ माई आज० ॥ १ ॥ नाभि
रायघर पुत्र भयो है, किये हैं अजाचक जाच-
करी ॥ माई आज० ॥ २ ॥ द्यानत धन्य कूख
मरुदेवी,सुरसेवत जाके पगरी ॥माई आज०॥३॥

६। राग-परज

माई आज आनँद कछु कहे न बनै ॥ टेक ॥
नाभिराय मरुदेवी-नंदन, ब्याह उछाय त्रिलोक
भनै ॥ माई आज० ॥ १ ॥ सीस मुकुट गल
माल अनूपम, भूषन बसनन को बरनै ॥ माई
आज० ॥ २ ॥ गृह सुखकार रतनमय कीनो

चौरी मंडप सुरगननैं ॥ माई आज० ॥ ३ ॥ द्यानत धन्य सुनंदा कन्या, जाकों आदीश्वर परनैं ॥ माईआज० ॥ ४ ॥

७। बधाई—आदिनाथकी राग—आसावरी।

आज आनंद बधावा ॥आज०॥टेर॥ जनम्यो आदीसुर नाभीके भौन। कीन्हो सब इंद्र मिलि मेरुपै न्होन ॥ आज० ॥ १ ॥ ऐरावत शक्र[1] चढ्यो, गोदमैं किशोर। नाचत हैं अपछरा, सु सत्ताईस कोर[2] ॥ आज० ॥ २ ॥ अजोध्या नगर सब, घेर्‌यो देवि देव। नरनारी अचरज यह, देखैं सब एव ॥ आज० ॥ ३ ॥ द्यानत मरुदेवी पद, सची सीस नाय। धन धन जगमाता, हमैं सुख दाय ॥ आज० ॥ ४ ॥

८। राग—ललित एकतालो।

बधाई राजै हो आज राजै, बधाई राजै, नाभि रायके द्वार बधाई ॥टेक॥ इंद्र सचीसुर सब मिलि आए, सज लाये गजराजै ॥बधाई॥ १॥ जन्मसद-

---

१ इंद्र। २ करोड़।

नतैं सची ऋषभ ले, सौंपदिये सुरराजै। गजपै धार गये सुरगिरिपै, न्हौन करनके काजै ॥बधाई०॥ सहस आठ शिर कलस जु ढारे, पुनि सिंगार समाजै। लाय धरयो मरुदेवी करमैं, हरि नाच्यो सुख साजै ॥बधाई०।३। लच्छन व्यंजन सहित सुभग तन, कंचन दुति रवि लाजै। या छवि बुधजनके उर निशिदिन, तीनज्ञानजुत राजै। बधाई०॥४॥

९। राग–सारंग।

बधाई भई हो, तुम निरखत जिनराय ॥बधाई टेक ॥ पातक गये भये सब मंगल, भेटत चरन कमल जिनराई ॥बधाई०॥१॥ मिटे मिथ्यात भरमके बादर, प्रगटत आतम रबि अरुनाई। दुरबुधि चोर भजे जिय जागे, करन लगे जिनधर्म कमाई ॥बधाई०॥२॥ दृगसरोज फूले दरसनतैं, तुम करुना कीनी सुखदाई। भाखि अनुव्रत महाव्रतको, बुधजनको शिवराह बताई ॥बधाई०।३।

(१०)

बधाई चंदपुरीमैं आज ॥ बधाई० ॥ टेक ॥

महासेनसुत चंद्रकुँवर जू, राज लह्यो सुख साज ॥ वधाई०॥१॥ सनमुख नृत्यकारिनी नाचै,होत मृदंग अवाज। भेट करत नृप देश देशके, पूरत सबके काज ॥ वधाई० ॥२॥ सिंहासनपै सोहत ऐसो,ज्यों शशि-नखत-समाज। नीतिनिपुन परजाको पालक, बुधजनको सिरताज॥ वधाई०॥

११ । राग सोरठा ।

आज तो वधाई हो नाभिद्वार ॥आज०॥टेक॥ मरुदेवी माताके उरमैं, जनमे रिषभ कुमार ॥ आज० ॥ १ ॥ सची इंद्र सुर सबमिलि आये, नाचत हैं सुखकार। हरषि हरषि पुरके नरनारी, गावत मँगलाचार ॥ आज तो० ॥ २ ॥ ऐसो बालक भयो जु ताकै, गुनको नाहीं पार। तनमन वचतैं वंदत बुधजन, है भवतारनहार ॥आज०॥

(१२)

भई आज वधाई निरखत श्रीजिनराई ॥ भई०॥ टेक ॥ गया अमंगल पाया मंगल, जन्म सुफल भया भाई ॥ भई० ॥१॥ तीनलोक की सारी संपति, अर सारी ठकुराई। इनकी कृपा

कटाछ होत ही, मेरी मुझमैं पाई ॥ भईआज० ॥२॥ इन विन राचे भोग विसनमैं, तातैं विपदा लाई । अब भ्रम नास्या ज्ञान प्रकास्या, पिछली बुधि विसराई ॥ भई आज० ॥ ३ ॥ सब हित-कारी पर उपगारी, गनधर वानि बताई । बुध जन अनुभव करके देखी, सांची सरधा आई ॥ ॥ भई आज० ॥ ४ ॥

(१३)

भये आज अनंदा, जनमे चंदजिनंदा ॥भये०॥ ॥टेक॥ चतुरनिकाय देवमिलि आये, इंद्र भया है बंदा ॥ भए० ॥ महासेन घर मात लछमना, उपजाया सुखकंदा । जाके तनमैं बढी जोति अति, मलिन लगै है चंदा ॥ भये० ॥ २ ॥ अब भविजन मिलि सुख पावैंगे, कटि हैं कर्मके फंदा। याहीके उपदेश जगतमैं, होगा ज्ञान अमंदा ॥ भये० ॥ ३ ॥ धन्य घरी धनि भाग हमारा, दूर भया दुखदंदा । बुधजन बारबार इम भाखै, चिरजीवी यह नंदा ॥ भये० ॥ ४ ॥